CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क 5/13

सुदामा चरित

[तक़रीबे ग़रीब]

आ॰ ाय-ग्रन्थालय,
वाराणसी, वाराणसी-५

ग्रन्थालय
सी, वाराणसी-५
5/13

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुदामा चरित

[तक़रीबे ग़रीब]

रचयिता

मुंशी गुरुसहाय 'मुल्तजी'—काकोरवी

सम्पादक

डा० व्रजलाल वर्मा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पंडित विधु जी

डा. प्रेमलता शर्मा

प्रोफेसर संगीत

काशी हि. वि. वि.

को

सस्नेह

[illegible]

३. ५. [illegible]

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुदामा चरित

[तक़रीबे ग़रीब]

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

•
•
•

रचयिता

मुंशी गुरुसहाय 'मुलतज़ी'—काकोरवी

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

सम्पादक

डा० ब्रजलाल वर्मा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रकाशक : अनीश प्रकाशन

१४/७६ डी०, सिविल लाइन्स, कानपुर

एवं

१०, कस्तूर बा गांधी मार्ग, इलाहाबाद

संस्करण : प्रथम संस्करण, शरत् पूर्णिमा २०३५, १० सितम्बर, १९७८

मूल्य : ६·५० (छः रुपया पचचास पैसा)

मुद्रक : आर० एन० भार्गव, स्टैन्डर्ड प्रेस, २ बाई का बाग, इलाहाबाद

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

समर्पण

कृष्ण कृपा का कल कवित्वमय कीर्ति कथानक
प्राणों का पाथेय पुण्य प्रिय जन का पानक
पूत 'सुदामा चरित' 'मुल्तजी जी' की बानी
उर्दू में प्रतिबिम्बित हिन्दी गति ईरानी
ब्रह्मास्वाद पुनीत रसमयी गिरा विलक्षण
पल-पल पुलकित चित्त हृदय आह्लादित क्षण-क्षण
अति प्रसन्न कविकृत्य 'सुदामा चरित' ललितवर
सख्य भक्ति रस सार शाप संताप दुरितहर
मेरे अंतर में निवसित प्राणों में विलसित
राधा बाबा ब्रह्मरूप अनवरत उल्लसित
वेद विज्ञ अध्यात्मनिष्ठ तुम शास्त्र विचक्षण
तपश्चरणरत अनासक्त राधा-रस वर्षण
गुरुसहाय 'मुल्तजी' महाकवि द्वारा विरचित
'महाभाव' रस पुष्ट ओज माधुर्य अपरिमित
यह 'ब्रजलाल' तुम्हारी करुणा का आराधक
दिव्य 'सुदामा चरित' काव्य कृति का सम्पादक
अनुनय करता'हे राधाबाबा अघमर्षण
इस पूजा कृति का करिये स्वीकार समर्पण'

पुण्यधर्मा श्री राधा बाबा को

सप्रणति
ब्रजलाल

शरत् पूर्णिमा, २०३५
१० सितम्बर, १९७८
गीता वाटिका, गोरखपुर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय-ग्रन्था...
भरतनिधि, कचौड़ी
वाराणसी-5

इंतिसाबे-अक़ीदत

दिल अक़ीदत से तो लबरेज़ है राधा बाबा
हिर्से-बद हैफ़ ! खललरेज है राधा बाबा
पुर खतर बादे-हवस तेज़ है राधा बाबा
रग़बते हक़ से दिल आमेज़ है राधा बाबा

तुम अलम में हो मसर्रत ग़मों में शीरीं ग़ज़ल
तुम शफ़क़ज़ारे-अबद हो तुम्हीं तनवीरे-अज़ल

तुम हो आज़ाद मेरे दिल में गिरफ़्तार भी हो
तुम हो माबूदे जहां और परस्तार भी हो
तुम हो खलक़त की रुकावट तुम्हीं रफ़्तार भी हो
तुम हो दुनिया की समाअत तुम्हीं गुफ़्तार भी हो

रिफ़्अते-चर्खेबरीं भी नशेबे अर्ज़ तुम्हीं
रूहे-इंसा की लताफ़त का नया तर्ज़ तुम्हीं

'मुल्तजी' जो कि हैं मसनदनशीने-बज़्मे-सुखन
उनकी तखलीक़ 'सुदामा चरित' है रश्के-चमन
ऐ फ़ेरासत के गगन ! इल्मो-अमल के मखज़न !
मरहबा ! आपको ये गन्जे-सुखन है अर्पन

नज़्रे-ब्रजलाल पे अल्ताफ़ हो राधा बाबा
तुम तो इक गुलशने-औसाफ़ हो राधा बाबा

शरत् पूनो २०३५, सितम्बर १९७८

पास्बाने दीनो मिल्लत
श्री राधा बाबा जी को
बसद एहतरामो अक़ीदत
ब्रजलाल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय–ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

यह रसमयी काव्य-कृति

इस जगत् के विराट् परिसर में किसी दृश्य, घटना अथवा क्रिया की प्रतिक्रिया जब किसी सहृदय की रसमयी गिरा में व्यक्त होती है तो हम उसी रमणीय व्यंजन को काव्य शास्त्र की भाषा में कविता कहते हैं। इसे और भी स्पष्ट कर दें—काव्य को शक्ति एवं प्रभाव के प्रमुख उत्स उसमें सन्निविष्ट ध्वनितत्व, व्यंजनावृत्ति तथा लाक्षणिक अभिव्यक्ति हैं और इन्हीं का सम्मिलित परिणाम काव्य के अस्तित्व को जीवन्त तथा स्थायी बनाये रखता है; यह स्थायित्व श्रोता अथवा पाठक के मानस तक ही सीमित हो—ऐसा नहीं है। किंचित् संस्कार वशात् और ईषत् स्वाध्याय प्रसूत रुचि के कारण मेरी धारणा प्रस्तुत संदर्भ में कतिपय ऐसे निष्कर्ष प्रस्तुत करने को उद्यत है जिनको सामान्य काव्यशास्त्रीय मत-मतान्तर, तर्क अथवा सिद्धान्त सहज स्वीकृति नहीं दे सकते और वह निष्कर्ष यह है कि पुष्ट रसवाही काव्य की अरूप प्रभावान्विति वायवी ऊर्मियों के आवेश रूप में आकाश के पर्यावरण में व्याप्त रहती है, लम्बे कालान्तरों के अनन्तर भी सभ्य जनों अथवा अधिकारी काव्य रसिकों के अमोघ आकर्ष उन व्योम-व्याप्त भाव तरंगों को उनकी हृद्‌भूमि पर उतार लाते हैं यह भी कि वे भाववीचियाँ परिपक्व मानवी संवेदनो में अवकाश पाकर अपने प्रभाव के चाप से कभी-कभी स्वयं भी उतर आती है; काव्य शास्त्रीय रूढ़ियां तथा बुद्धि रस की उपासना—दोनों को मेरी यह धारणा शायद स्वीकार्य न हो किन्तु उनकी संभाव्य विप्रतिपत्ति पर मेरा यह प्रश्न हो मेरे उत्तर की भूमिका बन सकता है कि क्या कारण है कि शताब्दियों के अन्तराल में विलुप्त सिद्ध काव्य कृतियां पुनः प्रकाश में आती हैं और उनका सम्पादन तथा प्रकाशन होता है वे जन जन के मानस में विभावित होती हैं—व्यक्ति-व्यक्ति की वाणी उनका स्वरण, पठन और निर्वचन करती है। हम देखते है कि प्रत्येक भाषा में अनेकानेक काव्य ग्रंथों का दीर्घ कालावधियों के पश्चात् पुनर्जन्म हुआ है।

काव्य की सिद्धि किसी भापा विशेष तक सीमित नहीं है। काव्य के स्तर पर भाषाओं के भेद समाप्त हो जाते है, शब्द-समृद्ध किसी भी भाषा में रसोत्पादक भावों की अभिव्यक्ति होती ही रहती है। शब्दावली किसी भी भाषा की हो यदि वह वस्तु, दृश्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथवा परिस्थिति का विभाव्य-बिम्ब उपस्थित करने में शक्य है तो वह भाषा काव्य की समर्थ संवाहिका बन जाती है। मुंशी गुरुसहाय 'मुल्तजी' द्वारा उर्दू में प्रणीत 'सुदामा-चरित' कृति जिसे मैंने हिन्दी के काव्य रसिकों की तृप्ति हेतु देवनागरी में लिप्यंतरित कर संपादन किया है—में मेरा उपर्युक्त कथन सहज ही प्रमाणित हो जाता है। लगभग ७५ वर्ष के पश्चात् यह विलक्षण काव्य कृति यथेष्ट रूप में हिन्दी पाठकों के सामने आ रही है। उर्दू ज्ञाता भी उससे भली भाँति परिचित नहीं हो सके—यद्यपि इस कृति का प्रकाशन बीच-बीच में फारसी एवं देवनागरी लिपि में होता रहा है मुंशी नवल किशोर, लखनऊ तथा स्व० मुंशी जी के वंशधरों में हिन्दी उर्दू के दुर्लभ ग्रन्थों का निरन्तर प्रकाशन किया है, इसके लिए वे हमारे साधुवाद के अधिकारी हैं किन्तु उनकी जो भी विवशता रही हो, प्रायः सभी कृतियां उनके यहां असंपादित ही छपती रही हैं।

अब से पन्द्रह वर्ष पूर्व सन् १९६३ में कानपुर के मेरे एक व्यापारी मित्र ने एक उत्सव गोष्ठी में 'मुल्तजी' के सुदामा चरित के कुछ अंश सस्वर सुनाये। अभिव्यक्ति और भावोत्कर्ष के विलक्षण निदर्शनों से मैं गहराई तक अभिभूत हो गया, मैंने प्रश्न किया, 'यह आप कहां से पढ़ रहे हैं? किसने लिखा है?'—उनका उत्तर था, 'उर्दू में एक सुदामा चरित है, उसी से सुना रहा हूं'। मैंने बड़ी दौड़ धूप के बाद पुस्तक की एक पुरानी दूकान से बड़ी कठिनाई से फारसी लिपि में छपी हुई सुदामा-चरित की एक प्रति प्राप्त कर ली। उसके ऊपर लिखा था, "बऔने सन्नाये मकीनो मकां ब फ़ज़्ले खल्लाके ज़मीनों ज़मां" "हज़ार हा हज़ार शुक्रोएहसान कि ये अदीमुल्मिसाल दाफ़ए हुज़्नोमलाल पोथी यानी 'सुदामा-चरित' मुसन्निफा 'मुल्तजी'। नीचे लिखा था 'मुसन्निफए अफसहुलफसहा, रश्के अनवरी, मुंशी गुरुसहाय साहब मुल्तजी काकोरवी वैकुंठ बासी" उर्दू, फारसी, संस्कृत, हिन्दी चारों भाषाओं के शब्द, शैली और शिल्प को देखकर मेरे हर्ष की सीमा न रही। चूंकि मेरी इन चारों भाषाओं से अदबी रग़बत है—पांचवी भाषा अंग्रेजी से भी किन्तु उसकी यहां आवश्यकता नहीं थी—इस सुदामा चरित के शब्द, शब्द से निःसृत भाव संगीत का माधुर्य मुझे चकित और विस्मित किये था। अवसर पाकर बीच-बीच में मैं इस कृति का ज़ौकिया मुतालआ करता रहा—मात्र आनन्द के लिए। उस समय तक मेरा कोई और प्रयोजन नहीं था। उस पुण्य भूमि प्रयाग में लोक सेवा आयोग उत्तर प्रदेश के सदस्य के रूप में आने पर ही 'मुल्तजी' के 'सुदामा चरित' के सम्पादन का संकल्प साकार हुआ। इस संकल्प एवं प्रेरणा के मूल में पुण्य श्लोक महात्मा पूज्य-पाद श्री राधा बाबा गीता वाटिका गोरखपुर की दिव्य कृपा तथा भागवत वर्चस्व विद्यमान है। उधर 'मुल्तजी' भी भौतिक आकर्षणों को तिलांजलि देकर जीवन के अन्तिम चरण में वृन्दावन जाकर एक संत के रूप में रहने लगे थे। नियति का संयोग देखिये कि एक महात्मा के द्वारा प्रेरित होकर एक महात्मा की काव्य कृति का मैंने सम्पादन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

किया। अतः मेरे सर्वस्व ईशकल्प श्री राधा बाबा को ही यह कृति श्रद्धापूर्वक समर्पित है। बाबा जी के चरण सानिध्य में रहने वाले तपस्वी जज साहब श्री राम प्रसाद जी दीक्षित के कृपा पूर्ण स्पन्दन मुझे सदैव उत्साहित करते रहे हैं। लोक सेवा आयोग में मेरे निजी सचिव श्री यार मुहम्मद तथा विद्वान् श्री अज़हर अली फारुक़ी तथा एक सुयोग्य होनहार युवक श्री मुहम्द इदरीस अम्बर का प्रत्यक्ष सहयोग इस कार्य में अतीव उपयोगी एवं मूल्यवान् सिद्ध हुआ। कई स्थलों पर इन महानुभावों के बिना मुझे कठिनाई होती। यह तीनों मेरे दरूनी प्यार व मुहब्बत के मुस्तहक़ हैं।

बस, इस समूचे प्रसंग में यदि कोई बात मेरी उद्विग्नता और पीड़ा का कारण बनी तो यह कि सुदामा चरित जैसी रस सिद्ध काव्य कृति के महाकवि मुल्तजो का जीवन वृत्त व्यवस्थित रूप में अप्राप्त है। यद्यपि मैंने कतिपय अन्त: साक्ष्यों एवं वहि:साक्ष्यों के आधार पर कवि के सम्बन्ध जो सूचनाएं प्रस्तुत की हैं वे बहुत दूर तक प्रामाणिक हैं। सुदामा चरित पुस्तक में कवि मुल्तजी के नाम के साथ 'काकोरवो' लिखा देखकर मैं जून सन् १६ ८ के प्रारम्भ में एक दिन लखनऊ जिले के काकोरी ग्राम पहुँचा। वहां जाकर मैंने यह तो पाया कि काकोरी विश्रुत उर्दू शायरों की जन्मदात्री स्थली है 'मुल्तजी' की जीवनो जानने के लिए मैंने कई हिन्दू-मुसलमान वयोवृद्ध साहित्य प्रेमियों एवं अनुभवी सज्जनों से भेंट की किन्तु वहां कोई भी ऐसा नहीं मिला जो मुल्तजी से या उनके काव्य से परिचित होता। पूरे दिन काकोरी की गलियों, गलियारों वीथियों और मार्गों पर घूमा सबसे मिला—उपलब्धि शून्य रही। कारण आगे चलकर बताऊँगा। मैं पुनः लखनऊ वापस आकर नवलकिशोर प्रेस गया। वहां से इस बात का संकेत पाकर कि लखनऊ के नौबस्ता मुहल्ले में 'मुल्तजी' के संबन्ध में कुछ जानकारी प्राप्त हो सकती है—वहां भी गया। केवल एक पुस्तक तज़किरए शोराए हुनूद' अर्थात् उर्दू के हिन्दू कवियों का परिचय जो लगभग ४१० पृष्ठों में दिया हुआ है मिली। तथा उसमें ५६० कवियों का परिचय प्रस्तुत किया गया है। पुस्तक के ३३८ वें पृष्ठ पर श्री मुल्तजी के सम्बन्ध में निम्नांकित संक्षिप्त टिप्पणी दी गयी है :

मुंशी गुरुसहाय क़ौम कायस्थ श्रीवास्तव बाशिन्दा काकोरी ज़िला लखनऊ मुसन्निफे 'तक़रीवे- ग़रीब(सुदामा चरित)। ये किताब वो गुलिस्ताने तसव्वुफ है जिसकी हर रविश में उर्दू, फारसी, हिन्दी, संस्कृत के नायाब और ख़ुशनुमा फूल पाये जाते हैं। इस वक्त तक इससे बढ़ कर और कोई सुदामा चरित नहीं है। मुसन्निफ़ की खुशबयानी व सेहर तराज़ी क़ाबिले तहसीन है। वे कलेक्ट्री ज़िला उन्नाव में नाज़िर थे। पेन्शन से फ़ैज़याब होकर वृन्दावन में उज़लतनशीनी अख्तियार की और वहीं रेहलत फ़रमायी जिसका जमाना २०-२५ साल का हुआ।"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अब हमें देखना है कि श्री मुल्तजी का जीवनकाल क्या था। उल्लिखित उद्धरण 'तज़्किरए-शोराए हुनूद' से लिया गया है। उसके लेखक बाबू सुन्दरलाल बर्क़ सीतापुरी हैं। यह पुस्तक १९३२ में प्रकाशित हुई थी—यदि हम सन् ९३२ में २० या २५ वर्ष घटा देते हैं तो १९०७ या १९१२ आता है। इसका अर्थ यह हुआ कि मुंशी गुरुसहाय मुल्तजी १९ ७ और १९१२ के बीच वृन्दावन में ही इस संसार से विदा हो गये और इससे यह भी निष्कर्ष प्राप्त होता है कि मुल्तजी साहब काकोरी में १८वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में जन्मे होंगे। ब्रिटिश शासन काल में किसी भी सरकारी अधिकारी या कर्मचारी को ५५ वर्ष की आयु में वैधानिक रूप से अवकाश दे दिया जाता था। अनुमान यह भी है कि अवकाश प्राप्त करने के बाद मुल्तजी साहब १०-१५ वर्ष कम से कम जीवित रहे होंगे। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि ७०-७५ वर्ष की आयु में उनका निधन वृन्दाबन में हुआ होगा। इस प्रकार उनका जन्म सन् १८४० के आस-पास काकोरी में हुआ होगा।

सुदामा चरित काव्य में घटना काल की दृष्टि से तीन अवस्थाएं देखने मे आती है, पहली निर्धन सुदामा की स्त्री की प्रेरणा से सखा कृष्ण को द्वारिकापुरी तक सुदामा की यात्रा, दूसरी द्वारिकापुरी में कृष्ण के साथ सुदामा का एक सप्ताह तक निवास और तीसरी सुदामा का वहां से प्रस्थान और अपने घर वापस आना। यदि हम इन तीनों अवस्थाओं को मुल्तजी साहब की जिन्दगी पर भी घटित करें तो यह बात बिल्कुल चस्पां हो जाती है। श्री मुल्तजी का पेंशन पाने के पश्चात् अपने काकोरी गांव से वृन्दावन की यात्रा, कुछ वर्षों तक वृन्दावन में भगवान् कृष्ण की ब्रजभूमि में निवास और अन्त में वृन्दावन से अपने असली घर यानी भगवल्लोक को प्रस्थान। मैं ऐसा भी अनुमान करता हूँ कि सुदामा चरित की रचना का आरम्भ वे काकोरी में कर चुके होंगे और एक चौथाई समाप्त भी कर चुके होंगे। तीन चौथाई काव्य उन्होंने वृन्दाबन में पूराकिया होगा। निष्कर्षतः सुदामा चरित की रचना सन् १९०० और १९०५ के बीच हुई होगी। इसके प्रमाण में एक पुष्ट साक्ष्य और भी मिलता है। श्री मुल्तजी के समयुगीन उर्दू के मशहूर शायर काकोरी के ही निवासी श्री मोहसिन काकोरवी सन् १८२४ में काकोरी में पैदा हुए और ८१ वर्ष की आयु यानी सन् १९०५ में उनका निधन हो गया। वे उनके मज़ामीने शायरी, रूहानियत तसव्वुफ और नातिया कलामी से मुतासिर थे। उनके काव्य के सभी पक्षों का प्रभाव मुल्तजी के काव्य में विद्यमान है। दोनों कवियों के काव्य में फारसी एवं अरबी की शब्दावली का साम्य, उर्दू के मुहावरे, अलंकार, वचन भंगिमा, भाव सौन्दर्य आदि की एकरूपता देखने योग्य है। दोनों का अन्दाज़ बयान एक सा है मोहसिन मुल्तजी से लगभग १० वर्ष आयु में बड़े रहे होंगे किन्तु दोनों का निधन ५ वर्ष की अवधि के भीतर ही आगे पीछे हुआ होगा यानी मोहसिन साहब १९०५ में और मुल्तजी साहब १९०७ अथवा १९१०में पंचत्व को प्राप्त हुए। दोनों की कविता में केवल एक ही अंतर लक्षित होता है और वह यह कि मोहसिन साहब की कविता

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बुद्धिपरक अधिक है किन्तु मुल्तजी का काव्य आद्यन्त भावपरक है। मस्नवी पद्धति पर भगवान् कृष्ण की कृपा और करुणा का प्रसंग उनके बाल सखा सुदामा का संदर्भ लेकर काव्य निवद्ध किया गया है। मोहसिन ने अपने एक नातिया क़सीदे में कृष्ण की जीवन माधुरी का वर्णन किया है, उसी युग में उर्दू फारसी के अच्छे कवि मुंशी जगन्नाथ सहाय द्वारा सन् १८७५ में फारसी में सुदामा चरित काव्य लिखा जा चुका था। जिसका पद्य बद्ध उर्दू में मंज़ूम तर्जुमा उन्होंने स्वयं किया था। इसका प्रकाशन भी मुंशी नवल किशोर प्रेस से ही सन् १६१० में हुआ था। यह काव्य श्री सहाय ने अपने पिता बाबू विष्णु प्रसाद की प्रेरणा से लिखा था। इसके साथ ही सन् १८८३ के आस पास मुंशी हरि नारायण ने उर्दू में एक सुदामा चरित लिखा था लेकिन इसमें न तो अभिव्यक्ति का सौन्दर्य है और न काव्य का व्यंजनाधर्म ही। संक्षेप में मस्नवी पद्धति का इतिवृत्तात्मक प्रवाह अवश्य देखा जा सकता है। उक्त सुदामा चरित नाम से चर्चित सभी काव्यों से लगभग ३०० वर्ष पूर्व सन् १५२५ में सीतापुर ज़िले के बाड़ी ग्राम-वासी कविवर नरोत्तम द्वारा प्रणीत ब्रजभाषा में सवैया, घनाचरी पद्धति में प्रसिद्ध हो चुका था। नरोत्तम के सुदामा चरित की बड़ी धूम मची थी। इसका प्रचार हिन्दी भाषा भाषी जनों में घर घर में था। जिसको देखिये वही "सीस पगा न झगा तन में" अथवा "कैसे बिहाल बिवाइन सों" का पाठ करता और सस्वर गाता घूमता था। इस सुदामा चरित की महिमा पूर्ववत् आज भी अक्षुण्ण है। एक सुदामा चरित हृदय राम पंजाबी का भी है जो १६ वीं शताब्दी के अन्त में लिखा गया सरदार कवि द्वारा विरचित सुदामा चरित सुना गया है किन्तु दुर्भाग्य से वह प्रति मुझे देखने को नहीं मिली। काशी के काव्य रसिक लाला भगवानदीन जो बाबू श्यामसुन्दर दास के समयुगीन थे—'मित्रादर्श' नाम से सुदामा चरित काव्य की रचना कर रहे थे किन्तु वह अपूर्ण रह गया। उर्दू में ही एक और सुदामा चरित महाराष्ट्र के आनंद दास का लिखा हुआ प्राप्त होता है। यह सन् १८८४ में बम्बई से प्रकाशित हुआ था। उसमें १११ छन्द हैं किन्तु इसमें काव्य का कोई पक्ष पुष्ट नहीं प्रतीत होता। सामान्य वर्णनमात्र है। यों काश्मीरी, मलायाली, बंगला भाषाओं में भी सुदामा चरित लिखे गये। पांच-सात नाटक भी विभिन्न भारतीय भाषाओं में लिखे गये। कहने का प्रयोजन यह है कि कृष्ण और सुदामा की पारस्परिक मित्र वत्सलता के प्रभावशाली संवेदन सबके हृदय का स्पर्श करते थे और जो भी इस वृत्त की सन्निद्धि में आता था—यदि कवि था तो वह उसे काव्य में अवश्य रूपांतरित कर देता था। काव्य के समस्त सौन्दर्य फलकों को दृष्टिगत रखने पर मेरा एक ही विचार स्थिर होता है कि मुंशी गुरु सहाय मुल्तजी का उर्दू में लिखा गया सुदामा चरित सर्वाधिक मर्मस्पर्शी एवं प्रभावशाली है।

एक भक्त कवि की सच्ची निष्ठा वाले श्री मुल्तजी ने अपने वर्णनों में कृष्ण के स्वाभिमानी सखा ब्राह्मण सुदामा की भौतिक अकिंचनता द्वारा कभी भी उनके

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आध्यात्मिक गौरव को आतंकित नहीं होने दिया। नरोत्तम के सुदामा जहाँ यह कहते हैं, "जीवन केतिक जाके लिए हरि को अब होउं कनावड़ो जाय के" अथवा "बांम्हन को धन केवल भिच्छा" वहीं मुल्तजो के सुदामा याचक वृत्ति का प्रतिषेध करते हुए कहते हैं—

मांगना ख़ूब नहीं जान मेरी कहना मान
क्यों बनी जाती है नादान मेरा कहना मान
इससे घट जाती है सब शान मेरा कहना मान
इससे राज़ी नहीं भगवान मेरा कहना मान

मांग है सर पे तेरे मांग तो क्या देती है
मांग छूटे हुए बालों को बंधा देती है

मांगने से कोई बदतर नहीं दुनिया में तरीक़
मांगने वाले हैं सब जूए-मलामत के ग़रीक़
आश्ना उनका नहीं कोई न मुश्फ़िक़ न शफ़ीक़
देने वाले भी जहां में हैं बहुत कम तौफ़ीक़

किन्तु सुदामा की पत्नी सुशीला का प्रत्युत्तर अत्यन्त प्रभावाशाली है। मेरे विचार से नरोत्तम के सुदामा चरित में सुशीला का उत्तर इतना व्यंजक और वेधक नहीं है। देखिये मुल्तजी का काव्य सौंन्दर्य सुशीला के प्रत्युत्तर के रूप में—

मैंने देखे हैं बहुत लोग क़नाअत वाले
नेम निष्ठा में लगे प्रेम पगे मतवाले
आप जैसे हैं वली वैसे न देखे भाले
हाथ मत्थे पर धरे बैठे हो छप्पर डाले

तश्नगी क़तरए शबनम से किसी की जाये
तो कोइ किसलिए तालाबो कुंआ खुदवाए

मांगना उनसे नहीं ख़ूब जो अपने से हैं कम
मांगना उनसे नहीं ख़ूब जो करते हैं सितम
मागना उनसे नहीं ख़ूब जो रखते हैं अलम
मांगना उनसे नहीं ख़ूब जो हैं नीच अधम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय–ग्रन्थालय,

मांगना ख़ूब नहीं बिप्र पराधीनों से
मांगना ख़ूब नहीं मुम्सिको बेदीनों से

किन्तु, अवश्य ही—

मांगिए उनसे जो हाजत को रवा करते हैं
मांगिए उनसे जो ख़ल्क़त का भला करते हैं
मांगिए उनसे जो सब रद्द बला करते हैं
आप क्यों मांग की तौहीन किया करते हैं

मांग वो शै है जो मोती से भरी जाती हैं
अपने दूल्हा की दुल्हन मांग से कहलाती है

पत्नी के ये तर्क परिनिष्ठित वचन सुनकर पत्नीव्रतो सुदामा भावसंकुल हृदय से विवश हो जाते और कहते हैं—

भेजती है जो मुझे श्याम दयाधाम के धाम
कोई तोहफ़ा उन्हें देती हैं कि ख़ाली पैग़ाम
मैं तो ख़ाली नहीं जाने का वहां ए ख़ुदकाम
नाम सुनते ही वो कमला मुझे देगी दुश्नाम

यार कुछ देके मिले यार को तब यार की बात
ख़ाली बातों से बिगड़ जाती है व्यवहार की बात

परिणामतः—

ज़ने मिस्क़ीं जो न रखती थी ज़रोसीम का गंज
दूर कर दिल से ग़रीबी का उसी दम शशोपन्ज
कोई हीले से वसीले से किसी के बेरंज
मांग लायी किसी हमसाया से थोड़े से विरंज

और—

दामने जामये पारीना में शर्मा करके
रिश्तये मेहर से बांधे उन्हें यकजा करके

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दे के शौहर को लगी कहने कि ले जाइये आप
दाबिए इसको बग़ल में व चले जाइये आप
रुक्मिनी-कंत के क़दमों के तले जाइये आप
खाक उन पावों की मत्थे पे मले जाइये आप

क्योंकि—

दिल के आइने पे वो खाक जिला करती है
है वो अक्सीर कि तांबे को तिला करती है

विप्र सुदामा और उनकी पत्नी दोनों ने हो उत्कट निर्धनता तथा उत्पीड़क अभावों में भी दांपत्य की चारित्रिक शुभ्रता को कभी मलिन नहीं होने दिया। यहां उन्होंने अपनी पत्नी की कृष्ण में निष्ठा तथा आशा—आकांक्षा को समझकर उसके तर्कों की अवमानना नहीं होने दी प्रत्युत —

दुज ने देखा जो बहुत दरपये इसरार इसे
दिल में समझे कि फ़लाकत का है आज़ार इसे
करके इन्कार करूं किसलिए बेज़ार इसे
करते होंगे वो रमानाथ अगर प्यार इसे

पत्नी की इसी सद्भावपरक प्रेरणा से सुदामा का ज्ञान, समस्या की प्रत्यक्ष धरती पर उतर आया। बेचारे सुदामा

यूं हक़ीक़त की तरफ़ साहबे-इदराक चले
प्रेम पूंजी को दबाए हुए बेबाक चले
रिश्ता सां बखिया ज़ने सीनए सद चाक चले
ग़म के नाके से निकल कर जो तरबनाक चले

काव्य की चारुता तथा सुदामा और उनकी पत्नी के चारित्रिक सौन्दर्य का मुल्तजी के इस काव्य में एक ही स्तर है। कथानक का ऐसा आकर्षण, भावों का ऐसा तारतम्य तथा भावाभिव्यंजन का ऐसा उत्कर्ष किसी भी भाषा की काव्य कृतियों में दुर्लभ हैं। मुल्तजी ने अपने इस काव्य की रचना में श्रीमद्भागवत के कृष्ण सुदामा आख्यान का आश्रय लिया है। नरोत्तम जी ने भी श्रीमद्भागवत को ही अपने सुदामा चरित के काव्यांकित प्रसंगों का आधार बनाया है किन्तु भाव संवर्द्धन की प्रक्रिया मुल्तजी के काव्य में अपेक्षाकृत अधिक तीव्र और प्रभावशालिनी है। यहां पर श्री मद्भागवत के विशिष्ट भावखंडों की भूमिका में मुल्तजी के वर्णनों की निरख परख समीचीन प्रतीत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

होती है। व्यास जी ने श्रीमद्भागवत में सुदामा का परिचय निम्नांकित रूप में प्रस्तुत किया है—

कृष्णस्यासीत सदा कश्चिद् ब्राह्मणो ब्रह्म वित्तमः
विरक्त इन्द्रियार्थेषु प्रशान्तात्मा जितेन्द्रियः
यदृच्छयो प्रपन्नेन वर्तमानो गृहाश्रमी
तस्य भार्या कुचैलस्य क्षुत्क्षामा च तथा विधा

— दशम स्कन्ध, अध्याय ८०, श्लोक ६-७

अर्थात् एक ब्राह्मण भगवान् श्रीकृष्ण के परम मित्र थे। वे बड़े ब्रह्मज्ञानी विषयों से विरक्त, शान्त चित्त और जितेन्द्रिय थे। वे गृहस्थ होने पर भी किसी प्रकार का संग्रह-परिग्रह न रखकर प्रारब्ध के अनुसार जो कुछ मिल जाता उसी में संतुष्ट रहते थे। उनके वस्त्र तो फटे पुराने थे ही उनकी पत्नी के भी वैसे ही थे। वो भी अपने पति के समान भूख से दुबली हो रही रही थी।

इसी भाव को श्री मुल्तजी ने अत्यंत कवित्वपूर्ण तथा मर्मस्पर्शी बनाया है। देखें—

आम्नाय-ग्रन्थालय, भरतनिधि, करौंदी वाराणसी-5

एक हरिभक्त बरहमन था सुदामा मफ़लूक
हर्फ़ें दौलत के वो रखता था जबीं से महकूक
ऐश इशरत थी ज़माने की सब उससे मतरूक
कृष्न के ध्यान में लगती थी उसे प्यास न भूक

रात दिन गंजे-क़नाअत में गुज़र करता था
ज़िंदगी ज़ुहदो रियाज़त में बसर करता था

इसके आगे मुल्तजी ने सुदामा की निर्धनता पर जो सांगरूपक प्रस्तुत किया है, उस पर ता बड़े-बड़े शोहरए अ फ़ाक शायरों का तख़य्युल भी खुद व खुद निसार होना पसन्द करेगा। इस्तआरे (रूपक) की शुरूआत निम्नांकित है।

मुल्के-अफ़लास की थी उसको अज़ल से शाही
सब्र दस्तूर था उसका पये-दौलतख़्वाही
मौज़ये तन की रियाया थी ग़मों जांकाही
नफ्स कर सकता न था जुर्म ख़ता बदराही

चत्र था सायये दामाने कन्हैया सर पर
अफ़सरे शफ़क़तो एहसाने कन्हैया सर पर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रूपक की इतनी लम्बी सांगता का सन्निवेश किसी भी कवि के लिए सुविधा से सम्भव नहीं और अंततः कवि कहता है।

यों ही औक़ात सुदामा के बसर होते थे
वज्द में आ कभी हंसते थे कभी रोते थे
मज़रए-दिल में सदा तुख़्मे अमल बोते थे
चश्म नम रखते थे और दाग़े जिगर धोते थे

तथा उनकी पत्नी,

घर में हमख़्वाबये दुजराज जो मासूमा थी
वो भी इस चर्खे-जफ़ाकार की मज़लूमा थी

इस प्रसंग को ऐसी काव्यमयी उदात्तता के साथ न तो मुंशी जगन्नाथ प्रसाद न मुंशी हरिनारायण और न आनन्द दास अपने सुदामा चरितों में प्रस्तुत कर सके। मुंशी हरि नारायण का वर्णन देखिये—

सुदामा था बरहमन मित्र भगवान
पतिव्रता थी ज़ौजा उसकी गुनवान
महा दारिद्र उसके घर में रहता
कभी मिलता था खाना या न मिलता
वो ज़ौजा खिदमते शौहर में रहती
कभी नाराज़ शौहर को न करती

अब मुंशी जगन्नाथ सहाय की फारसी कविताई तथा उर्दू में मंज़ूम तर्जुमानो देखिये—विशेष बात यह है कि कवि ने स्वयं ही इसे उर्दू में पद्यबद्ध किया था।

फारसी

कि यक बरहमन बूद दर यक दयार
सुदामा बइस्म आबिदो होशियार
बसे मुफलिसो यार हर जी हुनर
न मो कर्द कारे बजुज़ यादे हर
उरूसे ख़ुशी दाश्त अज़बे हिजाब
शुदश कल्बा रौशन न जुज़ माहताब
ज़ने दाश्त ख़ुशरू बसाने परी
सुसीला बनामो लक़ब सुंदरी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उर्दू

कि यक शहर में था कोई बरहमन
सुदामा बनाम आबिदो अहलेफ़न
बहुत मुफ़लिसो दोस्त था कृश्न का
बजुज़ हरिभजन कुछ वो करता न था
उरूसे ख़ुशी उससे रहती छिपी
न जुज़ माह घर में हुई रौशनी
थी ज़ौजा इक उसकी मिसाले परी
सुसीला था नामो लक़ब सुन्दरी

हिन्दी के कवि नरोत्तम ने तो इस वृत्त का प्रारंभ इन्हीं उर्दू कवियों की भांति इतिवृत्तात्मक शैली में ही किया। मात्र तोन दोहों में उन्होंने सुदामा और उनकी पत्नी का परिचय समाप्त कर किया।

कृष्ण मित्र कइ जनम को, ताको बरनन कीन्ह
सुख संपति माया मिले, सोउ उपदेस जु दीन्ह
विप्र सुदाभा वसत हो, सदा आपने धाम
भीख मागि भोजन करत, हिये जपत हरि नाम
ताकी घरनी पतिव्रता, गहे वेद की रीति
सलज सुसील सुबुद्धि अति, पति सेवा सों प्रीति

मुल्तजी ने सुदामा-पत्नी के पातिव्रत एवं पतिनिष्ठा की एक दोहे में अत्यंत मार्मिक सौष्ठव के साथ व्यंजित किया है—और वह भी ब्रजभाषा में, नरोत्तम के ही छन्द में अर्थात् दोहे में—

पिय जलधर तिय चातकी, स्वाती धन सों काम
याही आस पियास में, रहती दुज की बाम

यहां विशेषता यह है कि मुल्तजी ने यह दोहा वहां अनुस्यूत किया है जहां सुदामा की पत्नी सुशीला अपने पतिदेव से गृहस्थी की दारुण दुर्दशा तथा दुर्वह अभावों का क्लेशकर विवरण प्रस्तुत करने जा रही है। स्यात्, कवि इस बिन्दु पर इस संभावना से चिन्तित था कि पाठक कहीं यह समझने की भूल न कर बैठे कि सुदामा की पत्नी उस निर्धनता की दारुण पीड़ा में अपनी पति परायणता से विचलित हो रही थी। क्योंकि उसने भग्नाश होकर कहा था—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्या गिला कीजिए इस बेसरो सामानो का
अपनी कमबख्ती का और आपकी नादानी का

इतना ही नहीं बे सरो सामानी की पाकाष्ठा पर तो नज़र डालिए—

पैरहन तन पे नहीं जिल्दे बदन बाक़ी है
अब पसे मर्गं तमन्नाए-कफ़न बाक़ी है
देख लो पास मेरे कौन सा धन बाक़ी है
दुरे दन्दां हैं कि ये दुर्जे-दहन बाक़ी हैं

हो गये पर्दये-नामूस के टुकड़े टुकड़े
कब तलक शर्मो-हया रखूँ मैं सुकड़े सुकड़े

बात समाप्त नहीं हुई । बेचारी करुणा विह्वल होकर आगे कहती है

चूनरी है न दुपट्टा है न सारी सर पर
झूठा सच्चा कोई गोटा न कनारी सर पर
बाल उलझे हुए बरसों से हैं भारी सर पर
कंघी करती हूँ तो हो जाती है आरी सर पर

मर्द के रहते जो औरत का न सिंगार बना
क्या बना कुछ न बना खाक बनी खार बना

दीन हीन गृहस्थी की विपन्नता का चिन्तन मात्र उसे व्याकुल कर देता है
कौड़ी पैसे का ये तोड़ा हैं कि थैली भी नहीं
उजली पोशाक पे क्या मैल हो मैली भी नहीं
थाल थाली की कहे कौन कठैली भी नहीं
खैरियत है कि अभी बात ये फैली भी नहीं

कहीं ऐसा न हो पंडित को समझ के यारी
कोई आ जाय तो दुश्वार हो मेहमांदारी

किन्तु ऐसी ज़टिल गृहस्थी में भी सुशीला अपने प्रियतम जलधर की चातकी बनी हुई एक क्षण के लिए भी वह अपने पति सम्बन्धी आस्था से विचलित नहीं होती थी । अभावों के इस भयानक जंजाल में भी वह अतिथि सत्कार की मर्यादा का विस्मरण कभी नहीं करती थी क्यों न हो—

प्राणान्तेऽपि प्रकृति विकृतिर्जायते नोत्तमानाम्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्राणान्त होने पर भी उत्तम जनों की प्रकृति अथवा सद्‌वृत्तियों में कोई विकार नहीं आता। वह दुःख दग्धा अंततः कहती है—

क्या कहूँ अब तो जो कुछ मुझ पे गुज़रती है सजन
दिलेमन दानदो मन दानमो दानद दिले मन

मुझ पर क्या बीत रही है यह मैं या मेरा हृदय ही जानता है। इस क्लिष्ट, जटिल, दुरवस्था का चित्रण न तो श्री मद्भागवतकार ने किया और न नरोत्तम कवि ने किया। मुंशी जगन्नाथ सहाय, मुंशी हरि नारायण तथा आनन्द दास तो नहीं ही कर सके।

सुदामा चरित का दूसरा मार्मिक प्रसंग है 'सुदामा का कृष्ण के द्वार पर पहुँचना', द्वारपाल का कृष्ण को सुदामा के आगमन की सूचना देना तथा सुदामा के स्वगतार्थ भावाविष्ट होकर कृष्ण का तत्पर होना। इस स्थल के चित्रण में भी सभी सुदामा चरितकार मुल्तजी से बहुत पीछे हैं। नरोत्तम जी ने विषय की मार्मिकता का आग्रह तो स्वीकार किया किन्तु मर्म का विस्तारण किसी भी कवि के लिए सरल कार्य नहीं। नरोत्तम जी तो इतना कहकर शांत हो गये—

बोल्यो द्वारपालक सुदामा नाम पांड़े सुनि
छाड़े राजकाज ऐसे जी की गति जाने को
द्वारका के नाथ हाथ जोरि धाय गहे पांय
भेंटे लपटाय करि ऐसे दुःख माने को
नैन दोऊ जल भरि पूछत कुसल हरि
विप्र बोल्यो विपदा में मोहि पहिचाने को
जैसी तुम करी तैसी करै को कृपा के सिंधु
ऐसी प्रीति दीनबन्धु दीनन सों माने को

उपर्युक्त वर्णन में जहां कवि ने सुदामा की दीन दशा तथा कृष्ण के द्रवीभवन के मर्म का बिम्ब उपस्थित करने में सावधानी बरती है वहीं ब्राह्मण सुदामा के तपश्चरण तथा आध्यात्मिक निष्ठा के श्रेय एवं निष्कामता के स्वाभिमान पर उतनी दृष्टि नहीं रख पाया किन्तु मुल्तजी इस भाव वृत्त को गंभीर मनोवैज्ञानिकता तथा प्रभावपूर्ण रसात्मकता के साथ प्रस्तुत करने में अपेक्षाकृत अधिक क्षम एवं शक्त सिद्ध होते हैं। विशेषता यह है कि सुदामा जैसे अपरिग्रही तपस्वी ब्राह्मण के स्वाभिमान को सुरक्षित रखने का दायित्व भी कवि ने सामर्थ्यपूर्वक सम्हाला और संवारा है। उदाहरण प्रस्तुत है :

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जाके दरबां ने खबर दी कि महाराज कुमार
हमसबक़ आपके आये हैं सुदामा कोई यार
सूत के नाम से गरदन में है उनके जुन्नार
या तो कोपीन गिरह दार पे है दारो मदार

दम के मेहमां हैं मगर भरते हैं दम यारी का
दरहक़ीक़त उन्हें ग़म है नहीं नादारी का

शरीर में वस्त्र अथवा सूत के नाम से केवल जनेऊ शेष है और आयु के नाम पर कुछ सांसें। किन्तु सुदामा की आध्यात्मिक आसक्ति ने निर्धनता से भी विरक्त कर दिया। यद्यपि सुदामा अपनी पत्नी के सदाशयपूर्ण तर्कों एवं उसके अभाव जन्य संताप से विगलित होकर उसकी वेदना में भागी अवश्य बने और सोचने लगे—

कर दिया तंग ज़माने की मगर तंगी ने
अपना क़ब्ज़ा किया सब देह पे अर्धंगी ने

इन पंक्तियों में तर्क और कवित्व जैसे अपने-अपने उत्कर्ष में एक दूसरे से प्रतियोगिता कर रहे हैं। कुछ भी हो सुदामा अध्यात्म एवं नैतिकता के मूल्यों से कदापि डिगे नहीं और पत्नी से थोड़ा खीझ कर कहते हैं—

तुझको हैं रग़बते ज़र मुझको नहीं उसकी हवस
तुझको है मैले गुहर मुझको नहीं उसकी हवस
तुझको दरकार है घर मुझको नहीं उसकी हवस
तुझको राहत पे नज़र मुझको नहीं उसकी हवस

मैं किसी रख़्ते-मसर्रत से नहीं हूं नाकाम
मिल गया है मुझे जिस रोज़ से हीरा हरिनाम

यह हीरा विलक्षण है! जीभ पर इसे रख लीजिए तो यह प्राण-संचारी बन सकता है किन्तु लौकिक हीरे को जीभ पर रखिए तो वह प्राणापहारी सिद्ध होगा। इस हरि नाम के हीरे की अनुशंसा प्रायः सभी महाकवियों ने की है। गोस्वामी तुलसी दास जी ने अपने काव्य में प्रायः इस हीरे का उल्लेख किया है—

'राम चरित चिन्ता मनि चारू'———

'रामनाममनि दीप धरि, जीह, देहरी द्वार' में यही संकेत है—

'हौं पायो हरि हीरा' अथवा 'मैंने राम रतन धन पायो,' 'नाम चिंता मणिः कृष्णः चैतन्य रस विग्रहः' अथवा,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तर्वहिः प्रकाशस्य यदच्छिा चित्त वर्तते
रसना देहलो मध्ये धर राम मणि द्युतिम्

इस प्रकार यह हरिनाम का हीरा केवल सुदामा को ही नहीं मिला का मुल्तजी को भी यह हीरा मिल गया था।

अपने सखा सुदामा का नाम सुनते ही कृष्ण महाराज—

भाभिनी भूल गये शैन अशन भूल गये
फूलकी सेज रमा जी के रमन भूल गये
दर्दमंदी से वहीं मन्द हंसन भूल गये
मीत का रंग रंगा पीत बसन भूल गये

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

और;

जब सदा कान में पहुँची कि सुदामा आये
सख्त मोहताज निपट बेसरो सामां आये

तो फिर,

श्याम को सुध न रही कुछ कि है घर बार कहां
शशिमुखी सिन्धु सुता सुन्दरो सुकुमार कहां
धन कहां धाम कहां परिजनो परिवार कहां
मुंह से कहते हुए ऐ यार कहां यार कहां

आके चौखट पे सु.ामा से बग़लगीर हुए
शान्तो श्रृंगार बहम भूसुरो बलबीर हुए

क्या ही परस्पर दो विरोधी रसों का समागम यहां पर हुआ है। सुदामा शांत रस और कृष्ण मानो श्रृंगार रस के प्रतीक हैं। कवि शिरोमणि मुल्तजी ने अपने अतीव मर्मवेधी चित्रण द्वारा भावोत्कर्ष को पराकाष्ठा पर पहुँचा दिया है। भगवान् कृष्ण और सुदामा दोनों का जब साचात्कार हुआ हो—

एक जां और दो क़ालिब का जो पैबन्द हुआ
चार आंखें हुई और चारों को आनन्द हुआ
एक से एक इशारों में रज़ामन्द हुआ
वस्ल की राह खुली हिज्र का दर बन्द हुआ

चाह की बातें हुई प्यार के अन्दाज़ खुले
फंततुलऐन में तरफैन के सब राज़ खुले

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इतना ही नहीं, मित्रद्वय के नेत्र प्रेम के समरांगण में जब भिड़ गये तो सभी उपालम्भ और आभार ठंडे पड़ गये। देखिए न!

असंये शौक़ में जब दीदए मुश्ताक़ अड़े
यकबयक होके बहम हैरतो-ग़ैरत से लड़े
मर्दुमे दीदा निगाहों की कशाकश में पड़े
तै हुए शुक्रो शिकायत के हज़ारों झगड़े

एक ने एक की झुक झुक के क़दम बोसी की
सब ख़लिश दूर हुई कुल्फ़तो मायूसी की

हम यहां देखते हैं कि दो प्रीति वत्सल सखाजनों का एक लम्बे अन्तराल के पश्चात् यह मिलन और दृष्टि विनिमय एक विलक्षण मनोवैज्ञानिक स्नेह का द्वन्द्व उपस्थित कर रहा है। किन्तु—'मर्दुमे दीद' भी उन दोनों की निगाहों की कशाकश में पड़कर हैरान हो गये। कृष्ण और सुदामा की यह प्रीतिरीति देखकर राजमहिषियां भीषण आश्चर्य से आतंकित हो गयीं। वे सुदामा के सम्बन्ध में विचार करने लगीं—

व्रह्म निरगुन हैं हक़ीक़त में यही सरबसरी
× × ×
या कोई सन्त परमभक्त हैं मथुरावासी
इसलिए उसके हुए श्याम सखा सुखरासी

धन्य भाग अपने कि इस रूप के दर्शन पाये
भक्त भगवान को हर तौर से परशन पाये

ऐसा अनुपम भावभिव्यंजन सिर्फ मुल्तजी के ही वश की बात थी अब आइए सुदामा तथा भगवान् कृष्ण की प्रीतिमयी धृष्टता की मार्मिक घटना पर दृष्टि निक्षेप कर। श्रीमद्भागवत में कृष्ण जी सुदामा से अपनी योगेश्वर सुलभ शैली में दार्शनिक बातें करते हैं—पोटली में बंधे चावल खींच लेते हैं, एक मुठ्ठी खा जाते हैं किन्तु दूसरी मुठ्ठी में रुक्मिणी उनका हाथ पकड़ लेती हैं। इस वर्णन में हमें किसी प्रकार की काव्यात्मक सुषमा नहीं उपलब्ध होती। नरोत्तम दास ने इस प्रसंग को कुछ अधिक मनोहारी बनाने का प्रयास तो किया है—

आगे चना गुरुमात दए ते लए तुम चाबि हमैं नहिं दीने
स्याम कह्यो मुस्काय सुदामा सों चोरी की बानि में हौजू प्रवीने
पोटरी कांख में चापि रहे तुम खोलत नाहिं सुधारस भीने
पाछलो बानि अजौं न तजी तुम तैसेइ भाभी के तन्दुल कीने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कृष्ण के इस मित्र रंजनकारी व्यवहार से सुदामा की झिझक तो कुछ कम हुई किन्तु,

खोलत सकुचत गाठरी, चितवत हरि की ओर
जीरन पट फटि छुटि परे, बिखरि गये तेहि ठोर

सुदामा का संकोच फिर भी समाप्त नहीं हुआ। नरोत्तम दास जी ने यद्यपि यहाँ श्रीमद्भागवत में वर्णित तथ्य में चावलों की पोटली का जीर्ण वस्त्र फट जाने तथा चावलों के बिखर जाने की घटना परिकल्पित एवं परिवर्द्धित की है किन्तु बिखरे हुए चावलों को कृष्ण के द्वारा बीनने का कोई उपक्रम नहीं प्रस्तुत किया। श्रीमद्भागवत में केवल एक मुट्ठी चावल चबाने की बात कही गयी है। दूसरी मुट्ठी भरते ही रुक्मणी ने कृष्ण का हाथ पकड़ लिया परन्तु नरोत्तम जी ने दो मुट्ठी चबाने तथा तीसरी मुट्ठी में हाथ पकड़ने की बात लिखी है। मुल्तजी साहब तथा इस परम्परा के समस्त कवियों ने ऐसा ही किया है। यह बात अधिक तर्क सम्मत भी प्रतीत होती कवियों ने ऐसा करके यह दिखाने की चेष्टा की है कि पहली मुट्ठी में पाताल लोक और दूसरी में मर्त्य लोक के चले जाने तथा तीसरी मुट्ठी में स्वर्ग लोक के भी चले जाने की आशंका से रुक्मणी ने हाथ पकड़ा था। लोक भी तीन हैं यह बात दूसरी मुट्ठी में ही हाथ पकड़ लेने के तथ्य से जमती नहीं।

मुल्तजी के काव्य में इस प्रसंग जैसी मनोवैज्ञानिकता, मैत्री भाव, स्वाभाविकता एवं कवित्व की सांगोपांग प्रतिष्ठा हुई है वैसी इस प्रसंग के अन्य चित्रणकार कवि नहीं कर सके। इसी कारण मुल्तजी का काव्य अत्यंत प्रभावपूर्ण, हृदय-संवादी तथा ध्वनि प्रसूत रसात्मकता से आप्यायित हो गया है। इसी घटना को मुल्तजी से सुनिये—कृष्ण का कथन है—

विप्रवर प्रेम धनी मित्र सखा मन भाए
बाद मुद्दत के महाराज यहां तुम आए
बाल गोपाल ने सब आप के दर्शन पाए
कहिए अब आप हमारे लिए क्या क्या लाए

कोई तोहफ़ा हमें भाभी ने दिया है कि नहीं
तर्ज़े एख़लाक़ बयां तुम से किया है कि नहीं

जब सबक़ पढ़ने को जाते थे हम आचारी से
हम को मिलते थे तुम मकतब में वफ़ादारी से
और उस अहद में इक दिन बड़ी तैयारी से
आपका व्याह हुआ था किसी बर नारी से

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अब ये कहिये कि वह पतिव्रता कुशल क्षेम से है
अपना मतलब तो उसी प्यारी के इक प्रेम से है

यहां पर कवि ने जानवूझ कर एक रुचिकर सुखद संयोग उपस्थित किया है। प्रारम्भ में कवि लिख चुका है—

दुज ने देखा जो वहुत्त दरपये इसरार इसे
दिल में समझे कि फ़लाकत का है आज़ार इसे
करके इन्कार करूं किस लिए बेज़ार इसे
करते होंगे वो रमानाथ अगर प्यार इसे

जन वत्सल वह रमानाथ भगवान् कृष्ण इसे अवश्य ही प्यार करते थे। सुदामा का अनुमान सत्य प्रमाणित हुआ, इतना ही नहीं किसी प्रबन्ध काव्य के रचयिता कवि के लिए सावधान रहकर इस बात का आद्योपान्त ध्यान रखना पड़ता है कि किसी भी प्रसंग का उपोद्घात करके काव्य में उसका उपसंहार कहीं न कहीं अवश्य किया जाय; किसी भी आख्यान में यदि कोई भाव खंड अथवा किसी प्रसंग का सूत्रपात किया गया तो उसको कहीं न कहीं पूरा करके उसके उल्लेख की सार्थकता प्रमाणित कर देनी चाहिए। यहां पर—'करते होंगे वो रमानाथ अगर प्यार इसे' की उद्भावना यदि कवि ने की तो कृष्ण के इस कथन द्वारा उसकी सार्थक पूर्ति भी कर दी, 'अपना मतलब तो उसी प्यारी के इक प्रेम से है'। अब हम पूर्व-प्रसंग के क्रम में पुनः वापस आते हैं। कृष्ण अपने सखा से कहते हैं—

मित्रता हमसे औ तुमसे तो हैं बालापन की
तुमको मालूम है अभिलाष हमारे मन की
रूचि रही साग अलोने के सदा भोजन की
हमको भाती है फ़क़त्त प्रेम के उनकी कनकी

पोटली तुमने जो बांधी हैं बग़ल के अन्दर
रस भरे दाने हैं केवल इसी फल के अन्दर

लाइए देखें तो हम आप तो शर्माते हैं
क्या गरांबार है क्यों आप दबे जाते हैं
हम बहुत ख़ुश हों अगर आपका परशाद मिले
क़ूव्वते-रूहो मुरादे दिले नाशाद मिले

इस तरह से जो हुआ प्रेम के तंदुल का उबाल
मीठी बातों में छके कुछ न गली विप्र की दाल

× × ×

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
...ग्रन्थालय, भरतनिधि, करौंदी वाराणसी-5

हाथ फैला के लगे खींचने उनका अंचला
प्रेम के बस में हुए बिप्र तो कुछ बस न चला

प्रीति की रीति यही है कि बड़े इज्ज़ के साथ
पाणिपंकज से तरे जिसके पतित पुंज अनाथ
सामने बिप्र सुदामा के झुकाए हुए हाथ
हाथ भर कपड़े को फैलाए रमानाथ ने हाथ

हाथ लगते ही गिरह खुल गयी छूटी पुटकी
दाने छिटके तो वहीं चुन लिए चुटकी चुटकी

ऐसा रसात्मक चित्रण, ऐसी व्यंजना का उदाहरण निःसंदेह अप्रतिम है। इतना ही नहीं जब वह पोटली की गांठ खुल गयी तो मुल्तजी साहब इस पर भी कविता करने से नहीं चूकते। वह फ़ारसी बैत में कहते हैं—

शुक्र सद शुक्र कि वा शुद गिरहे कारे-ग़रीब
वा शुद आं उक़दए-तक़दीरे-गिरहदारे-ग़रीब
लाजरम हल शुदा हर उक़्दए-दुश्वारे-ग़रीब
उक़्दा बकुशाद चू दस्ते करमे यारे-ग़रीब

दाना अज़ गोशये-दामाने-सुदामा अफ़शान्द
गोइया अक़्दे सुरैय्या महे ताबां अफ़शान्द

उपर्युक्त पंक्तियों का अर्थ है कि इधर तो सुदामा की पोटली की गांठ खुल गयी और उधर मानो सुदामा की निर्धनता की कठोर समस्या की गांठ खुल गयी। इधर गांठ खुलते ही चावल छिटक कर ज़मीन पर आ गये और उधर सुदामा के सौभाग्य के नक्षत्र ही धरती पर आ गये।

मुल्तजी का सुदामा चरित यूं तो एक प्रबन्ध काव्य है जिसमें दो मित्रों की गहरी प्रीति का चित्रण किया गया है। इनमें एक हैं भगवान् कृष्ण और दूसरे हैं दीन ब्राह्मण सुदामा, इनमें यदि एक पूर्णकाम है तो दूसरा निष्काम—एक नियामक है तो दूसरा नियमी-संयमी, एक ब्रह्म है तो दूसरा जीवात्मा, एक सम्पन्न है तो दूसरा विपन्न। इन्हीं भावों की व्यंजना इस खंड काव्य में हुई है। उर्दू अथवा फारसी काव्य शास्त्र की परिधि में रखने से यह कृति क़सीदे की कोटि में आती है। क़सीदा फारसी अथवा उर्दू काव्य की वह विधा है जिसमें कवि किसी ऐश्वर्यशाली पुरुष या किसी पैग़म्बर की प्रशंसा में कविता का प्रणयन करता है। क़सीदा का मज़मून मजाज़ी भी हो सकता है। यहां श्रीकृष्ण भगवान् की उदारता, कृपा भाव, भक्त वत्सलता, मित्र परायणता

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उनका परात्पर ऐश्वर्य, योगिक सिद्धि एवं वृत्तिमाधुर्यका अतिशय मोहक कवित्वपूर्ण निर्वचन किया गया है। कवि ने अपने वर्णनों में मुहावरेदार भाषा, घरों की सीधी सादी ज़बान रेख्ती, और फारसी की दुर्लभ शब्दावली का भी प्रयोग किया है। उर्दू की छोटी बहर, हिन्दी का दोहा, सोरठा, कवित्त, सवैया ग़ज़लें मुस्त जाद और खमसा इत्यादि अनेक प्रकार के छन्दों का प्रयोग किया है। प्रकृति चित्रण, मानवी स्वभाव का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण और सुदामा की बे सरोसामानी तथा कृष्ण का सरापा, मुल्तजी के काव्य में एक साथ उपलब्ध होते हैं। सुदामा चरित के दो तीन संस्करणों में चार पृष्ठों का अंतिम भाग श्याम चौबीसी नाम से फारसी के खमसा छन्द में लिखा गया, नहीं मिलता था। खमसा का प्रत्येक छन्द पांच पंक्तियों का होता है। किन्तु संयोगतः मुंशी नवल किशोर से प्रकाशित एक संस्करण में यह चौबीसी प्राप्त हो गयी जो कि पुस्तक के अंत में छपी हुई हैं। उसकी भाषा तथा अभिव्यक्ति का स्वरूप देखने पर उसके मुल्तजी द्वारा लिखे होने में कोई सन्देह नहीं रहता।

महाकवि मुल्तजी ने अपने इस सुदामा चरित में प्रायः तीनों प्रकार के अलंकारों का समावेश किया है। शब्दालंकार, अर्थालंकार, उपमालंकार, अभिधा, लक्षणा व्यंजना तीनों शब्द शक्तियां, करुण विप्रलम्भ तथा भक्ति रस, शिष्ट शृंगार रस का इस कृति में दिव्य संगम हुआ है। हम कह चुके हैं कि श्री मुल्तजी अपनी कृति में हिन्दी खड़ी बोली, व्रज भाषा, संस्कृत, फारसी तथा उर्दू के शब्दों का सफल प्रयोग करने में पूरी तरह कामयाब रहे। इब्तदाई हम्द में ही देखें—

जै उमा जी के ललन अम्नो अमां के दाता
इल्म के फ़हमो फेरासत के ज़बां के दाता
गज बदन सिद्धि सदन नामो निशां के दाता
राहते जाने जहां जानो जहां के दाता

जै शिरी शैल सुता कंत परम वरदानी
बख्त बदरा तु बयक रम्ज़ करम गरदानी

जैं शिरी भागीरथी जगत की पावन करनी
जान्हवी जगज्जननी जीव के पातक हरनी
पावन स्नान के हैं तेरे जहां तक बरनी
तू है सब के लिए संसरित सरित की तरनी

अब व्रज भाषा के एक दो कवित्त देखिए और निर्णय कीजिए कि मुल्तजी की व्रजभाषा में कविता का कैसा रस परिपाक हुआ है और रीति कालिक शैली का

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कैसा उत्कृष्ट विन्यास प्राप्त होता है साथ ही सिंहावलोकन छन्द का भी आनन्द लीजिए।

जाइए न और द्वार दौड़ दौड़ बार बार
श्याम हैं बड़े उदार द्वारिका सिधाइए
धाइए न देस देस गाइए रमा रमेस
ध्याइए व्रजेश तौ धनेश कोष पाइए
पाइए सुदुख घनेह श्याम सों जो नाहीं नेह
श्याम की बनाई देह श्याम को बुलाइए
लाइए मनाय श्याम अर्थ धर्म मोक्ष काम
काहु भांति श्याम धाम विप्र क्षिप्र जाइए

आनन्द-ग्रन्थालय,

और भी;

आवेगी सम्पदा समूह देस देसन की
बसुधा नरेशन की दासी हुई धावेगी
धावेगी लक्षलक्ष जोजन सों लक्ष बार
सुषमा जू सत अपार जनके हित लावेगी
लावेगी रिद्धि सिद्धि मानिक मनि रतन साथ
कमला निज कमल हाथ पंकज गृह छावेगी
छावेगी ऐन चैन लावेगी गुरुसहाय
जा दिन प्रभु दया दृष्टि मेरी दिसि आवेगो

इसे अब यहीं छोड़ें, मुल्तजी की ग़ज़ल गोयी के एक दो नमूने भी देखें। ग़ज़ल की ऐसी सलीस बन्दिश, और मुक़फ्फा, मुसज्जा (सानुप्रासिक एवं नाद सौंदर्य पूर्ण) से समाविष्ट शैली तथा फारसी के सकील अल्फाज का इस्तेमाल, लेकिन रवानिये बेखलल—यह सारा जादू सिर्फ मुल्तजी ही पेश कर सकते थे।

दो यार इक दिल जहां में ज़ाहिर यके सुदामा दिगर कन्हैया
ग़रीब बेज़र इधर सुदामा ग़रीब परवर उधर कन्हैया
दो दिल मुहब्बत के जामे जम हैं दो तन जुदावो दो जां बहम हैं
कुंअर कन्हैया के दिल में हम है हमारे दिल में कुंअर कन्हैया
जो तै करूंगा मैं ये मसाफ़त टलेगी सर से हज़ार आफ़त
हरेगा दिल का मेरे कसाफ़त करेगा जिस दम नज़र कन्हैया

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रेखांकित शब्दों के परिप्रेक्ष्य में उपयुक्त बन्दिश ग़ौरतलब है। रचना के इस कठिन निबन्धन का इन्द्रजाल वही समझ सकते हैं जिनको काव्य रचना की कुछ भी शक्यता प्राप्त है। फारसो में जो बैत बीच बीच में आये हैं उनमें कवित्व का धरातल कहीं धसकने नहीं पाया है। उन वर्णनों में आलंकारिक भणिति भंगी के कारण अभिव्यक्ति की ऋजुता एवं ओज माधुर्य तथा प्रसाद पूर्ण प्रवाह कहीं भी बाधित नहीं हुआ। दृष्टि डालें -

खाक पाये कि बराहे करम बल मालीद
खाक पाये कि पये यारिए गजराज दवीद
खाक पाये कि ब औजे सरे सोबान रसीद
खाक पाये कि पये रफ़ए गुनाहस्त मुफ़ीद

खुर्रमांदम हमूं खाक शवद अक्सीरम
खाक गर्दमो बज़ेरे क़दमश जागीरम

सर नगूं बहरे क़दमबोसिए ऊ चर्खेफ़राज़
मेहो मह अज़ पये पाबोसिएऊ दर तगो ताज़
कूचए ब्रज ज़नक़्शे कफ़े पायश मुमताज़
बाज़ दारम पये खाके क़दमश दस्ते नयाज़

बर कशद हम चू कमांगर तरफ़े खुद जूदम
तीरे उम्मीद खुरद वर हदफ़े मक़सूदम

इन पंक्तियों का अर्थ वहीं देखने की कृपा करें जहां पर ये वर्णन क्रम में यह प्रसंग आया है। मुल्तजी की फारसी ग़ज़ल गोई का भी आनन्द लें —

दरीं ग़ुरबत खयालेरूए जानां रहनुमा दारम
बकूयश मी तवानम शुद अगर बख़्ते रसा दारम

चे मुश्किल ईंतने काहीदा रा बुर्दन बआसानी
कि संगे सख़्तिए दौरां बरगे कहरबा दारम

इस ग़ज़ल की बन्दिश आगे भी इसी प्रकार चली है। मुल्तजी ने अपनी नज्म निगारी में न तो भाषाओं का कोई रंग छोड़ा और न काव्य विधाओं का। हमने अभी पीछे उनकी ग़ज़ले मुस्तज़ाद का तज़किरा किया था। मुस्तज़ाद लफ्ज़ इस्तज़ाद से बना है जिसके मानी हैं ज़ायद अर्थात अधिक। मुस्तज़ाद वह नज्म है जिसमें चन्द ज़ायद अल्फाज़ उस बहर से लाये जाते हैं जिस बहर में वह नज्म होती है और ये ज़ायद अल्फाज बहर के अरकान (स्तंभो) के वज्न पर होते हैं। नीचे की चार सतरों में इस ग़ज़ल की विशेषता स्पष्ट हो जायेगी—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्या क्या मैं करूं शुक्र अदा श्याम तुम्हारे—अफ़जूं है बयां से
भजते हैं सहसमुख से सहस नाम तुम्हारे—नित नोंदो ज़बां से

सुदामा चरित के अन्त में प्रस्तुत किया गया एक ख़मसा जिसका अर्थ होता है पांच पंक्तियों की बन्दिश, काबिले दीद है। इस ख़मसे में भगवान् कृष्ण के शरण्य होने और भक्त के शरणागत होने का सुन्दर चित्रण है। इसमें चौबीस ख़मसे हैं। इसलिए इसका नाम मुल्तजी को ओर से श्याम चौबोसी दिया गया है --

देखिये—

क्या क्या कहूं सुयश मैं तुम्हारा बिहारी जी

× × ×

जिसने लिया चरन का सहारा विहारी जी
भवनिधि से उसको आप ने तारा बिहारी जी
मेरे तुम्हीं हो प्राण अधारा बिहारी जी

इस नज्म की अंतिम पंक्तियां हैं --

महफूज़ हो वो नफ्स उदू के फ़साद से
महफूज मुस्तफीद हो दिल की मुराद से
महरूम हो कभी न मआशो मफ़ाद से
शामो सहर जो कोई पढ़े एतक़ाद से

खमसा तुम्हारे यश का दोबारा बिहारी जी

मुल्तजी के काव्य की प्रकृति का निरूपण अपने उपसंहार में पहुँच कर मुझे प्रेरित कर रहा है कि मैं अलंकार, छंद, रस की दृष्टि से सुदामा चरित की विशद और व्यापक समीक्षा न करूं क्योंकि भूमिका में यह सब सम्भव नहीं। इस पर तो परिशोधी जन अलग से पुस्तकें लिखेंगे तभी अभीष्ट सिद्ध होगा। मेरी यह प्रस्तावना तो दानिशवरों के लिए सिर्फ चन्द इशारों तक महदूद है। इतना आवश्यक प्रतीत होता है कि काव्य की रमणीयता के विशिष्ट पद्यों के प्रमाण में मुल्तजी की कतिपय श्रेष्ठ पंक्तियाँ मात्र उद्धृत कर दूं।

यहाँ पर मैं पुनः संकेत करना चाहता हूँ कि मुल्तजी मुहसिन काकोरावी के के समयुगीन थे। किन्तु मुहसिन आयु में बड़े थे, अतः स्वाभाविक है यदि उनके काव्य का प्रभाव मुल्तजी के काव्य पर पड़ा। मुहम्मद जलालुद्दीन रूमी, हाफिज, शेख, सादी, अब्दुल रहमान जामी, अबूबकर जैसे ईरान के शोहरये आफ़ाक शायरों के कलाम का बहुरंगी प्रभाव मुल्तजी और मुहसिन दोनों कवियों पर पड़ा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री मुल्तजी के काव्य में मैत्री धर्म के दोनों पक्ष आश्वासन और विश्वास गहराई तक संवारे गये हैं। मैत्री का संयोग और वियोग पक्ष दोनों का चित्रण सुदामा चरित में अत्यन्त निपुणाई के साथ किया गया है। शृंगार का आलम्बन रुक्मिणी हैं आश्रय कृष्ण, दूसरी ओर कुछ न्यूनता के साथ करुणा का आलम्बन सुशीला (सुदामा की पत्नी) और आश्रय सुदामा हैं—एक तीसरा पक्ष भी है सखा भाव का, यदि हम इस भाव को मैत्री रस की संज्ञा देना चाहें तो कोई बाधा नहीं दीखती। सुदामा इस मैत्री के आलम्बन हैं कृष्ण आश्रय। मैत्री का प्रीतिभाव ही इस पुण्य कृति में विभावित हुआ है।

सुदामा चरित में रसात्मक काव्य के समस्त पार्श्व सफलता के साथ समाविष्ट हुए है। हिन्दी को छन्द पद्धति लगाकर सोरठा, दोहा, छन्द, धनाचरी, सवैया सिंहाव लोकन तक और उर्दू के गजल मुखम्मस मुसद्दस हर प्रकार के बहर एकत्र हैं। मुहाविरात का इस्तेमाल अलंकारों की असाधारण योजना, हिन्दी उर्दू फारसी संस्कृत की दुर्लभ शब्दावली का उपयोग काव्य को उत्कृष्टता को द्विगुणित कर देते हैं। अभिव्यक्ति की विलक्षणता और चमत्कार सर्वथा दृष्टव्य हैं। कृष्ण को सुन्दरता का चित्रण करते हुए कवि एक स्थान पर कहता है।

'रूप सागर का तेरे भरते हैं जलधर पानी' यहां तीन तीन विशिष्टताएं एक साथ नियोजित हुई है। बादल समुद्र से ही पानी लेते हैं दूसरे बादलों की कान्ति कृष्ण की नील कान्ति के सामने तुच्छ हैं—तीसरे बादल मानो कृष्ण की नील कान्ति ही चुराले गये। कवित्व को विशद चारुता का निर्वाह करते हुए कवि ने अभिव्यक्ति की बहुमुखी भंगिमाओं को अभिनिविष्ट किया है। एक ग़ज़ल में हर दो पंक्तियों में तीन तीन बार काफिया रदीफ की पूर्ति करते हुए हर मिसरे के आख़िरी क़ाफिया रदीफ का अत्यन्त स्वाभाविक निर्वाह किया है किन्तु अभिव्यंजन की रमणीयता तथा प्रवाह में कोई व्यवधान नहीं पड़ने पाया। उदाहरणार्थ देखें—

दो यार यक दिला जहां में जाहिर
यके सुदामा दिगर कन्हैया
ग़रीब बेज़र इधर सुदामा
गरीब परवर उधर कन्हैया
दो दिल मुहब्बत के जामे जम हैं
तो तन जुदा वौ दो जां बहम हैं
कुंवर कन्हैया के दिल में हम हैं
हमारे दिल ये कुंवर कन्हैया

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जो तै करूंगा मैं यह मुसाफ़त
टलेगी सर से हज़ार आफ़त
हरेगा दिल की मेरे कसाफत
करेगा जिस दम नज़र कन्हैया

आम्नाय-ग्रन्थालय
मल्लनिधि, करौंदी
वाराणसी

प्रथम व दूसरे मिसरे में दिगर, वेज़र, इधर, परवर, उधर शब्दों का सानुप्रासिक प्रयोग हुआ है परन्तु इससे भी कठिन कार्य कवि का वह है कि तीसरे चौथे मिसरे में जम हैं, बहम हैं, हम हैं की क़ाफिया रदीफ की पूर्ति के साथ जो ग़ज़ल का मुख्य क़ाफिया रदीफ़ हैं वह भी सुरक्षित हैं। जैसे कुंवर कन्हैया नज़र कन्हैया का काफिया रदीफ पहले दूसरे तीसरे के क़ाफिया रदीफ की ताल में विद्यमान है। इसी प्रकार मसाफत, आफत, कसाफत शब्दों को अगले मिसरों में देख सकते हैं। इस अप्रतिम शैली का निर्वाह ग़ज़ल में आद्योपान्त हुआ है। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि मर्म मोदकारी काव्य के विविध लक्षणों से सम्पन्न मुल्तजी की यह प्रीति गर्भा काव्य कृति हिन्दी और उर्दू भाषाओं को काव्य रचना के लिए न केवल सम्भावनाओं का सिंहद्वार खोलती है प्रत्युत् सही दिशा में अग्रसर होने का निदेश भी प्रस्तुत करती है।

———

आम्नाय-ग्रन्थालय
मल्लनिधि, करौंदी
वाराणसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दोहा

वंदौं श्याम सनेह बर, गौर अंग अभिराम
सुमिरौं करिवर बदन को, मंजुल मंगल धाम

जै उमा जी के ललन अम्नो[1] अमां के दाता
इल्म के फ़हमो[2]-फेरासत के ज़बां के दाता
गज बदन, सिद्धिसदन, नामो-निशां के दाता
राहते-जाने[3] जहाँ जानो-जहाँ[4] के दाता

जी में है श्यामो-सुदामा के चरित गान करूँ
वो ज़बां दीजिए मुझको कि सुधा पान करूँ

जयश्री शैल-सुता-कंत परम वरदानी
[5]बख़्त वदरा तु बयक रम्ज़ करम गरदानी
कोई दुनिया में नहीं तुम सा तवांगर[6] दानी
दोनों आलम में हैं मशहूर हरीहर दानी

आपदा विप्र सुदामा की हरी जी ने हरी
दे के हरि-भक्ति करो तुम मुझे पातक से बरी

सरस्वती सत्व सुधा दे मेरी गोयाई में
मेहरबानी श्री बानी की हो कविताई में
छाप संतों की हो उनवान[7]-पज़ीराई में
श्याम घन की हो दया इस चमन[8] आराई में

१—शांति एवं शरण
२—तीव्र बुद्धि, सूझ-बूझ
३—मानव जाति का सुख-संतोष
४—समस्त प्राणियों एवं संसार को (कृपा) प्रदान करने वाले
५—किसी के दुर्भाग्य को तू (कृष्ण जी) अपनी कृपा से (सौभाग्य में) परिवर्तित कर देता है
६—शक्तिमान
७—विषय चयन
८—वाटिका की सज्ज़ा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जिससे इक शजरए[1] औसाफे-हरी पैदा हो
सब्ज़ शाखे[2]-सुखने, बहरावरी पैदा हो

जय श्री भागीरथी जगत की पावन करनी
जा॰ह्वी, जग जननी जीव के पातक हरनी
पावन स्नान के हैं तेरे जहा तक बरनी
तू है सब के लिए संसरित-सरित की तरनी

मौज में आ, दिलो ज़ां को मेरे पावन कर दे
कृष्ण कीरत से से ज़बा को मेरी पावन कर दे

जय श्री नारदो सनकादिको सुखदेव वशिष्ट
आदि कवि गाधि सुवन जागबलिक ज्ञानविशिष्ट
अंगिरा व्यास भरद्वाज पराशर धर्मिष्ट
अत्रि घटजोनि सगुन ब्रह्म हुई जिनकी सिरष्टि

सूरो तुलसी श्री हरिदास के आगे कर जोर
भेंट करता हूं मैं यह भक्ति चरित प्रेम अकोर

ग़ज़ल

बदौं दया-निधान गोसाईं मुकुंद लाल
भव-सिंधु पार जान गोसाईं मुकुंद लाल

सुख धाम सानुकूल कुलक[3] नाग शार्दूल
सुनिये सगुन-सुजान गोसाईं मुकुंद लाल

राकेश-मुख मयूख बचन भागवत पियूख[4]
विज्ञान व्योमभानु गोसाईं मुकुन्द लाल

निर्भीक हरिस्वरूप दयानिधि परम अनूप
ज्ञाता निगम-पुरान गोसाईं मुकुंद लाल

समरथ, सुशील, श्याम-स्नेही, समान चित
सेवक सुखद सुजान, गोसाईं मुकुंद लाल

१— जिससे भगवान् के गुणों का एक वृक्ष उत्पन्न हो
२— जिससे वैभव संपन्न काव्य की हरी शाखा फूटे
३—मुखिया
४—पीयूष

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वृन्दा-विपिन निवास बिहारी के खास दास
सत-बरत[१] सावधान, गोसाईं मुकुंद लाल

जन गुरुसहाय दीन, सरन पाल गुरु-प्रवीन
सांचे सुकिरत[२] मान, गोसाईं मुकुंद लाल

कवित्त

वृन्दावन प्राची में सांची कहौं दीन बंधु
आनंद की छटा चार नैनन दरसाय गये
हर के तुम ताप, सोक मुद में कर कुमुद लोक
माया औ मोह कोक कोकी बिछुराय गये
चांदनी सुकीरत की छायी जग चहूँ ओर
बिहंसे जन चकोर पाप पंकज सकुचाय गये
स्वामी श्री मुकुंद लाल पूरन मिस गुरुसहाय
वसुधा में भागवत सुधा सी बरसाय गये

सोरठा

श्री गुरु दीन दयाल, देव सुबुद्धि विशाल प्रभु
जेहि बल परम रसाल, कृष्ण कथा बरनन करौं

दोहा

होत सगुन सुभ सिद्धि फल, आदि मध्य परनाम
कहत, सुनत, समुझत, गुनत, सुमिरत श्रीहरिनाम

हरीहर नाम सरेनामा[३] रक़म[४] करता हूं
शुक्र बार-आवरिए[५]-नख़्ले-क़लम करता हूं
ज़िक्रे-फ़ज़लो करमे-काने-करम करता हूँ[६]
सेह्रे-तस्कीं दिले बेताब पे दम करता हूँ[७]

१—सत्यव्रत २—सुकृत
३—शीर्षक (पता) ४—लिखना मैं
५—लेखनी के सफलीभूत होने के लिए (भगवान की) स्तुति करता हूं।
६—कृपा की खान (भगवान कृष्ण) की कृपा एवं दया का वर्णन करता हूं
७—व्यथित हृदय पर संतोष के मंत्र को फूंकता हूं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मिदहते श्याम सखा बस है तअल्ली के लिए[१]
नेमये शुक्र भी काफी है तसल्ली के लिए[२]

नख़्ल-बंदे चमने हर तनो जां बनमाली[३]
दिले-पुरदाग़ है उसके लिए गुल की डाली[४]
हर कि हर मज़रए बख़्शिश की हरी है बाली[५]
उसकी नियमत से किसी का नहीं दामन ख़ाली

हम ग़रीबों के रवा[६] काम हरी करते हैं
शाख़े-मक़सद को वो घनश्याम हरी करते हैं

हरि की यारी का है हर वक़्त भरोसा भारी
हरि की हर दिल में लहकती है सदा हरियारी
सबके प्यारे हैं हरी सबके हरी हितकारी
हर ज़बां पर है हरीकृष्ण हरी बनवारी

कोई नाकाम नहीं जिनको है हरिनाम से काम
नामवर सबके हुआ करते हैं हरिनाम से नाम

[७]हर वफ़ादार को हर तौर से हरि मेहर में है
हर उदू के लिए हरि ज़हर में हरि क़हर में है[८]
घरो बाहर वही हर क़रियओ[९] हर शहर में है
मज़हरे-हर दो जहाँ है वही हर दहर में है[१०]

१—कृष्ण को दानशीलता की स्तुति बड़ाई के लिए है

२—और उनकी स्तुति की पूंजी भी संतोष के लिए पर्याप्त है

३—प्रत्येक शरीर एवं प्राण की वाटिका के माली कृष्ण जी हैं

४—जो मलिन चित्त है वही (कृष्ण) के लिए फूल की डाल के समान हैं
वनमाली—कृष्ण जी

५—उसकी उदारता की कृषि की बालियां हरी हैं

६—पूरा करना

७—प्रत्येक भक्त के लिए हर प्रकार से भगवान् कृपालु रहते हैं

८—और प्रत्येक नास्तिक के लिए विष और क्रोध बन जाते हैं

९—गांव

१०—दोनों लोकों में वही प्रकट है और प्रत्येक संसार में उसी का अस्तित्व है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हरी, हर बहर[१] की हर लहर में, हर गौहर[२] में
जौहरी आप हैं और आप हैं हर जौहर[३] में

फ़ैज़े[४]हरिनाम से है क़ुलज़मे[५] सरवत ये किताब
फैज़े हरि नाम से है लुज्जए[६]-इशरत ये किताब
फैज़े हरिनाम से है जूए[७]-सख़ावत ये किताब
फ़ैज़े हरिनाम से है बहरे[८]-करामत ये किताब

बेगुमां[९] होगा इसी बहर से गौहर पैदा
यह ज़मीं ऐसी नहीं है कि न हो ज़र[१०] पैदा

ग़ज़ल

आग़ाज़े-कारे[११]-दो जहां हर हाल में हरि नाम है
अंजाम कारे[१२]-जिस्मो जां हर हाल में हरि नाम है
मथुरा अयोध्या द्वारिका काशी उड़ीसा वन्तिका
काशी का हैं रौनक़[१३]-फ़िज़ा हर हाल में हरि नाम है
रंजो-मेहन[१४] में मुबतिला रहते हैं जिनके दिल सदा
उनके लिए इशरत[१५] फ़िज़ा हर हाल में हरि नाम है
तै-करदा[१६] सब राहे-अदम[१७] रखते हैं जन्नत में क़दम
जिनकी ज़बां पर दम बदम हर हाल में हरि नाम है
हरिभक्त हर शामोसहर[१८] कहते हैं हरि हरि बेश्तर
विर्दे-ज़बाने[१९] हर बशर हर हाल में हरि नाम हैं
नामो निशाने-बेनिशां आरामे-जाने-आशिकां[२०]
हाजत[२१]-रवाए-दो जहां हर हाल में हरि नाम है
हैं यार दुनिया में सभी पर ग़मगुसारे[२२] मुल्तजी
हर वक़्त हर दम हर घड़ी हर हाल में हरि[२३]नाम है

१—समुद्र २—मोती ३—बहुमूल्य मणियां ४—भगवान के नाम की कृपा ५—संपत्ति का सागर ६—सुख की गहराई ७—दानशीलता की नहर ८—दिव्य चमत्कार का सागर ९—निःसन्देह १०—सोना ११—लोक-परलोक दोनों के कामों का प्रारंभ १२—शरीर एव प्राणों के कामों का परिणाम १३—शोभावर्द्धक १४—कष्ट, क्लेश १५—आनन्द वर्द्धक १६—तय किया हुआ १७—परलोक का मार्ग १८—प्रभात १९—वाणी का पाठ २०—फारसी भाषा में आशिक अर्थात् प्रेमी का बहुवचन आशिका अर्थात् प्रेमी जन है यहाँ भक्तगण के अर्थों में यह शब्द प्रयुक्त हुआ है २१—दोनों लोकों की आवश्यकताओं को पूर्ण करने वाला २२—कष्ट निवारक २३—हर नाम से तात्पर्य हरि नाम है

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कवित्त

संत सुर ध्यावैं, गुन गावैं मुनि वृन्द वृन्द
अंखियां झर लावैं, प्रेम जलकन भरी भरी
रट-रट हरिनाम गोप बनिता सी चतुर बाम,
पहुँचैं हरिधाम काम-सरिता की तरी तरी
हरि के गुन गुरु सहाय वरनत नित विहगराज,
गावत गजराज, कान्ह कीरत करी करी
पंछी-गन द्रुमन बैठि, स्वाहा उचार करैं
जै जै जै कृश्न चन्द्र मोहन मन हरी हरी

सोरठा

हरि के चरित अपार, होत सुमिरि भव-पार नर
हरी हरन अघ-भार, हरी नाम मंगल करन

दोहा

नीकी रुचि, फीकी भगति, जिय की जाने कौन
ताते कहिबो ही भलो, कब लग रहिये मौन

दिल जो होता है कभी सख़्तिए[१]-दौरा से मलूल[२]
पासे-एखलास,[३] अज़ीज़ों का भी जाता है वो भूल
गुंचगी से कभी हंस हंस के भी होता नही फूल[४]
बात करता है जो कोई तो समझता है फ़ुज़ूल[५]

तब सुदामा की हक़ीक़त उसे बतलाता हूँ
हर तरह रम्ज़ो-किनाए[६] में ये समझाता हूं

ऐ दिल ! इस सख़्तिए-ऐय्याम[७] से बेताब न हो
आतशे-संगे-सऊबत पे तू सीमाब[८] न हो
क़ुलज़में-फ़िक्र[९] में पड़कर ख़से-गिरदाब[१०] न हो
हवसे-तोमा[११] न कर माहिए-क़ुल्लाब[१२] न हो

१—युग की कठोरता २—दुःखी ३—प्रिय जनों के सदाशय की रक्षा भी वह भूल जाता है ४—हृदय सदैव कली बना रहता है कभी प्रफुल्लित नहीं होता ५—व्यर्थ ६—संकेत, इशारा ७—युग की करालता ८—कठिनाई के पाषाण की अग्नि में व्यग्र (पारे की तरह) न हो ९—चिंता का सागर १०—भंवर का तिनका ११—भोग (ग़िज़ा) १२—वंशी में फंसी हुई मछली।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कुबक[1] सां[2] गर न गुहर[3] पाइए कंकर चुनिए
न लगे चन्द्र किरन हाथ तो अख़गर[4] चुनिए

आक़बत[5] की है दिला[6] ! अर्ज़े-जहां[7] में खेती
नाम दुनिया है इसी का औ यही है गेती[8]
लाउबाली[9] में किसी को भी नहीं सुख देती
नफ़ा उनको है जो हैं हलधरो हरि के हेती

दानए-सब्रो क़नाअत[10] की जिन्हें आस नहीं[11]
मज़रए-उम्र[12] के हैं दास वो हरिदास नहीं

ज़ेरे-गरदूं[13], गिलए-दौर[14] ज़बरदस्ती है
नश्शए ज़र[15] पे जो मरते हैं वो बदमस्ती है
साहबे-ज़र[16] की ज़राफ़त[17] पे, क़ना[18] हंसती है
मुफ़लिसी[19] अपनी कसौटी पे उन्हें कसती है

जो क़नाअत के हैं ज़रदार, तवांगर[20] वो हैं
माल के हैं जो तलबगार गदागर वो हैं

गौहरे शुक्र दरीं बहर दुरे नायाबस्त[21]
सब्र साज़े तरब अज़ बहरे दिले बेताब अस्त[22]
हर ज़मां शुक्र कलीदे अमलो ईजाबस्त[23]
दर गुलिस्ताने जहां, सब्र गुले शादाबस्त[24]

नेमते शुक्र, गदा, अज़ पए तस्कीं दारद[25]
सब्र तल्ख़ अस्त व लेकिन बरे शीरीं दारद[26]

१—चकोर, लेकिन चकोर मोती नहीं खाता, इसलिए इसे कवि का भ्रम ही माना जाना चाहिए २—समान ३—मोती ४—चिंगारी ५—परलोक ६—ऐ दिल ! ७—संसार की भूमि ८—दुनिया ९—निश्चितता १० शांति एवं संतोष का बीज ११—आशा, उम्मीद १२—जीवन की खेती १३—आकाश के नीचे १४—ज़माने की शिकायत १५—धन का नशा १६—धनाढ्य १७—आमोद-प्रमोद १८—संतोष १९—ग़रीबी, दरिद्रता २०—समर्थ २१—इस संसार के सागर में स्तुति का मोती दुर्लभ है २२—संतोष ही व्यग्र हृदय के लिए आनंद की सामग्री है
२३—भगवद् भजन सदैव आकांक्षा और उसकी स्वीकृति दोनों की कुंजी है
२४—इस संसार के उद्यान में संतोष एक ताजा फूल है
२५—फ़क़ीर अपने संतोष के लिए भजन की संपत्ति रखता है
२६—संतोष यद्यपि कटु होता है लेकिन मीठा फल रखता है

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शीरीं[१] जहां में शुक्र[२] से अफ़ज़ू[३] शकर नहीं
जिसकी ज़बां पे शुक्र नहीं वह बशर[४] नहीं
चांदी किसी को सब्र है सोना किसी को शुक्र
नेमाए[५]-सब्रो-शुक्र कम अज़ सीमो[६] ज़र नहीं
दो आश्ना[७] है बह्‌रे-सऊबत[८] के सब्रो-शुक्र
यह साथ हो तो क़ारे[९] बला से ख़तर[१०] नहीं
राग़िब[११] तो सब्रो-शुक्र से हो कोई तल्ख़काम[१२]
भायें न दिल को ऐसे ये दोनो समर[१३] नहीं
दिन रात सब्रो-शुक्र से है इन्तज़ामे-ख़ल्क़[१४]
ये दोनो मेह्‌रो-माह[१५] कहां जलवागर[१६] नहीं
इंसां की सब्रो-शुक्र से होती है जां बरी[१७]
दौरे फ़लक[१८] से गरचे किसी को मफ़र[१९] नहीं
सब्रो-शकेब[२०] दोनों हैं कौनैन[२१] के दो नैन
किस मर्दु्मे अज़ीज़ पे[२२] उनकी नज़र नहीं
इस दश्ते-ख़ारदार[२३] से ग़ैर-अज़[२४] शकेबो-शुक्र
बाग़े-इरम[२५]का और कोई राहबर नहीं
बा सब्रो-शुक्र नख्ले-तमन्नाए-मुल्तजी[२६]
किस बाग़ किस चमन में कहां बारवर नहीं[२७]

कवित्त (सवैया)

जे सुमिरैं नित रामधनी धनहेत नते नर सोच कराहीं
राम को नाम महाधन है हरिनाम धनी धनवान कहाहीं
रामधनी और स्यामधनी और नामधनी जेते जगमाहीं
यह धन सों जिनके हिय तोष तिन्हैं दुःख दोष सतावत नाहीं

१—मीठा २—भक्ति, स्तुति ३—अधिक ४—मनुष्य ५—भक्ति एवं संतोष का धन ६—चांदी-सोना ७—साथी, परिचित ८—कष्ट का समुद्र ९—विपत्तियों की गहराई १०—भय ११—आसक्त १२—अपूर्ण इच्छाओं वाला व्यक्ति १३—फल १४—सारे विश्व की व्यवस्था १५—सूर्य और चन्द्रमा १६—आलोकित १७ प्राणों की रक्षा १८—दैव की गति १९—बचाव २०—संतोष, सहनशीलता २१—लोक-परलोक २२—प्रिय व्यक्ति २३—कटीला जंगल २४—से अतिरिक्त २५—नंदन वन २६—'मुल्तजी' को आकांक्षा का वृक्ष यदि संतोष और भगवद भजन सहित है २७—तो वह क्या इस दुनिया के बाग़ में और क्या उस दुनिया के चमन में, हर जगह फल देने वाला है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोरठा

हरि पद पंकज ध्याव, रे मन और उपाव तज
हरी जगत के राव, हरी हरत दुख दीन के

दोहा

रे मन मूरख सोच तज, भज ले श्री भगवान
कुछ गुन सुन हरिहर कथा, धर धीरज दे कान

एक हरिभक्त बरहमन था सुदामा मफ़लूक[१]
हर्फ़ दौलत के वो रखता था जबीं[२] से महकूक[३]
ऐशो-इशरत[४] थी ज़माने की सब उससे मतरूक[५]
कृष्ण के ध्यान में लगती थी उसे प्यास न भूक

रात दिन कुंजे[६] क़नाअत में गुज़र करता था
ज़िंदगी ज़ुह्दो-रियाज़त[७] में बसर करता था

मुल्के अफ़लास[८] की थी उसको अज़ल[९] से शाही
सब्र दस्तूर[१०] था उसका पये-दौलत-ख्वाही[११]
मौज़ए[१२]-तन की रियाया थी ग़मो जांकाही[१३]
नफ़्स[१४] कर सकता न था जुर्मे[१५]-ख़ता[१६]-बदराही[१७]

चतर[१८] था सायए-दामाने[१९]-कन्हैया सर पर
अफ़सरे-शफ़क़तो[२०]-एहसाने[२१] कन्हैया सर पर

फ़िक्र[२२] थी उसकी ख़वासी[२३] में अलम[२४] ख़िदमतगार
फ़क्रो-फ़ाक़ा[२५] दो असादार[२६] थे फ़रमाबरदार[२७]
बोरिया[२८] मसनदो-क़ालीं थे हिमम[२९] क़स्रो[३०]-हिसार
गर्म रहता था ग़मो-दर्द का हर दम दरबार

१—दरिद्र २—ललाट ३—मिटा हुआ ४—भोग विलास ५—अप्रचलित ६—संतोष का कुंज ७—ईश्वर के ध्यान में तल्लीनता ८—दरिद्रता का देश ९—आदि १०—सिद्धांत ११—धन की चाह के लिए १२—शरीर का गांव १३—दुःख एवं प्राणों का ह्रास १४—चचल मन, इंद्रिय १५—अपराध १६—भूल १७—कुमार्ग १८—छत्र १९—कृष्ण के दामन का साया २०—स्नेह २१—आभार २२—चिंता २३—सेवा, परिचर्या २४—क्लेश २५—फ़क़ीरी, भूख २६—दंडधारी २७—आज्ञापालक २८—चटाई २९—संकल्प ३०—क़िला दुर्ग।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ख़ामुशी[१] लब पे जो थी मुहरे-सुलेमानी[२] थी
ज़ब्त[३] से बाबे-तवक्कुल[४] की निगहबानी[५] थी

मालो-आमालो ज़ेराअत थी बिज़ाअत[६] उसकी
तकियए-पुश्ते-इबादत थी क़नाअत उसकी[७]
अर्सए-सब्र में ज़ाहिर थी शुजाअत उसकी[८]
दिलो[९]-दीं करते थे हर वक़्त इताअत उसकी[१०]

ज़रो-दीनार[११] थे दाग़ों के मुहैय्या दिल में
मायए-[१२]जां थी फ़क़त हुब्बे-[१३] कन्हैया दिल में

ख़िरका-[१४]बर दोश न तनज़ेब न कमख़ाब[१५]से काम
कमली रहती थी दुशाले की तरह सर पे मुदाम[१६]
इल्म था उसकी अमलदारी[१७] में और हिल्म[१८] ग़ुलाम
दीनो-ईमां से तनो-जां का था अंज़ाम महाम[१९]

तख़्तगह[२०] उसके लिए साहते-वीराना[२१] था
झोपड़ा लखलख़ए-[२२]ज़ुह्द से ख़सख़ाना था

ख़ेमा[२३] उस शह के लिए दश्त[२४] में था नख़्ले[२५]पलास
सुब्ह और शाम किया करता था उसमें इजलास[२६]
दिल में वसवास[२७]न रखता था न कुछ ख़ौफ़ो-हेरास[२८]
था सरो बर्गे-तवक्कुल[२९] कि बसद शुक्रोसिपास[३०]

भूक लगती थी तो जंगल की हवा खाता था
प्यास में अपने सरश्क[३१] आप ही पी जाता था

१—चुप्पी, मौन २—एक महामान्य शासक पैगम्बर जिनका तख्त वायुमंडल में उड़ता था; उनका राज्य विशाल था यहां सुदामा के मौन धारण करने को हज़रत सुलेमान की मुहर से उपमा दी गयी है उनके ओठों का बंद रहना मानो हज़रत सुलेमान की मुहर लग गई ३—सहनशीलता ४--ईश्वराधीनता का द्वार ५—रक्षा ६—पूंजी ७—उनकी आराधना की पीठ का तकिया, संतोष था ८—संतोष के दंगल में उसकी वीरता प्रकट थी ९—हृदय और धर्म १०—आदेश का पालन ११—स्वर्ण और मुद्रा १२—प्राणों की पूंजी १३—कृष्ण के प्रति प्रेमभाव १४—कांधे पर गुदड़ी डाले हुए १५—स्वर्ण तारों से बना हुआ रेशमी कपड़ा १६—सदैव १७—शासन १८—विनय, नम्रता १९—शरीर एवं प्राण में दीन और ईमान (धर्म और विश्वास) की महान पराकाष्ठा थी २०—सिंहासन का स्थान २१—निर्जन-प्रांगण २२—आध्यात्म की सुगंध २३—तम्बू २४—वन २५—पलाश का वृक्ष २६—दरबार लगाना २७—भ्रम २८—भय २९—ईश्वराधीनता या ईश्वर भक्ति का ध्यान ३० सैकड़ों भक्ति भावनाओं एवं स्तुतियों के साथ ३१—आंसू।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ज़फ क़िस्मत[1] को समझता था वो बरतन ख़ाली
ख़्वान[2] था सामने उसके कमल आसन[3] ख़ाली
था न उरियानी[4] के जामे[5] से कभी तन ख़ाली
तौक़े-एहसाने[6] कन्हैया से न गरदन ख़ाली

शोरबख़्ती[7] से मुताबिक़[8] था नमकदां उसका
देग़दां[9] जल के हुआ था दिले-सोज़ां[10] उसका

नफ़्से-कमज़र्फ़[11] की उससे न कभी दाल गली
अ सिया[12] नाम से गर्दिश[13] के न गिर्द[14] उसके चली
सोज़[15] के नाम से लकड़ी भी न चूल्हे में जली
दूद[16] होकर न कभी आह भी दिल से निकली

अह्द[17] में उसके जो दाना था वह सुमिरन में रहा
रंगे-गंदुम[18] को जगह हुस्न के ख़िरमन[19] में रहा

यूं ही औक़ात[20] सुदामा के बसर होते थे
वज्द[21] में आ कभी हंसते थे कभो रोते थे
मज़रए[22] दिल में सदा तुख़्मे-[23]अमल बोते थे
चश्म[24] नम रखते थे और दाग़े[25] ज़िगर धोते थे

घर में हमख़्वाबए[26] दुजराज जो मासूमा[27] थी
वह भी इस चर्ख़े[28] जफ़ाकार की मज़लूमा[29] थी

ग़ज़ल

जहाँ में हर बशर से रुतबए[30] दुजदेव आली था,
मगर क़ब्ज़े में उसके भी महाले[31] इन्तक़ाली था

१—भाग्य का पात्र २—थाली ३—पुरइन ४—नग्नता ५—कपड़ा अर्थात् नग्नता ही उनका वस्त्र थी ६—कृष्ण की कृतज्ञता का कंठहार ७—उसका नमकदान दुर्भाग्य के लवण से भरा हुआ था ६—चूल्हा १०—दग्ध हृदय ११—दुर्बल-इन्द्रिय १२—चक्की १—समय-चक्र १४—आस पास १५ ज्वाला, जलन १६—धुंआ १७—शासम काल १८—उसके शासन काल में दाने के नाम पर केवल भजन की माला के दाने रह गये थे और गेहूँ का रंग सुन्दरता के खलिहान में रह गया था २०—समय २१—आत्मविभोरता २२—हृदय की खेती २३—आकांक्षा का बीज २४—तरल नेत्र २५—हृदय के धब्बे २६—साथ सोने वाली २७—अकलुष २८—अत्याचारी दैव २६—पीड़ित ३०—महानता ३१—मारक विपत्तियाँ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ज़ने-मिसकीं बतंग आयी थी यां तक अपने जामे से,[१]
कि मलबूसे बदन ज्यूं शमए[२] फानूसे खयाली था
सदफ़[३] गौहर[४] उगलती है मगर इस बहरे[५] हस्ती में
बरंगे-प-जए[६] मरजां उसी का हाथ खालो था
दिले-बेताब जाये[७] ताबो[८] थाली की जगह घर में
फ़क़त इक कासये[९] सर या तो इक जामे-सिफ़ाली[१०] था
कढ़ाई के लिए यां तक कराही थी कि सीने में
दिले-बिरियां[११] जिसे कहते हैं दाग़े-ख़स्ता[१२] हाली था
कभी किश्ते-अमल[१३] को उसकी अम्बोहे-[१४]तरद्दुद से
न था कुछ ख़तरए नुक़्सां[१५] न ख़ौफे पायमाली[१६] था
कहूं औसाफ़[१७] क्या उनके ज़बां पर 'मुल्तजी' जिनके
हरी जदु नाथ जदुनन्दन यही इस्मे-जलाली[१८] था

कवित्त

प्रेम प्रन धारी एक प्रीत रीत वारी एक प्रेमप्रीति
सांची राजे स्वामी और स्वामिनी
रहने धाम दाम के सोभक्त राम नाम के
सोचितै जितै काम के मुदाम कंत कामिनी
श्याम के सनेही प्यारे भाव भगत देह धारे
श्याम ही के नेह में गुजारे दिन जामिनी
श्याम गुन गाय ये सहाय भये गुरसहाय
श्याम को सुदामा और सुदामा को सुदामिनी

१-२—वह अकिंचन स्त्री अपने जामे से तंग आ गयी थी अर्थात् वस्त्रों के अभाव से पीड़ित थी उसके शरीर का वस्त्र काल्पनिक फानूस के दीपक सा था ३—सीपी ४ मोती ५—जीवन का सागर ६—मूंगे के पंजे के समान।

७—स्थान ८— तवा ९—खप्पर १०— मिट्टी का प्याला ११— भुना हुआ हृदय १२—निर्धनता का दाग़ १३—आकांचा की खेती १४— चिंता की भीड़ १५—हानि का ख़तरा १६— विनाश का भय १७—गुण १८ —इस्लाम धर्मानुसार अल्लाह त आला के नाम दो प्रकार के हैं प्रथम इस्मे जमाली वह नाम, जो ईश्वर के वाह्य सौन्दर्य का परिचय दें, द्वितीय इस्मे जलाली वह नाम, जो ईश्वर के अन्त: सौन्दर्य का परिचय दें

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोरठा

दम्पत गुन के धाम, विप्र पुरुख अरु वाम दोउ
सुमिरत जिन को नाम, दुखिया सुख संपत लहत

अर्ज़ करना सुशोला का सुदामा से हाल बेसरो सामानो का

दोहा

पिय जलधर तिय चातकी, स्वाती धन सों काम
याही आस-पियास में, रहतो द्विज की बाम

एक दिन उसने कहा ऐ शहे बे बर्गो नवा[2]
घर में लोटा है, न थाली न पतीली न तवा
आपके होते यह तकलीफ नहीं मुझको रवा[3]
इस मरज़ की नहीं क्या आपकी हिकमत[4] में दवा

फ़िक्रो[5] फ़ाक़े से तो मुहलक[6] कोई आज़ार[7] नहीं
पर ये हैरत है कि तुमको ख़लिशे ख़ार[8] नहीं

गो बरहमन के लिए बर्गे-तवक्कुल[9] है मआश[10]
जो कि आटे के सिवा करते नहीं ज़र की तलाश
ख़ानादारों[11] के लिए पर नहीं ज़ेबा[12] ये क़िमाश[13]
ज़नो बच्चों की मुसीबत का ज़बूं[14] है पादाश[15]

जो ख़िरदमंद[16] हैं, और इल्मो हुनर रखते हैं
ज़ुहद करते हैं, मगर घर की ख़बर रखते हैं

१—पूंजी रहित होने की अवस्था।

२—अभावों का सम्राट ३—उचित ४—चिकित्सा ५—अभाव और उपवास ६—घातक ७—विपत्ति ८—कांटे की चुभन ९—ईश्वराधीनता १०—जीविका ११—गृहस्थ १२—शोभन १३—प्रणाली, पद्धति १४—बुरा १५—प्रतिफल १६—बुद्धिमान

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तुम तो सहराये[1] क़नाअत के हुए गोशागज़ीं[2]
मैं हूँ ख़िदमत के लिए आपकी इक पर्दानशीं
दुःख कहां तक ये ज़माने के सहे जाने हज़ीं[3]
हैफ़ सद हैफ़[4] फ़लक दूर है और सख़्त ज़मीं

क्या गिला कीजिए इस बेसरो सामानी का
अपनी कमबख़्ती का और आपकी नादानी का

पैरहन तन पे नहीं जिल्दे-बदन बाक़ी है
अब पसे[5]-मर्ग तमन्नाए-कफ़न बाक़ी है
देख लो पास मेरे कौन साध न बाक़ी है
दुरेदन्दां[6] हैं कि ये दुर्जे[7] दहन बाक़ी है

हो गये पर्दये[8] नामूस के टुकड़े-टुकड़े
कब तलक शर्मोहया रक्खूं मैं सुकड़े-सुकड़े

चूनरी है न दुपट्टा है न सारी सर पर
झूठा सच्चा कोई गोटा न कनारी सर पर
बाल उलझे हुए बरसों से हैं भारी सर पर
कंघी करती हूँ तो हो जाती है आरी सर पर

मर्द के होते जो औरत का न सिंगार बना
क्या बना कुछ न बना ख़ाक बनी ख़ार बना

कौड़ी-पैसे का ये तोड़ा है कि थैली भी नहीं
उजली पोशाक पे क्या मैल हो मैली भी नहीं
थाल थाली की कहे कौन कठैली भी नहीं
ख़ैरियत है कि अभी बात ये फैली भी नहीं

कहीं ऐसा न हो पंडित की समझ के यारी
कोई आ जाये तो दुश्वार हो मेहमांदारी

१—संतोष का वन १२—कोना ग्रहण करने वाला, एकान्तवासी
३—विपन्न-प्राण ४—बड़ी वेदना का विषय है
५—मृत्यु के उपरांत ६—दांतों के मोती ७—मुख की थैली
८—सम्मान का पर्दा आशय, धोती या साड़ी से हो सकता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आफ़रीं[1] आपकी इस मिल्लतो-यकताई[2] पर
आफ़री आपकी इस ताबो-तवानाई[3] पर
आफ़रीं आपकी इस फ़ितरतो[4]दानाई पर
आफरीं आपकी इस सब्रो-शकेबाई[5] पर

दीन की याद में दुनिया की ख़बर भूल गये
पांव बाहर कभी निकले नहीं घर भूल गये

क्या कहूँ दिल पे जो ये सदमये [6]हैरानी है
क्या कहूं जां पे जो ये ख़दशए[7] जिस्मानी है
क्या कहूं तन पे जो ये जामए[8]उरियानी है
क्या कहूं सर पे जो ये बारे[9] परेशानी है

क्या कहूँ अब तो जो कुछ मुझपे गुज़रती है सजन
दिले मन दानदो मन दानमो दानद दिले मन[10]

ग़ज़ल

ज़मीं के पोसने को चाल है चर्खे सितमगर[11] की
कभी इसके सिवा चलतो न देखी आसिया[12] घर की

तिही[13] रहता नहीं गौहर से दम भर दामने[14]हसरत
सख़ावत[15] आजकल है ये हमारे दीदए-तर की

गले में तौक़[16]बेबर्गी से बे ग़म हूं मगर तो भी
रटाता है मुझे कू कू वह क़ुमरी हूं सनोबर[17] की

१—धन्य २—सिद्धांत एवं निरालापन ३—क्षमता एवं सामर्थ्य ४—स्वभाव एवं ज्ञान ५—संतोष एवं सहनशीलता ६—आश्चर्य का क्लेश ७—शारीरिक भय ८-९—नग्नता का वस्त्र १०—चिंता का बोझ ११—मेरा हृदय जानता है, मैं जानता हूँ या मेरा हृदय ही जानता है।

१२—अत्याचारी आकाश १३ चक्की अर्थात घर में अनाज के अभाव में घर को चक्की तो कभी चलती नहीं थी हां, १४—घर में देव (आकाश) के अत्याचारों की चक्की जरूर चलती है १५—कामना का अंचल १६—दानशीलता १७—अभावों का हार मेरे गले में थ अतः निश्चित हूँ किन्तु फिर भी न जाने किसलिए मुझे सनोबर (चीड़) की क़ुमरी की तरह कू कू (कामना करना) कराता रहता है

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

न ज़िक्रे-बे-परो[१] वाली न फ़िक्रे-फारिग़ुल बाली[२]
ये बुलबुल क्या कहे अपनी उड़ाए किससे बेपर की[३]

किसी का हुस्ने बे ज़ेवर[४] तो हमको हमसरी[५] से क्या
यहां है नाक में दम बातें सुनते सुनते बेसर की

निगाहे[६] लुत्फ से हो जिसके बे ग़म उम्र भर सोना
रवा[७] है कीजिए ख़िदमत जो ऐसे की मियागर[८] की

ग़मे दौरां[९] से क्या है ग़म अगर ज़ेरे-फ़लक[१०] हरदम
बसी है 'मुल्तजी' के दिल में सूरत श्याम सुंदर की

कवित्त (सवैया)

पिय जानत हौ तिय के हित की पट भूखन भोग नितै नित छइये
बाखर सून भंडार न चून कहौ दुःख दून कहाँ लग सहिये
सील सकोच में प्रान उतै इत सोच गलानि के पावक दहिये
जो द्विज चन्द्र के तार चकोर अंगार भखै तो कहा कहिये

सोरठा

सुख संपत के हेत, कोटिन करत उपाव नर
पिय तुम निपट अचेत, वुधि, विद्या बल वारिनिधि

१—साधन की वार्ता २—निश्चिंतता की चिंता ३—बे पर की उड़ाना स्वाभाविक सौन्दर्य ४—बराबरी ५—दया दृष्टि ६—उचित ७—ऐसा व्यक्ति झूठी बात बनाना ८—अकृत्रिम जो तांबे को सोना बना दे ९—ज़माने की पीड़ा १०—आकाश के नीचे।

———

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुशीला का मजबूर करना सुदामा को जाने पर और बयान करना औसाफ श्रीकृष्णचन्द्र के

दोहा

विश्व विदित्त हरि विमल जस, नित नूतन सुनि कान
पत्ति सम्मुख कर जोरि कै, बोली नारि सुजान

मैं ये सुनती हूं कि हैं कृष्ण कन्हैया दानी
कोई दाता नहीं कौनैन[1] में उनके सानी[2]
वह महाराज महालक्ष्मि हैं उनकी रानी
उनसे और आप से है राब्तए[3] रूहानी

ऐसे ग़मख़्वार तुम्हारे वो तुम ऐसे कंगाल
क्यों न हैरत हो भला औरों को और मुझको मलाल

वेद कहते हैं कि निर्धन के धन हैं गिरधारी
सच्चिदानन्द सगुन ब्रह्म हैं मंगलकारी
चश्मए[4] फैज़ दो आलम में है उनका जारी
सब्ज़ रहती है सख़ावत की सदा फुलवारी

कोई इस बाग़ से महरूम नहीं आता है
फूल लेने कोई जाता है तो फल पाता है

[5]कृष्न के नाम से है काफे करामत पैदा
कृष्न के नाम से है राये रियायत पैदा

१—लोक परलोक २ बराबर ३—आत्मिक प्रेम ४—उदारता का स्रोत
५—फारसी लिपि में कृष्ण शब्द के चारों अक्षरों में से प्रयेत्क का अर्थ कवि ने अपनी कल्पना के अनुसार प्रकट किया है यहाँ काफ से कृष्ण को करामत अर्थात् चमत्कार, र से रियायत अर्थात् कृष्ण की कृपा, शीन से उनकी शराफत अर्थात् उनकी सज्जनता तथा नून से नजाबत अर्थात् बड़प्पन या महिमा की व्याख्या की है

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कृष्न के नाम से है शीने शराफ़त पैदा
कृष्न के नाम से है नूने नजाबत पैदा

कृष्न के नाम की कहते हैं सभी है संत कथा
यह कथा उनकी पुरानी है कि है दंतकथा[१]

आप अक्सर यही कहते थे कि हैं श्याम नईम[२]
एक उस्ताद के हम दोनों हैं शागिर्द क़दीम[३]
क्यूं नहीं रखते हो फिर उनसे तमन्नाए अज़ीम[४]
यह न समझो कि हमारी सी है उनकी भी गलीम[५]

उनकी कमली पे फ़िदा कीजिए नेमाए-दो कौन[६]
आपकी कमली की क़ीमत तो है इक पाव न पौन

कृष्ण भगवान् मुजस्सिम[७] हैं सरापायमे[८] नूर
नाम जदुनन्दनो जदुनाथ है उनका मशहूर
सिफ़ते-फैज़[९] अयां[१०] है कि ब अल्ताफे-वफूर[११]
दूरो नज़दीक खबर लेते हैं भक्तों की ज़रूर

आप यह हाले ज़बूं[१२] उनको जो दिखलायेंगे
जल्द ऐय्याम मुसीबत के पलट जायेंगे

ग़ज़ल

जहां तक इस जहां में बेनवा[१३] मुफ़लिस बिचारे हैं
हरी ग़मख़्वार हैं सबके हरी सबके सहारे हैं

जो हूं मैं तश्नालब रंगे-तअब[१४] का दिल जले तो क्या
उन्हें भी प्यास लगती है जो दरिया के कनारे हैं

फ़लक-रफ़अत[१५] ज़मीं पर कौन जो उसका नहीं सायल[१६]
बड़े हैं कोहो सहरा[१७] भी मगर दामन पसारे हैं

१—जनश्रुति २—महान् ३—प्राचीन ४—महान् आकांक्षा ५—कमली ६—दोनों संसार की ऋद्धियां ७—सागर ८—ज्योति के समुद्र ९—उदारता का गुण १०—प्रकट ११—अधिकाधिक १ —बुरा १३—दरिद्र १४—कष्ट का रंग १५—आकाश जैसी ऊंचाई वाला १६—याचक १७—पर्वत तथा वन।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जहां में दूरबीं[1] आंखें हैं मेहर[2] और क़हर[3] उसके की
ये दुख सुख जिस क़दर इंसा पे है उसके इशारे हैं

फ़रोग़[4] उसने दिया जिन२ को हर आला[5] व असफल[6] में
कोई खुर्शीद के ज़र्रे कोई गर्दूं[7] के तारे हैं

अगर हम 'मुल्तजी' हैं ऐब क्या है वां के जाने में
कन्हैया जी हमारे हर तरह से प्रान प्यारे हैं

कवित्त

जाइए न और द्वार दौर दौर बार बार
श्याम हैं बड़े उदार द्वारका सिधाइये
धाइये न देस देस गाइए रमा रमेश
ध्याइये ब्रजेश तो धनेश[8] कोष पाइये
पाइये विपद् घनेह श्याम सों जो नाहीं नेह
श्याम की बनाई देह श्याम को बलाइये
लाइए मनाइ श्याम अर्थ धर्म मोक्ष काम
काहू भांति श्याम धाम विप्र छिप्र जाइये

१-२-३—संसार में भगवान की दूर देखने वाली आंखें दो हैं एक मेहर अर्थात् कृपा, द्वितीय क़हर अर्थात् क्रोध ४—प्रकाश ५—सर्वोच्च ६—निम्नतम ७—आकाश ८—कुबेर ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोरठा

जन हितकारी श्याम, गौनौ तिनके धाम पिय
एक पंथ दोऊ काम, मित्र मिलै धन पाइए

जबाब देना सुदामा का सुशीला के सवालों का

दोहा

प्रान नाथ या जगत में, स्वारथ मीत अपार
यार बने यारी करे, सोई सांचो यार

सुनके यह बात सुदामा ने दिया उसको जवाब
किसलिए आहो बुका[१] करती है ऐ ख़ाना ख़राब[२]
मुफ़्त इल्ज़ाम न ले सर पे न रख बारे-अज़ाब[३]
काटने में हैं हमें कोहे-सऊब्रत[४] के सवाब[५]

बहरे-याकूत[६] बसर करते हैं ख़ारा शिकनी[७]
जाने-शीरीं के लिए ऐब नही कोहकनी[८]

देख तू क़ाफ़े[९] कनाअत में हैं क्या क्या जौहर
संगरेज़ा[१०] है उसी क़ाफ़ का पारस पत्थर
मादने-हिल्म[११] है यह क़ाफ़ तुझे क्या हैं खबर
मैंने इस क़ाफ़े क़नाअत पे किया जब से गुज़र

१—रोना-चिल्लाना २—बरबाद, प्रभावग्रस्त ३—किये हुए पाप का दंड ४—कठिनाई का पहाड़ ५—नेकी का फल ६—याकूत की प्राप्ति के लिए-याकूत विशेष प्रकार का मणि होता है; जो चार रंगों का होता है; लाल, पीला, नीला. श्वेत ७—पत्थर तोड़ना ८—पहाड़ खोदना ९—क़नाअत शब्द में जो क़ाफ़ है १०—कंकड़ ११—विनम्रता की खान

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कान हैं कानो-दहानो दिलो जां हर सह कान[१]
लाल हर कान में है जलवादेहे कौनो मकान[२]

ये है वो लाल दिलो-जां में है जिसकी रौनक़
इस रियाज़त[३] की शबिस्तां[४] में है जिसकी रौनक़
हर तरफ कोहो-बियाबां में है जिसकी रौनक़
औ मेरे कल्बए[५] अहज़ां में है जिसकी रौनक़

पाके ये लाले कन्हैया मुझे क्या माल से काम
दीनो दुनिया का मेरे होगा इसी लाल से काम

तुझको है रग़बते[६] ज़र मुझको नहीं इसकी हवस
तुझको है मैले गुहर[७] मुझको नहीं इसकी हवस
तुझको दरकार है घर मुझको नहीं इसकी हवस
तुझको राहत पे नज़र मुझको नहीं इसकी हवस

मैं किसी रख्ते-[८] मसर्रत से नहीं हूं नाकाम
मिल गया है मुझे जिस रोज़ से हीरा हरिनाम

ये वो हीरा है कि दिन रात दुरख़्शाँ[९], है ये
दुर्रतुत्ताज[१०]-शहे[११]किश्वरे इरफाँ है ये
ज़ीनते नूर तने साअदे ईमाँ है ये[१२]
क़श्कए - नासियए - माहे जबीनाँ है ये[१३]

छोड़कर उसको पड़ी हिर्सो[१४]-हवा के पाले
कुछ भी ग़ैरत[१५]हो जो तुझको तो ये हीरा खा ले

१-२—अर्थात्, कान, मुंह, दिल, प्राण जीव एवं वनस्पति और पहाड़ आदि सभी खाने हैं और सब खानों में लाल हैं और हर खान का लाल समस्त विश्व में शोभादायक है ३—उपासना ४—वह स्थान जहाँ रात में पूजा की जाय ५—कष्टों की छोटी कोठरी। ६—धनाशक्ति ७—मोती की ओर झुकाव (प्रवृत्ति) ८—आनंद की सामग्री ९—जाज्वल्यमान १०—मुकुटमणि ११—ब्रह्मज्ञान, अध्यात्म के राज्य का सम्राट १२—विश्वास के ज्योतिर्मय शरीर की भुजा की यह शोभा है १३—चन्द्रोपम ललाट का यह तिलक है १४—लोभ और लालच १५—लज्जा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

फ़िक्र में उम्रे गरां माया[१] तू क्यों खोती है
इस क़दर ज़र के लिए ज़ार[२] तू क्यों होती है
ग़ौर कर देख तू हरिनाम भी क्या मोती है
इसका दुख कुछ भी नहीं सुख के लिए रोती है

सूदमंदे तू न ईं आहो-फ़ुग़ां ख़्वाहद बूद[३]
आंचे बर लौह नविश्तस्त हमा ख़्वाहद बूद[४]

क्यूं बलंदी को लपकती है तू इस पस्ती में
नेस्ती का[५] तुझं क्या ख़ौफ़ नहीं हस्ती[६] में
हर जगह राम है आराम है हर बस्ती में
मुज़तरिब[७] मत हो कि ऐय्यामे तिही दस्ती में

हर कि दर बंदे अलम सब्रो क़रारे बकुनद[८]
मर्दे अज़ ग़ैब बरूं आयदो कारे बकुनद[१०]

बावली चाह में दीनार के मरना बेहतर
आबरू खो के नहीं आब का भरना बेहतर
सर पे मिन्नत[११] का[१२] सबूचा नहीं धरना बेहतर
ऐशे-दुनिया[१३] के लिए ग़म नहीं करना, बेहतर

दिल क़वीदार गरत सख़्त परीशां हालस्त[१४]
नीयते-ख़ैर बगरदां कि मुबारक फ़ालस्त[१५]

लोग मुफ़लिस को तो नाचीज़ समझते हैं मगर
फ़ायदा कुछ भी नहीं इसमें सरासर है ज़रर[१६]
तुझको लाज़िम है बहरहाल कि ऐ ख़स्ता जिगर[१७]
ख़ाकसाराने[१८] जहां रा बहिक़ारत मनिगर

१—बहुमूल्य २—फूट फूट कर रोना ३—तेरा यह दुःख कातर होकर चिल्लाना तेरे लिए किसी प्रकार भी लाभप्रद न होगा ४—जो कुछ भाग्य-पट्टिका में लिखा हुआ है वही सब होगा ५—नाश ६—अस्तित्व ७—व्यग्र ८—अभावों का काल ९—प्रत्येक वह व्यक्ति जो कष्टों की कारा में धैर्य एवं शांति धारण करता है १०—तो कोई देवदूत बाहर आकर कार्य सिद्धि करता है (करेगा)। ११—याचना २—छोटा घड़ा १३—सांसारिक विलास १४—यदि तेरी स्थिति अत्यंत कठोर एवं शोचनीय है तो अपने हृदय को दृढ़ रख १५—यदि तेरा अभिप्रेत (नीयत) अच्छा है तो यह शुभ लक्षण है १६—हानि १७—भग्न हृदय १८—इस विश्व के अकिंचन जनों को घृणा की दृष्टि से न देख

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तू चे दानी कि दरीं गर्द-सवारे बाशद[१]
या कि अज़ अब्रे गुहरबार गुबारे बाशद[२]

सब्रकुन, सब्रोमिअंदाज़ दरीं जुहद खलल[३]
सब्रकुन सब्र कि बीनी रूखे माशूक़े अमल[४]
सब्रकुन, ताकि शवद, उक़दए-दुश्वार तू हल[५]
सब्रकुन सब्र कि अज़ हुक्मे कन्हैया ज़ अज़ल[६]

दर जहां काम रवाए-मनो तू बिसयारन्द[७]
अब्रो-बादो महो खुर्शीदो फ़लक दरकारन्द[८]

ग़ाफ़िल[९] इस दौलते-दुनिया के लिए हाथ न मल
यह छलावा है ख़बरदार कहीं जाय न छल
लौ तेरी इस पे लगी हो तो न इस आग में जल
मैं ये डरता हूँ कि आ जाये जो सैय्यादे-अजल[१०]

तायरे[११]जां को तेरे हिर्से-दिरम[१२] दाम[१३] न हो
वह न कर काम कि उक़बा[१४] का भी कुछ काम न हो

यह रमा[१५] राम की है ग़ैर की यह राम[१६] नहीं
दाम औरों को है यह इसके लिए दाम नहीं
राम की माया है ये मायए[१७] आराम नहीं
राम से काम है इससे हमें कुछ काम नहीं

राम को शर्म है इस सब्रो-शकेबाई की
हम नहीं रखते हैं परवा किसी हरजाई[१८] की

१—तू क्या जाने कि इसी धूल के बीच कोई अश्वारोही हो सकता है २—अथवा मोती बरसाने वाले बादलों का मटमैला रूप ही धूल सा प्रतीत होता है ३—इस उपासना के विघ्न में तू धैर्य से काम ले ४—और इस लिए धैर्य से काम ले किन्तु अपने अभीष्ट के मुख का दर्शन कर सके ५—तू धैर्य धारण कर जिससे तेरी कठोर समस्या का समाधान हो जाये ६—और इसलिए भी तू धैर्य धारण कर क्योंकि आदि से ही भगवान् कृष्ण का यह आदेश है ७—मेरे और तेरे कार्य की सिद्धि के लिए अनेक हैं। ८—जैसे बादल, पवन, चन्द्रमा, सूर्य आदि कार्यरत हैं ९—हे प्रमादी ! १०—मौत का शिकारी अर्थात यमराज ११—प्राणपक्षी १२—धन का लोभ १३—जाल १४—परलोक १५—लक्ष्मी १६—फारसी भाषा में 'राम' का अर्थ आदेशपालक या दास होता है १७—सुख की पूंजी १८—चंचल।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग़ज़ल

आहन[1] है गर ये बख़्ते-सियह[2] कुछ अलम[3] नहीं
संगे-दरे-निगार[4] भी पारस से कम नहीं
गरदूँ सितम हज़ार करे कुछ सितम नहीं
नक़्शे[5] ज़मीं वह कौन है जो कल्अदम[6] नहीं
दिलबर है दिलबरी पे तो बेदिल हों किस लिए
है यार ग़मगुसार[7] तो कुछ हमको ग़म नहीं
जो आश्ना है उसका नहीं कोई तश्नाकाम[8]
जारी कहां पे यार का बहरे करम[9] नहीं
रहता है दिल में दिल के वह सब जानता है राज़
वाकिफ़[10] अगरचे तर्ज़े मुहब्बत से हम नहीं
औसाफे खुल्क़ो[11] शफ़क़तो[12] एहसान कान्ह के
किस बेद किस पुरान में क्या क्या रक़म नहीं
सद शुक्र 'मुल्तजी' कि बजुज़-आस्ताने[13] श्याम
अपना सरे नियाज़[14] कहीं और ख़म[15] नहीं

कवित्त

सीप-सिंधु-बासी औ प्यासी स्वाति सीकर की खारी
जल रासी ताहि नेकहू न भावती
जीवन धन घन गंभीर ताहू को रंच नीर
तासूँ कर प्रीत रीति मुक्ता उपचावती

१—लोहा २—काला-भाग्य ३—दुःख ४—प्रिय (भगवान कृष्ण) के द्वार का पत्थर ५-६—भूमि का ऐसा कौन सा अंग है जो नाशवान (कलअदम) न हो ७—कष्ट निवारक ८—प्यासा ६—कृपा का समुद्र १०—परिचित ११—सद्व्यवहार १२—स्नेह १३—श्याम की चौखट के अतिरिक्त १४—विनम्रता का सिर १५—झुका हुआ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धीरज धर गुरु सहाय दाता सुभ सुफल काम
धीरज धर सुमति बाम अतुलित सुख पावती
जो कुछ विधि लिखी भाल होइहि सोइ अबुध
बाल क्यों नहि तज भरम जाल हरि के गुनगावती

सोरठा

तिय तू निपट अयान, स्वयं सकोची पोच मित
काकी विपत नसान, मांगे धन सुन बावरी

———

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुदामा का मांगने की बुराई बयान करना सुशीला से

दोहा

जाचकता को हीनपद, को जाने यह भेव
जग में पूजा मांग के, अमर कहाते देव

बलि से भगवान तलबगार ज़मीं के होकर
खुद-बखुद ओछे हुए पायए-वहदत[1] खोकर
दर-बदर[2] खाते हैं दिन रात गदागर[3] ठोकर
बूझ तू किसने कहां पाई है रोकड़ रोकर

क़द्र रहती नहीं इंसां की तलबगारी[4] में
डालती है तू मुझे किस लिए इस ख्वारी[5] में

मांगना खूब नहीं जान मेरा कहना मान
क्यूं बनी जाती है नादान मेरा कहना मान
इससे घट जाती है सब शान मेरा कहना मान
इससे राज़ी नहीं भगवान मेरा कहना मान

मांग है सर पे तेरे मांग तू क्या देती है
मांग छूटे हुए बालों को बंधा देती है

१—केवल एक ब्रह्म होने की प्रतिष्ठा २—द्वार द्वार ३—भिखारी ४—याचना ५—अपमान, तिरस्कार।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मांगने से कोई बदतर नहीं दुनिया में तरीक़[१]
मांगने वाले हैं सब जूए[२]मलामत के गरीक़[३]
आश्ना[४] उनका नहीं कोई है मुशफ़िक न शफ़ीक
देने वाले भी जहां में हैं बहुत कम तौफ़ीक़

किस से क्या मांगिए मुहताज हैं सब कौड़ी के
हम भी इन फेलों से हो जायंगे अब कौड़ी के

जो तिही चश्म[४] है नियामत से तराज़ू की तरह
चश्मे[५]मदु'म से वह गिर जाते हैं आंसू की तरह
दौ[६] लगी रहती है दौलत को भी आहू[७] की तरह
यह तो मुट्ठी से निकल जाती है बालू की तरह

बावलो इसकी तू यूं चाह न कर जाने दे
हिर्से-ग़म[८] खाके जो मर जाय तो मर जाने दे

अह्ले-दुनिया में बता कौन है खुसंन्द[९] यहां
शमा सां[१०] आशिक़ो-माशूक़ हैं पाबंद यहां
नाचते रहते है वे अक़्लो-खिरदमंद[११] यहां
ये वो है बज़्मे-तग़ाफ़ुल[१२] कि दमे[१३] चंद यहां

मए[१४]इशरत से कोई जाम जो भर लेता है
आसमां उसका वही कासए[१५]सर लेता है

सख़्त हैरत है कि है कौन जहां में ऐसा
मिल गया उसको वही जिसने कि चाहा जैसा
अह्ले दौलत का क़नाअत में भरोसा कैसा
कोई कौड़ी की जगह पर नहीं देता पैसा

अब्र को देख के जब सीप ने मुंह फैलाया
एक क़तरे के सिवा कुछ न दहन में आया

१—ढंग २—भर्त्सना की नहर ३—डूबे हुए ४—बेमुरव्वत ५—जनसामान्य की दृष्टि ६—दावाग्नि ७—हरिण ८—लोभ का कष्ट ९—सुखी १०—दीपक की भांति ११—बुद्धिहीन और बुद्धिमान १२—प्रमाद की गोष्ठी १३—कुछ क्षण १४—विलास की मदिरा १५—उर्दू कविता में कासए सर को जामे-शराब से उपमा दी जाती है

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अर्श[1] से ता ब सरा[2] रख़्ते नेअम[3] जो कुछ है
सीमो-ज़र लालोगुहर दामो दिरम जो कुछ है
मख़्ज़ने[4] सरवते-कालाए-हशम जो कुछ है
मायये-इशरतो सामाने करम जो कुछ है

बावली सब ये अमानत में है धन काले का
हाथ डालेगी तो हाथ आयगा फन काले का

ग़ज़ल

किसी को धन से है मतलब, किसी को धाम से मतलब
दिले-नाकाम को है अपने श्यामा श्याम से मतलब

गदा क्यूं अपना कासा[5] साग़रे जम के लिए तोड़े
दो आलम का जो होता है फ़क़त इक जाम से मतलब

अलिफ़[6] तो इस्तराहत पर है आसारे[7] अबद लेकिन
जो आये राम ही पर हर्फ़ क्या आराम से मतलब

कोई बाकाम हैं यां और कोई नाकाम है ग़ाफ़िल
तभी तक है ये नाता इसका जब तक काम से मतलब

जो उसके ख़ास बन्दे हैं फ़ज़ीलत[8] आम है उनको
वो कब रखते हैं इस दुनिया में ख़ासोआम से मतलब

निगाहे-लुत्फ सुबहो शाम बख़्शिश की नज़र दायम[9]
गदाधर के गदा[10] को है इसी इनआम से मतलब

उगा है 'मुल्तजी' दिल में अगर तुख़्मे-अमल अपना
कभी तो होगा अब्रे-रहमते-घनश्याम से मतलब

१—आकाश का सबसे ऊपरी भाग २—रसातल ३—विलासिता की सामग्री ४—वैभव की प्रचुर सामग्री का कोष ५—किंवदन्ती है कि ईसा से पूर्व जमशेद नामक शासक के पास एक प्याला था, जिसमें वह विश्व में घटित होने वाली सारी घटनाओं को देख लिया करता था ६—उर्दू वर्णमाला का पहला अक्षर ७—आदि-चिन्ह ८—कृपा श्रेष्ठता ९—सदैव १०—भिखारी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कवित्त

मांग न वित्त अनित्त प्रिया धन पाय सुचित्त है को नर-नारी
हाटक नैन मदोदरी रावन भइ गति जौंन कहैं श्रुति चारी
मांग न मांग न मांग तिया धन को करिहै धन की रखवारी
मांगन को रुचि जो है तो मांग रमापति प्रेम पदारथ प्यारी

सोरठा

ध्रुव अविचल धन पाय, बैठे व्योम अभंग ह्वै
को विष मांगन जाय, प्रेम सजीवन मूर तजि

———

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुशीला का बरअक्स बयान करना मांगने को बाबत सुदामा से

दोहा

गुरुसहाय या जगत में, नर सरीर जो लेय
प्रेम रतन हरिभक्ति-धन, ताहि विधाता देय

ऐसे बादीनों-यक़ीं सुन के सुदामा के सुख़न
बोली औरत कि तुम्हारा तो निराला है परन
वो श्रीकृष्न महाराज हैं दुःख दर्द हरन
मुनि मनुज देव दनुज करते हैं सब जिनका भजन

उनसे दुःख अपना कहो जाके तो कुछ दोष नहीं
उनसा कोई भी अताकोशो[१] ख़ता-पोश[२] नहीं

तुम जो दिन रात कहा करते हो प्यारे हो कृष्न
देवकी नन्दनो वसुदेव दुलारे हो कृषन
गुरु जनक स्वामि सखा मित्र हमारे हो कृषन
अपने भक्तों के सदा काम सवारे हो कृषन

यह सदा सच है तो वह कृष्न कहीं दूर नहीं
या कि दर अस्ल फ़राग़त[३] तुम्हें मंजूर नहीं

मैंने देखे हैं बहुत लोग क़नाअत वाले
नेम-निष्ठा में लगे प्रेम-पगे मतवाले
आप जैसे हैं वली[४] वैसे न देखे भाले
हाथ मत्थे पे धरे बैठे हो छप्पर डाले

तश्नगी[५] क़तरए-शबनम[६] से किसी की जाए
तो कोई किसलिए तालाबो-कुंआ खुदवाए

१—कृपालु २—पापों को छिपाने वाले ३—विश्राम, समृद्धता ४—सिद्धपुरुष ५—प्यास ६—ओस-बिंदु ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मांगना उनसे नहीं ख़ूब जो हों आप से कम
मांगना उनसे नहीं ख़ूब जो करते हैं सितम
मांगना उनसे नहीं ख़ूब जो रखते हैं अलम
मांगना उनसे नहीं ख़ूब जो हों नीच अधम

मांगना ख़ूब नहीं विप्र पराधीनों से
मांगना ख़ूब नहीं मुर्मसिको[1]बेदीनों से

मांगिए उनसे जो हाजत को रवा करते हैं
मांगिए उनसे जो ख़लक़त का भला करते हैं
मांगिए उनसे जो सब रद्द बला करते हैं
आप क्यों मांग की तौहीन किया करते हैं

मांग वो शै हैं कि मोती से भरी जाती है
अपने दूल्हा की दुल्हन मांग से कहलाती है

देव मुनि कहते हैं और शास्त्रो-वेदो-पुरान
श्याम जी चार पदारथ के हैं दाता बलवान
मांगते सब हैं दो आलम में उन्हीं से वरदान
बस मेरी अक़्ल ये हैरां है कि ऐ बिप्र-सुजान

सब कहाते हैं गदा कृष्न गदाधारी के
तुम गदा क्यों नहीं बनते उसी बनवारी के

यार से कहिए ग़रज़ अपनी जो याराना है
यार सख़्ती में जो काम आय तो मरदाना है
यार हैं कृष्न तो बेफ़ायदा पछताना है
यार का मर्तबा क्या आपने कम जाना है

ज़र्रा ख़ुर्शीद हो जो पहुँच दरे यार के पास
साय। हो जाय हुमा[2] टूट के दीवार के पास

१—कंजूस और अधर्मी २ फ़ारसी और उदू काव्य में प्रयुक्त होने वाला पक्षी उसके विषय में प्रसिद्ध है कि यदि कोई व्यक्ति उसकी परछाइं के नीचे आ जाय तो वह बड़ा वैभव-संपन्न सम्राट होता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चाहता कौन नहीं नामवरी दुनिया में
कौन है बारे तअल्लुक़[1] से बरी दुनिया में
कौन करता नहीं दरयूज़ागरी[2] दुनिया में
तबए-नियमत[3] से कहो किसकी भरी दुनिया में

ऐन दरिया में सदफ़ तश्ना रहा करती है
अब्र को देख के हसरत से घुटा करती है

आपके पास जो है लाले-दुरख़शां हरि नाम
बिलयक़ीं[4] उससे रवा होते हैं अपने सब्र काम
ज़ादे-राहे[5] दो जहां है ये बहर कूचो मक़ाम
इससे आग़ाज़ है मसऊद[6] इसी से अंजाम

लाले रूमां है न ये लाले-बदख़्शानी है
इसकी क़ीमत नहीं ये लाल तो लासानी है

आप इस लाल को मनि जानिए मनमें रखिए
लाल माला कोई इस लाल के तन में रखिए
ऐसे हीरे को छुपा दिल की लगन में रखिए
अपनी दूकान में या दुर्जे-दहन में रखिए

आज़ो हसरत[7] के न डालो इसे मतमूरे में[8]
आप गौहर को बहाता है कोई घूरे में

दुर्रेतुत्ताजे[9] शहां ज़ेबे शंहशाही है
गौहरे-गोशे बुतां हुस्न का हमराही[10] है
ज़ीनते-संगे-सियह लाल ने कब चाही है[11]
इस तवक़्क़ो[12] पे अबस[13] आपकीजांकाही[14] है

दाग़े-हसरत को मिटाएगा न यह आप का मन
दूर करता है फ़क़त गरमिए[15] सम सांप का मन[16]

१—संबधों का फल २—याचना ३—माया की आकांक्षा ४—निःसन्देह ५—दोनों लोकों के मार्ग का पाथेय ६—मंगलमय ७—लोभ और आकांक्षा (करुणामय) ८—छिपने का स्थान ९—सम्राटों के मुकुट का मोती जो उनके राजकीय वैभव की शोभा है १०—सुंदरियों के कानों का मोती तो उनके सौन्दर्य का सहचर है ११—संगेमूसा अर्थात् काले पत्थर की शोभा १२—आशा १३—व्यर्थ १४—प्राणपहारी १५—विष की गर्मी १६—मणि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आबरुदारों को है गौहरे-शहवार[1] की चाह
रहती है इस पे सदा ग़ाफ़िलो-हुशियार की चाह
[2]ज़न ज़मीं ज़ोर पे ज़र पर नहीं दो चार की चाह
चार[3] नाचार सभी करते हैं इन चार की चाह
खिदमते-अहलेकरम[4] पीरो-जवां करते हैं
सर पे मिन्नत के सुबू पीरें-मुग़ां[5] धरते हैं

जितने जांदार हैं सब करते हैं चारा जोई[6]
इससे आसूदा[7] ज़माने में नहीं है कोई
करे अश्कों से कहां तक ये गरीबांशोई[8]
बात कहती हूं तो हो जाती है यावागोई[9]

माह भी मेहर से जब क़स्बे-ज़िया[10] करता है
दाग़ मिन्नत के वो मत्थे पे लिया करता है

पैरुवे-अहले[11] करम होते हैं अर्बावे-अमल[12]
नख़्ले[13] तूबा से किसी को नहीं मिलता हंज़ल[14]
बलि के छलने को गये श्याम जो करके छलबल
न घटा बल न पड़ा पायए-वहदत में खलल

एक थे एक से बावन हुए कहते हैं निगम[15]
फिर बढ़े यूं कि हुए चौदह तबक़[16] तीन क़दम

तुम तो मखज़न को समझते हो दहेन काले का
लालो याक़ूत को बतलाते हो मन काले का
शक नहीं इसमें ज़रो सीम है धन काले का
किस मुहव्विस[17] के लगा हाथ न फन काले का

१—राजोपम मोती २—स्त्री, भूमि, शक्ति और धन इन चारों को सभी चाहते हैं ३—क्षम-अक्षम ४- कृपालु व्यक्तियों की सेवा ५—यहां आशय है श्रेष्ठ आचार्य (अग्नि पूजक) से ६—साधनों की खोज ७—निश्चिंत ८—गरीबान को भिगोना ९—दुर्वचन १०—ज्योति की प्राप्ति ११-कृपालु व्यक्तियों का अनुसरण १२–आकांक्षी लोग १३—कल्प वृक्ष १४—इन्द्रायण का फल १५—वेद १६—आकाश और धरती के सात-सात भाग (अर्थात ७ आकाश एवं ७ धरती) १७—लोभी

३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पर वो काले नहीं घनश्याम जो डस जाते हैं
अब्रसां[1] मौज पे आयें तो बरस जाते हैं

नेको बद अपना समझते हैं सभी अहले-हुनर[2]
कौन लेता नहीं एहसान किसी का सर पर
रंजो-राहत में तो हो जायगी ये उम्र बसर
लौहे-क़िस्मत में जो लिक्खा है वही होगा मगर

ईंच अक़्लस्त कि अज़्मे दरे जानां न कुनी[3]
ग़मे हिजरां मरज़दारी व दरमां न कुनी[4]

द्वारिकानाथ की हासिल तो करो पाब्रोसी[5]
जाके देखो तो वो देहीमे-ज़री[6] ताऊसी
छोड़ो इस क़ैदे-तअल्लुक़[7] की सजन महबूसी[8]
वां के जाने पे ये रहने की नहीं मायूसी

इक नज़र नीमनज़र[9] जब वो इधर देखेंगे
यां के वारिद[10] न किसी और का घर देखेंगे

ग़जल

हरी हर वक़्त हर सायल का अपने काम करते हैं
दया करके ग़रीबों पर दयानिधि नाम करते हैं
हरी हर जानोदिल में हर घड़ी बिसराम[11] करते हैं
किसी के राम होते हैं किसी को राम[12] करते हैं
हरी हैं दर्द रस[13] ऐसे कि आहे-ग़मज़दां[14] सुनकर
न उनको चैन पड़ता है न वो आराम करते हैं
हरी ऐसे तवाना हैं कि हरिदासों के दुश्मन को

१—मेघ के सदृश २—प्रवुद्ध लोग ३—यह कौन सी बुद्धिमानी है कि अपने प्रेमी के द्वार तक पहुँचने का संकल्प न करे ४—और विरह-व्यथा से पीड़ित होकर भी उसकी चिकित्सा न करे ५—चरण चुम्बन ६—मोर मुकुट ही जिनका स्वर्णिम राजमुकुट है ७—संबंधों की कारा ८—कारा ६—अर्धविकसित नेत्र जो कि सौन्दर्य का प्रतीक है १०—आगन्तुक ११—विश्राम १२—अधीन १३—जिस तक कष्ट पहुँच जाय अर्थात् भक्तों के कष्टों का अनुभव करने वाला १४—दुःखी व्यक्तियों की कातर-ध्वनि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दिखाकर अबरुए[1] पुरखम तहे-समसाम[2] करते हैं
हरी के हाथ में नख्ले-सखावत[3] की हरी शाखें
किसीको ज़िल्ले[4] शफ़क़त से वो कब नाकाम करते हैं
हरी ने दुरपदी गज की विपत भारी हरी जबसे
हरी की सब सना सब संत सुब्होशाम करते हैं
हरी हैं दुख हरन उनकी सरन जिनको नहीं भाती
नहीं मालूम वो क्यूंकर बसर ऐय्याम करते हैं
हरी के धाम में है द्वारिका भी शहर सोने का
ये सब धन उनकी ख़ातिर है जो उनका धाम करते हैं
हरी से इल्तिजा करिए जो करनी हो कि अफ़ज़ूंतर[5]
दया किरपा अनुग्रह 'मुल्तजी' पर श्याम करते हैं

कवित्त

हरि हैं दुख दारिद के हर्त्ता कर्त्ता सुख के सो कृपा करिहैं
करिहैं जदुनाथ सनाथ जबै अघ ओघ सबै छिन में टरिहैं
टरिहैं मन के दुख औ द्विविधा जन के हिय तोष सुधा भरिहैं
भरिहैं धन सों पिय भौन-भंडार दरिद्र तुम्हार हरी हरिहैं

सोरठा

हरी दीन के मित्र लक्ष्मी तासु कलत्र हैं
तिनके भवन पवित्र, विप्र अवशि पग धारिए

१—वंकिम भृकुटि २—तीव्र खड्ग से काटकर गिरा देते हैं ३—दान का वृक्ष ४—स्नेह की छाया ५—अधिकाधिक ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नसीहत करना सुदामा का सुशीला को

दोहा

पय मांगेव, मांगेव रुदन, मांगेव सत वरदान
धन मांगत अब चौथपन, तिय कस करत गुमान

जब सुदामा की सुबामा ने कही ये बातें
बो न दुजदेव बताती है मुझे क्या घातें
जिसके सब दिन न भरे जुहद की सूखी आंतें
कितनी दुश्वार नहीं उसकी विपत की रातें

अब न दम मार क़दम मार शकेबाई पर
क्यूं कमर बांधी है तूने मेरी रुसवाई पर

बावली कृश्न भजन क्यूं नहीं करती हरदम
सख़्तिओ तंगिए[1] औक़ात से क्या तुझको है ग़म
फायदा हमको इसी में है जो हैं श्याम के हम
वेह ज़[2] अकसीर निगाहे करमे-अहले करम

संग से लाल निकलता न सदफ़ से मोती
गर न उन पर नज़रे-नैय्यरो[3] नीसां[4] होती

क्या वुका करती है तू दरब[5] की राती माती
हैफ़ तेरी तो ज़बां भी नहीं लुकनत[6] खाती
लक्ष्मी जगत में दिन रात हैं आती जाती
बावली कौन समेटे ये पराई थाती

१—काल-चक्र की कठोरता
२—दानियों की उदार दृष्टि अकसीर से भी श्रेष्ठ है
३—सूर्य ४—स्वाति नक्षत्र ५—द्रव्य ६—हकलापन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राम की राम रमां है तो रमे राम के पास
हंस जाते नहीं दाना के लिये दाम के पास

तू जो कहती है कि वह कृष्न बड़ा दाता है
सच है पर तेरे लिए उसको यही भाता है
आश्नाई का भी ग़ोता कोई खा जाता है
ऐसी बातों से तेरे जी में यही आता है

[1]ग़ैरत अज़ चश्म बरम रुए तू दीदन न देहम
[2] गोश रा नीज़ हदीसे तु शुनीदन न देहम

मिन्नते-अहले[3]दुवल मुझको गवारा ही नहीं
यार को अपने सताने का भी यारा[4] ही नहीं
क्या ग़रीबी में ग़रीबों का गुज़ारा ही नहीं
पर तेरी ज़िद से हूँ लाचार कि चारा ही नहीं

तुझको आराम से है काम मुझे श्याम से काम
देखें किस तौर से दोनों का हो इस काम से काम

ग़ज़ल

ग़मे-जानां में जिसकी चश्म तर है
उसे हर क़तरा आंसू का गुहर है

[5]ज़री उल्फ़त नहीं दिल में समाती
बड़ी माया का तेरे कौन घर है

अबस मरती है तू धन की हवस में
हवस मरती है जिसकी वो अमर है

ये दौलत चार दिन की चांदनी है
इसी में रू नुमा[6] दाग़े क़मर[7] है

१—लज्जा के कारण मैं अपनी आँखों से तेरा मुख नहीं देखना चाहता हूँ २—और न तो अपने कानों से तेरी बात ही सुनना चाहता हूँ ३—धनाढ्य लोगों की याचना ४—शक्ति, साहस ५—लखनऊ वासी 'ज़रा' को ज़री बोलते हैं अर्थात् किंचित ६—चेहरे पर प्रकट ७—चंद्रमा का कलंक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चली आयेगी संपत बावली आप
जो कुछ भी चाह में तेरी असर है

हरी बारे-तअल्लुक़ से हैं आज़ाद
गुलिस्तां में सनोबर बे समर है

हरी शाहे-दो आलम हैं कि उनकी
गदा ओ शाह पर यकसां नज़र है

हरी मुशफ़िक़ हरी है यार ग़मख्वार
हरी हर बेकसों का चारागर है

हरी के आबे रहमत से हमेशा
यहाँ नख़्ले-तमन्ना बारवर[१] है

हरी रज़्ज़ाक़ हैं हर जिस्मों-जां के
नमक ख्वार हरी हर इक बशर है

हरी की याद से ग़ाफ़िल न हो तू
हरी को हर तरह तेरी खबर है

हमारें श्याम हैं हम श्याम जीके
हरी हर तौर आरामे ज़िगर है

हुआ है मुल्तजी को जब से इल्हाम[२]
यही विर्दे-ज़बां, शामो-सहर है

कवित्त

बावरी वरह्मनी धनी हैं तेरे ब्रजराज
जाके नाम लीन्हें आज होत रंक रावरो
रावरी कृपाल के पुरान वेद गाँवैं बाल
सर्वदा गुपाल जी को भावै भक्ति भावरी
भावरी बढ़ाव नित्त राखु चित्त सावधान
बित्त के निमित्त ठांव और न उपावरी
पावरी जो मांगे भीख ताहि में जियाव प्रान
मेरी सीख मान तू निदान मुँह न बावरी

———

१—फलवान २—दैवी संदेश

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोरठा

कृष्न चरन चितलाव, कृष्न विमल जस गाव तिय
कृष्ण सरन में आव, तब तो सब सुख पाइये

जाना सुदामा जी का द्वारिका को श्यामसुंदर से मिलनें के लिए

दोहा

नीति, प्रीति, परतीति के, बचन पुनीत सुनाय
परम हठीली नारि सों, बोले दुज मुस्क्याय

भेजती जो है मुझे श्याम दया धाम के धाम
कोई तोहफा उन्हें देती है कि खाली पैग़ाम
मैं तो खाली नहीं जाने का वहां ऐ खुदकाम[1]
नाम सुनते ही वो कमला मुझे देगी दुश्नाम[2]

यार कुछ दे के मिले यार को तब यार की बात
खालो बातों में बिगड़ जाती है व्यवहार की बात

ज़ने मिस्कीं जो न रखती थी ज़रो सीम का गंज
दूरकर दिल से ग़रीबी का उसी दम शशोपंज[3]
कोई हीले से वसीले से किसो के बेरंज
मांग लाई किसी हमसाया से थोड़े से बिरंज[4]

दामने-जामये[5] पारीना में शर्मा करके
रिश्तये[6] मेहर से बांधे उन्हें यकजा करके

आम्नाय-ग्रंथालय,

१—स्वार्थी २—गाली, दुर्नाम। ३—असमंजस
४—चावल ५—फटे हुए वस्त्र का अंचल ६—प्रेम का धागा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दे के शौहर को लगी कहने कि ले जाइए आप
दाबिये इसको बग़ल में व चले जाइए आप
रुक्मनी-कंत के क़दमों के तले जाइये आप
ख़ाक उन पावों की मत्थे पे मले जाइये आप

दिल के आईने पे वो ख़ाक जिला[१] करती है
है वो अक्सीर कि तांबे को तिला[२] करती है

दुज ने देखा जो बहुत दरपये[३] इसरार इसे
दिल में समझे कि फ़लाकत[४] का है आज़ार इसे
करके इनकार करू किसलिए बेज़ार इसे
करते होंगे वो रमानाथ अगर प्यार इसे

[५]आरज़ूए-दिले-हसरत ज़दा, बर लायेगे
दुख हरन अपने चरन मुझको भी दिखलायेगे

लाजरम[६] अब यही लाज़िम है कि यां से चलिये
आतशे[७] संगे-सऊबत में कहाँ तक जलिए
किसलिए ख़ाके[८] दरे-ग़ैर जबीं पर मलिए
शजरए[९] बाग़ो-नज़र बन के वहीं पर फलिए

माल देगा जो तलाफ़ी[१०] में न आमालों के
जाल तो काट बहा देगा वो जंजालों के

ये तो है ऐंन-सआदत[११] कि मिले अपना यार
धर्म रह जाय इसी का था फ़क़त सोच विचार
उम्र भर के लिए मैंने ये किया था इक़रार
कि न मागूंगा कोई चीज़ किसी से ज़िनहार[१२]

१—साफ करना, चमकाना २—स्वर्ण ३—दुराग्रह पर कटिबद्ध ४—निर्धनता ५—दुःख दग्ध हृदय की आकांक्षा पूर्ण करेंगे ६—विवशतः ७—कष्टों के पाषाण की ज्वाला ८—दूसरे के द्वार की रज, मस्तक पर मलने से क्या लाभ? ९—उनकी दृष्टि (कृष्ण जी की) के उद्यान का वृक्ष १०—हमारे बिगड़े हुए कर्मों के प्रतिफल के रूप में यदि हमें धन संपत्ति नहीं देंगे ११—परम सौभाग्य १२—कदापि ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कर दिया तंग ज़माने की मगर तंगी ने
अपना क़ब्ज़ा किया सब देह पे अधंगी ने

नाज़ करता था मैं हरिनाम रतन पर अपने
ज़ोम[१] रहता था मुझे इल्म के धन पर अपने
नूर था दल्क़े-रियाज़त[२] का बदन पर अपने
आज क़िस्मत का है ये फेर कि तन पर अपने

पारसाई[३] का है जामा न सफ़ाई का लिबास
इस्तरी करके पहनता हूँ गदाई का लिबास

यूं हक़ीक़त की तरफ़ साहबे[४] इदराक चले
प्रेम पूंजी को दबाये हुए बेबाक चले
रिश्ता[५] सां बख़िया ज़ने सीनए सदचाक चले
ग़म के नाके से निकलकर जो तरबनाक[६] चले

ख़ेल के ख़ैल[७] ख़यालात के हमराह हुए
यासोहिर्मा[८] के छुपे चोर जो थे शाहहुए

रफ्ता-रफ़्ता हुए वारफ्तए[९] रूए गोविन्द
भर गयी दिल में हवाए सरे कूए[१०] गोविन्द
याद करते हुए हर ख़ासए-ख़ूए[११] गोविन्द
जज़्बए[१२] शौक़ में राही हुए सूए गोविन्द

१—गर्व २—तपश्चर्या की गुदड़ी ३—पवित्रता ४—प्रबुद्ध ज्ञानी ५—इन पंक्तियों में कवि ने सिलाई में प्रयुक्त होने वाली सारी वस्तुओं को अपने समक्ष रखकर उपमाएं दी हैं सूई में नाका होता है, जिसमें धागा डाला जाता है बख़िया करने में तागा छिदता चला जाता है सुदामा के सीने को दुःख ने इस प्रकार छेद दिया जा जिस प्रकार बखिया करते समय कपड़ा छिद जाता है अब उन्होंने द्वारिका जाने का निश्चय कर लिया; मानो वह दु;खरूपी नाके से प्रसन्नतापूर्वक निकल आये ६—प्रसन्नतापूर्वक ७—समूह के समूह ८—निराशा एवं अभाव ९—भगवान् कृष्ण के मुखमंडल पर मुग्ध १०—गोविंद की वीथी की हवा ११—गोविंद के स्वभाव की प्रत्येक विशेषता १२—प्रेम भावना में डूबे हुए गोविंद की ओर पथिक बने हुए चल दिये ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जिस जगह पर कहीं दम लेने को रुक जाते थे
दम बदम अपनी ज़बां पर ये सुखन लाते थे

ग़ज़ल

[1]दरीं ग़ुरबत ख़याले-रुए-जानां रहनुमा दारम
[2]बकूयश मी तवानम शुद अगर बख़्तेरसा दारम
[3]च मुश्किल ईं तने काहीदारा वुरदन बआसानी
[4]कि संगे सख़्तिए दौरां बरंगे कुहरबा दारम
[5]अज़ों दरिया उबूरे ख़ेश्तन आसां हमी दानम
[6]कि दस्ते नातवाने ख़ुद बदस्ते आश्ना दारम
[7]गुज़श्तन अज़ बयावाने अदम दरवादिए-ऐमन
[8]सितमहाए तु ऐ चर्ख़े-सितमगर कै रवा दारम
[9]मुकद्दर दाश्तन अज़ मैले दुनिया कै रवा बाशद
[10]अगर दरख़ानए दिल अज़पए दिलदार जा दारम
[11]पए हरकाम जांरफ्तन वसूए कामरां ख़ुशतर
[12]ज़ नाकामां उमीदे कामयाबी ताकुजा दारम

१—प्रवास की यात्रा में, मेरे मित्र के मुख का ध्यान ही मेरा मार्ग दर्शक है
२—यदि भाग्य ने साथ दिया, तो मैं अपने मित्र की गली तक अवश्य पहुँच जाऊँगा
३-४ – इस थके एव दुर्बल शरीर को प्रिय तक पहुँचाना क्या कठिन है जबकि काल की कठोरता के पत्थर को मैं कुह्लबा के रूप में रखता हूँ आशय यह है कि मेरे लिए स्वत: पत्थर पर चाघ मखमल बन कर बिछ जायेगी कुह्लबा—घास को खींचने वाला एक पीतवर्णी पत्थर जो तिनके को अपनी ओर खींच लेता है।

५-६—इस नदी को स्वयं पारकार जाना मै बहुत ही सरल समझता हूँ क्योंकि मैं अपने दुर्बल हाथों को अपने मित्र के हाथों में रखता हूँ,

७-८—मैं अदम (प्रलय) के जंगलों को पारकर आनन्द और निश्चितता की घाटी में प्रवेश कर गया हूँ; अतएव हे अत्याचारी आकाश ! मैं तेरे अत्याचारों को किस प्रकार सहन कर सकता हूँ।

९-१०—संसार की आसक्ति से उत्पन्न जो मलिनता है; अब कहाँ रह सकेगी, यदि मैं अपने मनमंदिर में अपने उपास्य के चरणों के लिए स्थान रखता हूँ।

११-१२—अपनी आकांक्षा की पूर्ति के लिए सफल व्यक्तियों के पास जाना अच्छा है, असफल व्यक्ति से सफलता की आशा कब तक रखूं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[१] ब इक़लीमे इरादत 'मुल्तजी' हर लहज़ये हरदम
[२] तमन्नाए-निगाहे-लुओ शाहे द्वारका दारम

कवित्त

आवेगी सम्पदा-समूह देस देसन की
बसुधा नरेसन की दासी हुइ धावेगी
धावेगी लच्छ लच्छ जोजन सों-लच्छ बार
सुषमा सहस अपार जन के हित लावेगी
लावेगी रिद्धि-सिद्धि मानिक मनि रतन साथ
कमला निज कमल हाथ कंचन गृह छावेगी
छावेगी ऐन चैन लावेगी गुरुसहाय
जा दिन प्रभु दया दृष्टि मेरी दिसि आवेगी

•

१-२ हे मुल्तजी ! श्रद्धा के संसार में हर घड़ी, हर क्षण मैं द्वारिकाधीश कृष्ण की कृपा दृष्टि की आकांक्षा रखता हूँ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोरठा

हरि नित बिमल बिनीत, ज्ञान गिरा गोतीत प्रभु
सोई मेरे मीत, क्यों करिये जिय सोच बस

सुदामा का दरमियान में थककर सो जाना और राह तय कर जाना आलमें ख्वाब में

इब्तिदा जिसकी बता सकते नहीं वेदो पुरान
इंतिहा का नहीं होता है सहस मुख से बयान
जिसके पदकंज का सुर संत किया करते हैं ध्यान
ये वही कृष्न सगुन ब्रह्म हैं पूरन भगवान

उनके यां जाता हूँ इस बेसरोसामानी से
तंग भी हो गयी तंगी मेरी उरियानी से

द्वारिका कृष्न महाराज की रजधानी है
बरतर[1] अज़ चर्ख़ बरीं क़स्रे-जहांबानी है
वांके हर ज़र्रे में खुर्शीद[2] की नूरानी है
[3]दरो दीवार पुर अज़ लाले बदख़्शानी है

फर्शे-मख़मल पे बिछा फूलों का बिस्तर होगा
[4]बार मुझ ख़ाक नशीं को वहां क्यूंकर होगा

मददे-बख़्तेरसा[5] है तो दया से उसकी
बहरावर हूँगा मैं ख़ाके कफ़े[6] पा से उसकी

१—कृष्ण जी का राजमहल स्वर्ग से भी श्रेष्ठ है २—सूर्य ३—वहां के द्वार एवं दीवारों में बदख्शां की मणियां जड़ी हुई हैं ४—क्लेश ५—सौभाग्य की सहायता ६—कृष्ण के पदतल की रेणु से मैं सौभाग्यशाली हो जाऊंगा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कौन महज़ूज़[1] नहीं लुत्फो-अता[2] से उसकी
है तवक़्क़ो[3] मुझे हर तौर वफ़ा से उसकी

मेहरबां जब कभी वो श्याम सलोना होगा
मिट्टी छू लूंगा तो मेरे लिए सोना होगा

हंस मद मान समन कंस दमन पद पावन
सत्य सुर संत उमा कंत रमा मन भावन
जो चरन बलि की परीच्छा को हुए थे बावन
दुरपदी चीर भरन चीर हरन दुख दावन

धन मेरे भाग कि वो हरि के चरन देखूंगा
भीम भव-सिंधु अगम पार करन देखूंगा

[4]ख़ाक पाये कि बराहे-करमे बलि मालीद
[5]ख़ाकपाये कि पये यारिए गजराज दवीद
[6]ख़ाक पाये कि बऔजे सरे सोबान[7] रसीद
[8]ख़ाकपाये किप ये रफ़ए गुनाहस्त मुफ़ीद

[9]ख़ुर्रम आंदम हमूं ख़ाक शवद अकसीरम
[10]ख़ाक गरदेमों बज़ेरे क़दमश जागीरम

१—उपकृत २—दया एवं दान ३—आशा।

४—वह चरण रज जिसे बलि ने भगवान की दया के लिए स्वयं अपने मस्तक पर लगाया

५—वह चरण रज जो कि गजराज की मैत्री के लिए दौड़ी

६—वह चरण-रज जो कि कालिनाग की ऊँचाई अर्थात् सिर पर पहुँची

७—अजगर अर्थात् कालिगाग

८—वह चरण रज जो पापों के मोचन के लिए लाभप्रद है

९—वही चरण रज संभवतः मेरे लिए अकसीर (रामवाण) हो जाये और मैं पूर्णतः प्रसन्न हो जाऊं

१०—में स्वयं धूल में परिवर्तित हो जाऊं और उनके चरणों (कृष्ण के) के नीचे मुझे स्थान मिल जाये और वही मेरी जागीर होगी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[1]क़दमे यार कि नख़्ले-कदमे कर्द सऊद
[2]क़दमे यार कि बाशद वदोआलम मसजूद
[3]क़दमे यार कि हर खानए दिल पाक नमूद
[4]क़दमे यार कि दानद दो जहानश मसऊद

[5]ऐ खुशा बख़्त कि आं हर दो क़दम ख़्वाहम दीद
[6]नक्शे पा दाफ़ए हर दर्दो अलम ख़्वाहम दीद

[7]सर नगूं बहरे क़दम-बोसिए ऊ चर्खे-फ़राज़
[8]मेहरोमह अज़ पए-पाबोसिए ऊ दर तगोताज़
[9]कूचए ब्रज ज़े नक्शे कफ़े पायश मुमताज़
[10]बाज़ दारम पए खाके क़दमश दस्ते नियाज़

[11]बर कशद हम चूं कमांगर तरफ़े खुद ज़ूदम
[12]तीरे उम्मीद ख़रद बर हदफ़े मक़सूदम

[13]नाख़ने पाये-कन्हैया महे-नौरोज़िए-मा
[14]नक़्शे-पायश अलमे नुस्रते-फ़ीरोज़िए मा

१—मित्र के चरण ऐसे हैं कि (जिनके स्पर्श से) कदंब का वृक्ष भी ऊंचा हो गया २—मित्र के चरण ऐसे हैं कि लोक परलोक दोनों के लिए प्रणाम्य हुए ३—मित्र के चरण ऐसे हैं कि प्रत्येक मनोमंदिर पवित्र हो गया ४—मित्र के चरण ऐसे हैं कि लोक-परलोक दोनों उन्हें भाग्यशाली समझते हैं ५—यह मेरा सौभाग्य है कि मैं उन दोनों चरणों का दर्शन करूँगा ६—उन चरण चिन्हों को मैं देखूंगा जो प्रत्येक पीड़ा एवं क्लेश को नष्ट करने वाले हैं ७—उनके (कृष्ण जी) के चरण चुम्बन के लिए ऊंचा आकाश भी विनत शिर है ८—उनके चरण चुम्बन के लिए चन्द्रमा एवं सूर्य दौड़ धूप में व्यस्त हैं ९—उनके (कृष्ण जी) चरण चिन्हों से ब्रज की गलियां विशिष्ट बन गयीं १०—उनकी (कृष्ण जी की) चरण रज के लिए अपने विनय का हाथ फैलाए हुए हैं। ११—यदि मैं धनुष की भांति अपनी ओर तीव्रता से लक्ष्य लेता हूँ १२—तो मेरी आशा का वाण, मेरे अभीष्ट का लक्ष्य विद्ध कर देता है १३—श्री कृष्ण के चरण-नख मेरे लिए नव वर्ष के चंद्रमा के समान है १४—उनका चरण चिन्ह मेरे लिए विजय-पताका के समान है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[1]ख़ाके पा ग़ाजए-रुख़सारए-ब्रहरोज़िए मा
[2]कफ़े-पा आइनए-रुए दिल अफ़रोज़ए मा

[3]कै रसम बर सरे कूयश कि जमालश बीनम
[4]ता बके ताब कि अज़ चश्मे ख़यालश बीनम

[5]रूए-आं माह बेह अज़ माहे पसन्दीदए-ख़ल्क़
[6]श्याम रंगे-रूखे-ऊ मर्दुमके दीदए ख़ल्क़
[7]ख़ुर्रम अज़हुस्ने सिफ़ातश दिले ग़मदीदए ख़ल्क़
[8]ज़ेरे-दामाने-अमानश सरे शोरीदए ख़ल्क़

[9]बार यावद चो बबज़्मश तने-बेचारए मां
[10]व:श इक ज़ल्लए-ख़्वाने-करमश चारए मा

जिससे गुलज़ार हुई गोकुलो मथुरा की ज़मीं
जिस जगह देव रगड़ते हैं सदा अपनी जबीं
[11]रास्तगो जिनको समझते हैं मताए-दिलोदीं
तलुए सहलाते हैं जिन पावों के ख़ूबाने[12]हसीं

मुझको तलुओं से लगी है कि वो चलकर देखूं
सर के बल जा के वहां जन्म सफल कर देखूं

तै किसी तौर से ये मन्जिले-दुश्वार तो हो
ख़्वाबे[13]नुक़वत से नसीवा मेरा बेदार[14] तो हो

१—कृष्ण जी की चरण रज मेरे सौभाग्य के कपोलों के लिए अंगराग अर्थात उबटन के समान है २—श्रीकृष्ण जी का पद तल मेरे ज्योतित हृदय के मुख के लिए दर्पण के समान है ३—मै उनकी (कृष्ण जी की) गली में कब पहुँचूं कि उनका सौन्दर्य देखूं ४—यह कब तक सम्भव होगा कि मैं भगवान् कृष्ण के ध्यान के नेत्रों से, देखूं ५—सृष्टि के रुचिकर चंद्रमा से भगवान् कृष्ण का चन्द्र मुख श्रेष्ठतर है ६—उनके (कृष्ण जी) मुखमंडल का श्याम रंग सृष्टि के नेत्रों की पुतली है ७—उन के गुणों के सौन्दर्य से पीड़ित संसार का हृदय प्रसन्न है ८—व्यथित विश्व के सिर को उसकी शरण के अँचल में विश्राम मिलता है ९१—यदि उसकी सभा में मेरा नीरीह शरीर कहीं पहुँच गया तो उसकी कृपा के भोजन का एक उच्छिष्ट कण मेरा सहारा बन जायेगा ११—सत्यभाषी १२—सुंदरों में श्रेष्ठ १३—क्लेश की निद्रा १४—जागृत ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हो जो होनी हो मगर यार का दीदार तो हो
देख लेंगे कहीं आंखों से वो दो चार तो हो

उसके दर्शन में है हर तौर हमारी चांदी
वो बशर और ही हैं जिनको है प्यारी चांदी

अब जो इस राह पे तक़दीर मुझे लायी है
यार के वस्ल[1] की तदबीर ये बतलायी है
रंजे[2]ग़ुरबत न ग़मे बादियापैमाई[3] है
एक ही सोच में अपना दिले[4] सौदाई है

हाय किस मुंह से कहूंगा कि ये चावल लीजै
अपनी भाभी की ये सौग़ात तनावुल[5] कीजै

वो रमानाथ हैं परवा नहीं धन की उनको
फ़िक्र हर वक़्त रहा करती है जन की उनको
भाव के भूखे हैं रुचि क्या है अशन[6] की उनको
कब पसन्द आयेगी चावल की ये कनकी उनको

बेर सबरी के समझ कर वो विदुर की भाजी
लेंगे इसको तो रहेगी न मेरी मोहताजी

ग़ज़ल

दो यार इक दिल जहां में ज़ाहिर यके सुदामा दिगर कन्हैया
ग़रीब बेज़र इधर सुदामा ग़रीब परवर उधर कन्हैया
दो दिल मुहब्बत के जामे-जम हैं दो तन जुदा वो दो जां बहम हैं
कुंवर कन्हैया के दिल में हम हैं हमारे दिल में कुँवर कन्हैया
जो तै करूंगा मैं ये मसाफ़त[7] टलेगी सर से हज़ार आफ़त
हरेगा दिल की मेरी कसाफ़त[8] करेगा जिस दम नज़र कन्हैया

१—भेट, मिलन २—प्रवास का दुःख ३—वन-भ्रमण का कष्ट ४—विचिप्त हृदय ५—खाइए ६—भोजन ७—दूरी ८—मलिनता।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ये है तरीक़े-वफ़ा-शनासां[१] यहां पे ऐ दिल न हो हेरासां[२]
अजब नहीं है जो करदे आसां ये सख़्त राहे-सफ़र कन्हैया
अभी तो तुख़्मे-अमल[३] उगा है तलाशे-बारे मुराद क्या हैं
जो नख़्ले-हसरत[४] में फल लगा है खिला है दिल का समर कन्हैया
अगर वो आलम का चारागर है तो इस मुसीबत से क्या ख़तर है
जो मेरे दिल की उसे ख़बर है कभी तो लेगा ख़बर कन्हैया
फ़रोग़[५] देता है हर बशर को और आबरू आब से गुहर को
तो देगा इस अश्के-चश्मे-तर[६] को भी आबोताबे गुहर कन्हैया
मुझे तो हरदम हैं ध्यान उसका मैं किससे पूछूं मकान उसका
फ़क़त यही है निशान उसका कि दिल में रखता है घर कन्हैया
मुक़ीम[७] रहता है दिल के अन्दर निगाह रखता है मुल्तजी पर
सुजन सनेही सुशील सुन्दर सुजान समरथ सुधर कन्हैया

छंद

समरथ सुशील सुजान सुंदर सुधर सूरत सांवरे
हितमान चावर चार लेहैं जान तिय मित बावरे
आदर समेत निकेत मोंहि प्रभु अंग भरि जब भेंटिहैं
दुख कोटि दूषन कोटि मेरे कोटि दारिद मेटिहैं

कवित्त

श्याम गरीब नवाज वड़े दस आठ कहैं खट चार बतावैं
दीनन को प्रतिपाल करैं अघ ओघ हरैं दुख दोष नसावैं
जे जन आस करैं उनकी तिनके मन की प्रभु आस पुरावैं
जौ हित मोर करैं जदुनाथ तबै गुन गाथ गुनी जन गावैं

सोरठा

विपत नदी गंभीर, भंवर मनोरथ नीर दुःख
कृपा सिंधु बलबीर, कर गहि पार लगाइहैं

———

१—कृतज्ञ लोगों की पद्धति २—भयभीत निराशा ३—आकांक्षा का बीज ४—करुणामयी आकांक्षा का वृक्ष ५—वृद्धि ६—तरल नेत्रों का अश्रु ७—निवास करता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

खुश होना सुदामा का द्वारिकापुरी की शोभा देख कर

दोहा

करत नेह ब्यौपार मन मित्र तुम्हारे काज
सुरति जमा पर बढ़त नित, दर्सन आसा ब्याज

अलग़रज दिल में तसव्वुर यही करते करते
आस और यास में दम यार का भरते भरते
बेख़तर मेहर से और क़हर से डरते डरते
ध्यान हर आन कुंअर कान्ह का धरते धरते

सो गये कस्ले[१] मसाफ़त से कहीं ग़मज़दा हाल
मंजिले-ख्वाब में तै कर गये मानिन्दे ख़याल

जाके पहुँचे लबे [२]क़ुलज़ुम जो बसद मौजे सुरूर
देखते क्या हैं कि इक शहर है वां मतलए[३] नूर
ग़ैरते-क़ाफ़ तिला सुंबुलए क़ाफ़ [४]क़ुसूर
बामो-ऐवाने-[५]मुतल्ला से अयां जलवए नूर

१—यात्रा की थकान २—समुद्र तट ३—ज्योति का उद्गम ४—काकेशस पर्वत माला को फारसी एवं उर्दू कवि सोने की खान और परियों का निवास स्थान मानते चले आये हैं अरबी भाषा में राजभवन को क़स्र कहते हैं जिसका बहुवचन 'क़ुसूर' है दोनों प्रारम्भिक अक्षर क़ाफ़ और क़ुसूर वाले क़ाफ़ दोनों की तुलना करते हुए कवि कहता है कि द्वारिका के क़ूसूर (राजभवन) के क़ाफ़ से कोह क़ाफ (जिसे स्वर्णगिरि माना जाता है) का क़ाफ (उर्दू वर्णमाला का २७वां अक्षर) लज्जित हो रहा है अर्थात द्वारिका के राजभवन की चमक दमक के सामने स्वर्णगिरि का क़ाफ़ लज्जित हो रहा है राजभवन की छतें और कमरे ऐसे चमक रहे हैं मानो सोना चमक रहा हो सुंबुला अर्थात् बाली (गेहूं की) यहां ऊंचाई से अभिप्राय है ५—स्वर्णिम छतें एवं भवन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चर्खे-हफ्तुम[१] उसी खित्ते का है फ़रसूदा[२] जबीं
चूमता चारों तरफ़ से हैं वो झुक झुक के ज़मीं

लाजवर्द[३] और ज़बरजद[४] का बना [५]शहरपनाह
ठहरती देखने वालों की नहीं जिस पे निगाह
कोठियां मतलए[६] खुर्शीदो मकां मकमने[७] माह
शाखे-मरजां[८] के लगे जिसमें किवाड़े[९] दिलख्वाह

सक़फ़े[१०]नीलम पे जड़े लाले-बदख्शां के नगीं
[११]जलवागर ज्यूं सफ़े-अंजुम[१२] अफ़लाकेबरीं[१३]

कमरे सोने के बने खूब ज़मुर्रद[१४] के सुतू[१५]
सफ़े-बिल्लौर[१६]बरूं साफ़तर अज़ सदफ़े दरूं
क़ता ताक़ों की खमे-अब्रुए-खूबां से [१७]फ़जूं
रेख्ता[१८] आबे-गुहर बैत निहायत मौज़ूं
काम अम्ले से इमारत के रवा होते हैं
[१९]उक्दे सब नाखुने-मेहराब से वा होते हैं
झालरों में दुरे-शहवार की है जलवागरी
तारे[२०]सीमी के दरीचों[२१]में चिक़ें[२२]लालहरी
ज़ीनते-औजे[२३]तरब अंजुमने हूरो[२४]परी
नाचते हैं कहीं ताऊस[२५] कहीं कुब्के[२६] दरी

१—सातवां आसमान २—मस्तक को झुकाए हुए ३—एक प्रकार का पन्ना ४—एक प्रकार का पन्ना ५—प्राचीर ६—सूर्योदय ७—चंद्रमा के छिपने का स्थान ८—मूंगे की टहनी ९—मनोज्ञ (सुंदर)। १०—नीलम जटित छत ११—शोभित १२—तारावलि १३—आकाशों के ऊपर १४—पन्ना १५—स्तंभ १६—स्फटिक का बाहरी प्रांगण भीतर की सीपियों को अपेक्षा शुभ्र तर है १७—आलों का आकार सुंदरियों की भृकुटियों की वक्रता से अधिक सुंदर है १८—अर्थात् मोती विजड़ित भवन अत्यंत सुन्दर है १९—मेहराब को देखकर भीतर के सौन्दर्य का बोध हो जाता है २०—रुपहला तार २१—खिड़की २२—बांस की तीलियों से बना हुआ द्वार का पर्दा ३—आनंदातिरेक की शोभा २४—किन्नरियों एवं देवबालाओं की गोष्ठी २५—मोर २६—चकोर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दिल फड़क जाता है[1] मुतरिब की नवासंजो[2] पर
रात भर चांदनी लहराती है शतरंजी[3] पर

तख़्ते-बिल्लौर पे आरास्ता सोने के पलंग
तोशकें[4] काकुमो-दीबा[5] की बिछी रंगारंग
मोम हो जाता है झाड़ों की दमक से दिलेसंग
तुर्फ़ातर[6] जलवए-क़ुदरत है हज़ारों फर्संग[7]

जब नज़र चारों तरफ दौड़ के थक जाती है
चश्म नाज़िर[8] की नदामत[9] से झपक जाती है

ख़ुल्द[10] को रश्क[11] है उस शहर की तामीरों से
[12]आइना पुश्त बदीवार है तस्वीरों से
हर मकां कान की सूरत हैं भरे हीरों से
आलमे नूर है हर लाल की तनवीरों[13] से

द्वारिका भोगवती खास रमा श्याम की है
जो जगह वां की हैं सब राहतो आराम की है

गर्मबाज़ारिए-बाज़ार है हर नियमत से
लालो गौहर से दुकानें भरीं घर नियमत से
वां का मोहताज नहीं कोई बशर नियमत से
करते हैं उम्र गरां माया[14]बसर नियमत से

हर तरफ़ लक्ष्मी परकाश हैं आसाइश है
राम का राज है आराम की अफ़ज़ाइश है

१—गायक २—आलाप ३—एक विशिष्ट बिछावन ४—एक प्रकार का जानवर जिसके बालों से श्वेत मुलायम कपड़ा बनाया जाता है ५—एक प्रकार का अत्यंत कोमल और मूल्यवान रेशमी वस्त्र ६—अधिकाधिक ७—३ मील की दूरी ८—देखने वाला ९—लज्जा १०—स्वर्ग ११—स्पर्धा १२—दीवाल पर लगे हुए शीशे चित्रों को प्रतिबिम्बित करने करने में असमर्थ है १३—प्रकाश १४—आयु की बहुमूल्य संपत्ति।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आबगीने[1] के नगीने की दुकानें पुरज़र
चौक है विष्णु चतुर्भुज की रमां की चौसर[2]
सफ़ बसफ़ चारों तरफ चार पदारथ यकसर
लाल हर [3]निर्द हुआ करती हैं घर के अन्दर

कोई बदरंग नहीं वां पे हैं सब रंग भरे
सूरते श्याम बरन पोत बरन लाल हरे

रफ्ता रफ्ता जो नज़र आये ख़ियाबाने[4]चमन
देख हर सम्त भरे फूलों से दामाने-चमन
सैर करते हैं कहीं सर्वे-ख़िरामाने[5] चमन
आशियानों से नवाज़न[6] कहीं मुर्ग़ाने-चमन

सरो दर बाग़ बयक पाये सितादस्त निगर[7]
व रकाबे तू दवद गर बुवदश पाये दिगर[8]

खेमाज़न शाहे वहारी है गुलिस्तां में कहीं
छावनी डाली है रुतराज ने मैदां में कहीं
शक्ले[9] मातम नज़र आती नही इन्सां में कहीं
जुज़ वफ़ा[10] रस्मे-ख़ुसूमत नहीं हैवां में कहीं

रौनक़े अह्दे शबाबस्त दिगर बुस्तां रा[11]
मी देहद मुज़्दए गुल बुलबुले खुशअल्हां रा[12]

१—शीशा २—चौपड़ का खेल ३—मुहरा ४—उद्यान की क्यारी ५—उद्यान भ्रमण करने वाली रमणियां ६—उद्यान के पक्षी अपने-अपने नीड़ में कलरव कर रहे हैं ७-८—जो प्रिय जन उद्यान में मस्ती से चलते हुए भ्रमण कर रहे हैं उनसे कवि कहता है कि देखिए उद्यान में सरो (एक प्रकार का वृक्ष जिसकी तुलना प्रेमिका के क़द से की जाती है) एक पैर से खड़ा हुआ तुम्हारी प्रशंसा में लगा हुआ है वह तुम्हारे साथ ही साथ दौड़ता यदि उसके दूसरा पैर भी होता यहां कवि इस प्रकार इन सुंदरियों को सरो से श्रेष्ठ बता रहा है ९—शोक-मुद्रा १०—प्रेम के अतिरिक्त पशुओं तक में भी शत्रुता की परंपरा नहीं है ११—वाटिका के यौवन-काल को सुषमा निराली है जो कि १२—चहकती हुई बुलबुल को पुष्प का संदेश दे रही है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ख़ाना बाग़ों के हवा ख़्वाह कहीं लालाओज़ार[१]
क़हक़हे गुलके हैं और चहचहे बुलबुल के हज़ार
गुल से ता ख़ार है यकसां करमे-अब्रे-बहार[२]
नग़मा[३]परवाज़ कहीं तूतिए-शीरीं-मिन्क़ार

गर ब सहने चमन आं सर्वे-ख़िरामां गुज़रद[४]
बुलबुल अज़ गुल गुज़रद गुल ज़ेगरेबां गुज़रद[५]

देव-स्थल कहीं चाँदी कहीं सोने के बने
कहीं चौकोर कहीं तीन ही कोने के बने
हश्त पहलू[६] कहीं सुरपुर के नमूने के बने
बरतर[७]अज़-अर्श मकां श्याम सलोने के बने
राग और रंग का सामां है वहां घर बाहर
एक सां जलवए-माशूक़ है अन्दर बाहर

हर दुवारे में शिवाले में ब आवाज़े बलन्द
पाठ करता हैं कोई कोई भजन में आनन्द
कृष्न लीला में को३ पीरो जवां है दिलबंद
कोई पढ़ता है कवित्त और कोई दोहा कोई छन्द

कोई ज्ञानी कोई ध्यानी कोई आचारी है
प्रेम का पंथ वहां चारों तरफ जारी हैं

हर तरफ़ गिर्दे-नशेमन[८] कहीं केलेकी बहार
कहीं नर्गिस कहीं लाला कहीं बेले की बहार
हौज़ो तालाब कुएं पर कहीं मेले की बहार
देखते देखते हर रंग झमेले की बहार

१—लाला (एक प्रकार का अरुणिम पुष्प) जैसे कपोल वाली रमणियां २—पुष्प से लेकर कांटे पर समान रूप से वसंत की कृपा वृष्टि हो रही है ३— कहीं पर तूती (एक पत्ती) अपने मधुर कंठ से गीत उड़ा रही है ४—यदि वाटिका के प्रांगण में वह प्रिय झूमते हुए निकल पड़े ५— तो बुलबुल फूल को भूल जाये और फूल अपना गरेबान फाड़ डाले ६—अष्ट कोणीय ७—स्वर्ग से श्रेष्ठ ८— नीड़ अर्थात भवन के चारों ओर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वालहे रूए-दिलाराम दरे-यार गिरफ्त[1]
नक़्शए-रेगे-तपां सायए-दीवार गिरफ़्त[2]

ग़ज़ल

जब अंदलीबे-ज़ार[3] ने देखी बहारे-द्वारिका
आंखों से आ दिल में बसे हर गुलउज़ारे[4] द्वारिका
मुश्ताक फ़ायज़ जब हुए कौनैन के मतलब हुए
मन्क़ूशे[5]खातिर सब हुए नक़्शो-निगारे-द्वारिका
कूए सनम जागीरे दिल होती है वां तामीरे दिल
खुश्तर पये[6]तस्खीरें-दिल क़स्रो हिसारे-द्वारिका
द्वारामती कंचननगर ज़रदार है वां हर बशर
बह्‌रे गदा[7] अकसीरे ज़र गर्दोगुबारे-द्वारिका
हर ज़र्रा वां खुर्शीद है गुल ग़ुंचए-उम्मीद है
सरमायए[8] जावेद है मुश्ते-ग़ुबारे[9] द्वारिका
कोई वहां बेज़र नहीं कोई हज़ीं[10] मुज़तर[11]नहीं
सुरराज से कमतर नहीं हर खानादारे-द्वारिका
प्यारा है सबको लोक में न्यारा है दोनों लोक में
सच है अगर गोलोक में करिए शुमारे-द्वारिका
लक्ष्मी क़मर अख्तर गुहर गोपाल नैय्यर ज़र्राज़र
यूँ जलवागर आये नज़र लैलो[12] नहारे-द्वारिका

करता है शफ़क़त[13]गुस्तरी या मुल्तजी यारीगरी
सुखधाम जदुनन्दन हरी शाहे दयारे द्वारिका

१-२—रमणियों के सौन्दर्य में आसक्त एवं व्यथित लोग, भगवान कृष्ण के द्वार की शोभा (दिव्य सौन्दर्य धारण किये हुए यहां पर अनेकानेक स्त्रियां थीं) देखकर मुग्ध हो गये ठीक उसी प्रकार जैसे तपती हुई रेत के अस्तित्व को किसी दीवार की छाया मिल जाये ३—क्रंदन करता हुई बुलबुल ४—द्वारिका की सुमनोपम कपोल वाली रमणियां ५—हृदय-चिन्हित ६—प्रिय की गली ७—हृदय पर अधिकार ८—याचक के लिए ९—शाश्वत-पूंजी १०—द्वारिका की एक मुठ्ठी धूल ११—दुःखी १२—व्यथित १३—लैल अर्थात रात्रि, नहार अर्थात दिवस १४—प्रेम-प्रसार।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

छंद

सुखधाम जदुनन्दन हरी सागर-सुता संग भ्राजहीं
छवि देखि बसुपति कोटि दिनपति कोटि रतिपति लाजहीं
बहुभांति आठों जाम पूरन काम दोउ आनन्द लहैं
गुन गन विदुष बन्दी बिरद बुधि वेद सुभ कीरत कहैं

कवित्त

राजहंस मोदकारी, तारागन कारोबारी
धूल-धाम व्योम भारी, चित्त को लुभाव तू
सोभा सर भांत भांत, नारी नर केर पांति
रतन मन मोति जोति क्रान्ति दरसाव तू
चांदी सी मालिका सो फूलैं फलैं आसपास
तिसहीं पलास को पियूष बरखाव तू
पौर विधु नगर मानो बैठेंगे पयोद गोद
लक्ष्मी निवास के प्रकाश को दिखाव तू

सोरठा

अद्भुत चरित अपार, रचना विविध प्रकार लख
पहुँचे हरि के द्वार, विप्र सनेही धीर मित्त

———

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पहुँचना सुदामा का दरे दौलत पर कहना द्वारपालों का श्रीकृष्ण महाराज से

दोहा

राज कंवर बर शीश धर, नाम सुदाम सुनाय
श्याम श्याम कह श्याम कह, रहे चरन चितलाय

जाके दरबां ने खबर दी कि महाराज कुमार
हमसबक[1] आप के आए हैं सुदामा कोई यार
सूत के नाम से गरदन में है उनके जुन्नार[2]
या तो कौपीन-गिरहदार पे है दारोमदार

दम के मेहमां हैं मगर भरते हैं दम यारी का
दर-हक़ीक़त कि उन्हें ग़म नहीं नादारी[3] का

भामिनी भूल गये शैनो-अशन भूल गये
फूल की सेज रमा जी के रमन भूल गये
दर्द मंदी से वहीं मंद हंसन भूल गये
मीत का रंग रंगा पीत बसन भूल गये

जब सदा कान में पहुंची कि सुदामा आए
सख्त मुहताज निपट बेसरो-सामां आए

श्याम को सुध न रही कुछ कि है घर बार कहां
ससि मुखी सिन्धु सुता सुन्दरो सुकुमार कहां
घन कहां धाम कहां परिजनो परिवार कहां
मुंह से कहते हुए ऐ यार कहां यार कहां

१—सहपाठी २—जनेऊ ३—दरिद्रता ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आके चौखट पे सुदामा से बग़लगीर हुए
शांतो-सिंगार बहम भूसुरो-बलबीर हुए

एक जां और दो क़ालिब का जो पैवन्द हुआ
चार आंखें हुईं और चारों को आनंद हुआ
एक से एक इशारों में रज़ामंद हुआ
वस्ल की राह खुली हिज्र का दर बंद हुआ

चाह की बातें हुई प्यार के अन्दाज़ खुले
[1]तर्फ़तुलऐन में तर्फ़ैन के सब राज़ खुले

अर्सए[2] शौक़ में जब दीदए-मुश्ताक़ अड़े
यक बयक होके बहम हैरतो-ग़ैरत से लड़े
[3]मर्दुमे-दीदा निगाहों की कशाकश में पड़े
तै हुए शुक्रो-शिकायत के हज़ारों झगड़े

एक ने एक की झुक झुक के क़दमबोसी की
सब ख़लिश दूर हुई कुल्फ़तो[4] मायूसी की

कृष्न जी देख के ये हाल सुदामा का सक़ीम[5]
तन पे एक ख़िर्क़ए[6] ख़ाकस्तरो कोपींनो गलीम[7]
शक्ल मजज़ूबों[8] की ऐसी न तवाना न जसीम[9]
दिल में कहने लगे ये यार हमारा है क़दीम

अब बिपत इस पे है संपत के लिए आया है
ख़स्ताहाली से फ़क़त अपनी ये शर्माया है

बोले ऐ मित्र तुम आये तो बहुत ख़ूब हुआ
आपके आने से दिलचस्पी का उस्लूब हुआ[10]
कौन ऐसा है जिसे सुख नहीं मर्ग़ूब[11] हुआ
पर ये दुःख आपका मैं देख के महजूब[12] हुआ

१—पलक झपकते ही २—प्रेम का रणक्षेत्र ३—आंख की पुतलियां ४—कष्ट एवं निराशा ५—सकट ग्रस्त, ६—धूलधूसरित गुदड़ी ७—कम्बल ८—विदेह योगी, वह दीन सिद्धपुरुष जो ईश्वर प्रेम में स्वयं को तथा सारे संसार को था सारे संसार को भुलाकर मस्त रहता है ९—स्थूल १०—मार्ग, उपाय ११—रुचिकर १२—लज्जित।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पाक चरनों में अब स्थान हमारा करिए
रूखा-सूखा जो मिले उसको गवारा करिए

लाजरम बहरे-तसव्वुर[1] में वो-ग़ोते खाते
सूरते-मौजे-रवां घर को हुए लहराते
देखकर रंग महल प्रेम के राते माते
पड़ गये ऐन चकाचौंध में जाते जाते

जलवे देखे जो रमा जी के रुखे रौशन के
उड़ गये सहन में फ़ानूस खयाली बन के

था वहां तख्ते-मुरस्सा[2] पे रतन सिंहासन
और बिछा उस पे था खुशरंगो-मुसफ़्फ़ा[3] आसन
जिस पे आसीन हुए राजबरन कमलासन
लेके तब श्याम सनेही से वहीं अनुशासन

आठों पटरानियां हर तौर का सिंगार किए
सामने आयीं महाराज के दर्शन के लिए

विप्र को करके नमस्कार वो आठों रानी
एक से एक लगी कहने बसद हैरानी
देखो सजनी ये सदाशिव हैं कि विधना सानी[4]
जिसकी इस तौर से होती है यहां मेहमानी

हो न हो वेद बयां करते हैं निर्गुन जिसको
ये वही ब्रह्म हैं भजते हैं महामुन जिसको

ब्रह्म निर्गुन है हक़ीक़त में यही सरबसरी[5]
पास उसके कोई गुदड़ी है न कमली न दरी
अंग में उसके है जुन्नार की एक जलवागरी
उसकी चितवन से हुवैदा[6] है परीशां नज़री

१—ध्यान का समुद्र २—रत्न जटित पीठ (तख्त) ३—स्वच्छ ४—द्वितीय
५—निःसंदेह ६—प्रकट।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

या कोई संत परम भक्त है मथुरा बासी
इसलिए उसके हुए श्याम सखा सुख रासी

आज इस नगर में घर घर ये सदा छाई है
ब्रह्म निर्गुन सगुन अब दोनों की यकजाई है
जब से ये आये हैं आनन्द की सरसाई[1] है
प्रेम और प्रीत की हरदम सुख़न-आराई है

धन्य भाग़ अपने कि इस रूप के दर्शन पाये
भक्त भगवान को हर तौर से पर्शन[2] पाये

ग़ज़ल

गोविन्द नामदारो[3] जुन्नार दार दोनों
दुनिया के दोन के हैं ये पासदार[4] दोनों
मशहूर साफ़तीनत[5] आईनादार दोनों
रखते नहीं हैं कुछ भी दिल में ग़ुबार दोनों
इक ज़ौरक़े[6]करम से इक कश्तिये-हिमम[7] से
भवबारि निधि अगम से करते हैं पार दोनों
संपत सुमति के दाता गुन ज्ञान के विधाता
हममकतबी[8] का नाता रखते हैं यार दोनों
जदुनाथ को सुदामा चूं जुल्फ़ो रुए[9] ताबां
क़ायम बजिस्मे इरफ़ां लैलो-नहार दोनों
भूपाल मणि जगत के सरताज भागवत के
इक़लीमे-तमकनत[10] के हैं शहरेयार[11] दोनों

हर गुरुसहाय नामी दुज वेद पंथगामी
पाथोज पद नमामी नामी उदार दोनों

१—धूम २—स्पर्श ३—विख्यात ४—रक्षक ५—निश्छल स्वभाव ६—कृपा की छोटी नौका ७—साहसों की नौका ८—सहपाठ ९—भगवान कृष्ण और सुदामा क्रमशः काले केश और प्रदीप्त मुख में ऐसा प्रतीत होता था कि अध्यात्म के कलेवर में एक निशा के समान था तो दूसरा दिवस के समान यहां कृष्ण और सुदामा के श्याम-गौर अंग से प्रयोजन है १०—वैभव का राज्य ११—सम्राट।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

छंद

नमामी कृपाधीश नामी सु द्वारम्
करनधार संसार सागर अपारम्
कृपालम् दयालम् हरी श्याम रूपम्
नमो गनसहायम् महेशर अनूपम्
नमो कृष्ण जदुवंश आनन्दकारी
नमो विप्र कुलहंस दुज ब्रह्मचारी
नमामी नमामी नमामी नमामो
नमो जगत स्वामी नमो विप्र नामी

कवित्त

श्याम सुदामा सुमित्र सही उनकी इनकी फलप्रीति घनी री
जो इन नैनन में दरसै सरसै सुख पुंज हिये सजनी री
को इनको हितको वो कहे नहिं पार लहैं बुध बेद फनी री
रूपधनी और प्रेम घनी सगुनी अगुनी छवि नेक बनी री

सोरठा

दोऊ परम सुजान, दोऊ मित्र समान चित
गुन निधि ज्ञान निधान, बलि बलि श्याम सुदाम के

———

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री कृष्न का चरन धोना सुदामा के और बड़ाई करना

दोहा

मित्र-मित्र दोऊ मिले, बने सफल मन काम
दारुन दुःख मेटे सबै, जब भेंटे सुख धाम

हो चुका हाल सुदामा की मुसीबत का तमाम
ठोकरें खाते हुए पा गये मावाए[१] मराम
अब यकीं हैं कि यहां से न फिरेंगे नाकाम
इसलिए किल्के दुआ[२] से पए-बहबूदे[३] अवाम
श्याम के हाल सखावत का रक़म करता हूं
यास को अपनी तबीयत से भी कम करता हूँ

जब हुए तख्ते मुरस्सा पे सुदामा आसीन
मेखला मूंज की बांधे वो फटी सी कौपीन
उनकी अज़मत के बढ़ाने के लिए श्याम प्रवीन
और अयां करने को दुनिया में रहे दीने-मतीन[४]

फूल-फल अक्षतो-दल लाये परस्तिश[५] के लिए
पास ले बेठे महालक्ष्मी बख़्शिश के लिए

घर में इर्शाद हुआ भोग की हो तैयारी
पाक-पकवान की सब क़िस्में हों न्यारी न्यारी
लक्ष्मी जी से कहा आपने सुनिए प्यारी
थाल सोने के मंगा लो व तिलाई[६] झारी

१—अभीष्ट-स्थल २—प्रार्थना की लेखनी-जन-सामान्य के कल्याण के लिए ४—दृढ़-धर्म ५—पूजा ६—सोने की।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दुज महाराज ये आये हैं बड़े स्थल से
पहले हम इनके चरन धोएंगे निर्मल जल से

आफ़ताबा[१] लिया लक्ष्मी ने उठा आख़िरकार
शफ़क़े[२]-सुबह की दिखलाई सिलफ्ची[३] ने बहार
तीरा-बख़्ती[४] की इसी तौर से गुज़री शबेतार[५]
ख़्वाबे[६]हिर्मा से हुआ बख़्ते बरहमन बेदार

गुले-मक़सूद खिले बाबे-करम बाज़[७] हुआ
मेहर[८] से ज़र्रए-नाचीज़ सर अफ़राज़[९] हुआ

जब चरन धोने को मेहमां के दयानिधि लपके
सोज़ सब दूर हुए उसके दरूनी[१०] तप के
फ़र्ते-ग़ैरत[११] से इधर दीदए-निगरां झपके
नैन से रुख पे उधर प्रेम के आँसू टपके

करके करुना करुना नैन यहां तक रोए
कि चरन धोके उन्हीं अश्कों से पातक धोए

मौज पर आया जो बहरे-करमे[१२] दीदए-यार
वह गया विप्र की सब वादिए-ग़ुरबत[१३]का ग़ुबार
दहने[१४] ज़ख़्म के दन्दां थे अयाँ नश्तरे-ख़ार
[१५]वो भी सब नज़लए-रिक़्क़त[१६]से गिरे आख़िरकार

हर दो पा[१७] साफ़ बरंगे-दिले-बेकीना[१८] हूए
रूए[१९]मक़सद के हर आईना वो आईना हुए

१—लोटा २—प्रातःकाल की लाली ३—हाथ मुंह धोने का पात्र ४—दुर्भाग्य ५—अंधेरी रात ६—कष्टों की निद्रा ७—कृपा का द्वार खुल गया ८—प्रणय का सूर्य ९—भालोन्नति १०—आंतरिक ज्वाला याआंतरिक तपश्चर्या की ज्वाला ११—लज्जाधिक्य १२—मित्र (भगवान कृष्ण) की कृपादृष्टि का सागर १३—निर्धनता की घाटी १४-१५—घावों के मुख के जो दांत थे (कांटों की चुभन से हो गये थे) वह भी सहज अश्रुपात से गिर गये १६—सहज अश्रुपात १७—दोनों पैर १८—अमलिन चित्त की भांति १९—आकांक्षा का मुख मंडल ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पांव धो धो के लगन[१] में जो गिराया पानी
आवे[२] नाक़िस की तरह पर न बहाया पानी
सर पे आंखों पे अक़ीदे[३] से लगाया पानी
नीर अमृत की तरह सबको पिलाया पानी

मित्र की अपने परम मित्र ने तौक़ीर[४] ये की
आबरू बहर ने इक क़तरए[५] नाचीज़ को दी

देखी उस दम जो बरहमन ने ये ख़ातिरदारी
दिल में समझे कि रमापति हैं बड़े हितकारी
ये दयासिंधु हैं वो सिंधु सुता बर नारी
इस जुगल रूप पे कर दीजिए तन मन वारी

ध्यान कर लीजिए जब तक है समागम ऐसा
ये महाधन है मुझे धन के लिए ग़म कैसा

शर्म से दीदए[६] मुश्ताक़ तो दरबस्ता[७] थे
लेक[८] मर्दुम[९] पए-नज़्ज़ारा[१०] कमरबस्ता[११] थे
राज़ेदिल खुल गये सब जितने कि सरबस्ता[१२] थे
छूटे[१३] शहबाज़ निगाहों के जो परबस्ता थे

रूप सरवर के जो कलहंस दिलो जां में बसे
मीत ने जीत लिया प्रीत के फंदे में फंसे

छुप के करते थे जहां साहबे[१४] इदराक नज़र
थी फरिश्तों की पसे-पर्दए[१५] अफ़लाक नज़र
पर्दए-शर्म उठा हो गयी बेबाक नज़र
दूबदू[१६] पड़ने लगी दोनों तरफ़ पाक नज़र

जब निगाहों पे वो दो मेहर-लक़ा[१७] चढ़ते थे
प्रेम के बस में सुदामा ये ग़ज़ल पढ़ते थे

१—थाली २—व्यर्थ जल ३—श्रद्धा ४—सम्मान ५—अकिंचन-बिंदु। ६—आतुर नयन ७—दंद ८—लेकिन ९—पुतलियां १०—दर्शन के लिए ११—कटिबद्ध १२—गुप्त १३—दृष्टि के शहबाज़ के पंख जो बंधे हुए थे; खुल गये १४—बुद्धिमान लोग १५—आसमानों के पर्दे के पीछे १६—आमने-सामने १७—कांतिमान सूर्य।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग़ज़ल

दिल एक और दो दिलरुबा क्या दीजिए क्या लीजिए
क्या कीजिए उन पर फ़िदा क्या दीजिए क्या लीजिए
इक बिश्न इक बारिधि सुता दोनों की शरनागति में हूँ
दिल के सिवा जुज़ [1]ख़ाके पा क्या दीजिएक्या लीजिए
हरि पद कमल मन दीजिए नर तन सफल कर लीजिए
इसके सिवा क्या कीजिए क्या दीजिए क्या लीजिए
दिलबर को दिल देते हैं जब सब कामे-दिल लेते हैं तब
दे ले चुके हम भी तो अब क्या दीजिए क्या लीजिए
गांठी में खोटे दाम हैं मन के मनोरथ ख़ाम हैं
सन्मुख जो श्यामा-श्याम हैं क्या दीजिए क्या लीजिए
तन दीजिए उपकार में जस लीजिए संसार में
और इस जगत-व्यवहार में क्या दीजिए क्या लीजिए
हरि भक्ति है दिल की दवा हरि नाम धन हाजत रवा
ए मुल्तजी इसके सिवा क्या दीजिए क्या लीजिए

छंद

ये दोउ परम पुनीत परम हित परम सुहावन
पावन पद पाथोज पतित गन पाप नसावन
यह दोउ रूप निधान जलज लोचन रतनारे
श्याम-गौर सुखधाम उमापति प्रान पियारे
मुनि जन मानस हंस यह सुख पर दुख दारिद हरन

१—कहते हैं कि देने के लिए केवल हृदय और लेने के लिए केवल चरण-धूलि है।

५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कवित्त

श्याम तमाल गरे मनिमाल सुकंचन के तिय चारु लता सी
सांवरी मेह की नेह जटी लपटी घन सों प्रगटी चपला सी
देखत ही मन मोह रह्यो पिय मोर भयो सुख पुंज निवासी
हे विधि यह दोऊ नैन बसैं कमलानन श्याम लली कमला सी

सोरठा

बहु विधि इन्हें निहोर, रूप माधुरी पान कर
भिन्न-भिन्न कर जोर, उनकी अस्तुति कीजिए

———

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुदामा जी का आलमे तसव्वुर में लक्ष्मी जी की बड़ाई करना

दोहा

अर्थ धर्म अनुमान कर, रमा चरन धर ध्यान
बचन विनीत विवेक जुत, बोले बिप्र सुजान

जयतु प्यारी कमला जी विमला परम अनूप
पद कमल रेनु धरत सीस अजादिक[1] सुर भूप
वेद कहते हैं निजा[2] नाम निजा नाम सरूप
किम कथम ज्ञान अगम रूप पड़े हम तुम कूप

जयतु श्यामा कमनी दुखदमनी भव समनी
निर्मला ब्रह्म कला श्याम लला मन रमनी

जय शिरी सिंधु-सुता सुख सरितासन वदनी
लक्ष पर लक्ष कला जय विमला छवि सदनी
देख तव रूप गलित काम विमोहित बदनी
वारी है मंद हंसन पर तेरे दुर्रे[3] अदनी

कौन किस मुंह से कहे, चंद्र बदन की सोभा
जिस कमल मुख पे सदा श्याम मधुप मन लोभा

जयतु जगदम्ब जलाधीश कुमारी प्यारी
सोहनी मोहनी हर बात है प्यारी प्यारी
चंचला चख चितवन चारु मुरारी प्यारी
अम्बुजा चार भुजा विष्णु की नारी प्यारी

१—ब्रह्मा विष्णु, महेश २—ब्रह्म का नाम ३—अदन के मोती

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भगवतो सत्यवतो मंगलो परमोद भरो
कृष्ण प्रद्युम्न सहित मोद भरी गोद भरी

जय रमा अनत समा हित करनी सुखरासी
नैन राजीव मधुप विष्णु पयोनिधि बासी
बारिधर श्याम वपुष चन्द्रमुखी चपला सी
चातकी प्रेम सुधा स्वाति की सम्पत प्यासी

नौम जगदीश-प्रिया सील सरित जगदम्बा
तव सुजस गान चरन ध्यान प्रणत अवलम्बा

निरधनी तेरी दया दृष्टि के मुहताज सदा
तेरी किरपा से धनी रखते हैं सुख साज सदा
रंक करते हैं अनुग्रह से तेरे राज सदा
बस में हैं तेरे श्रीकृष्ण महाराज सदा

सबको है चाह तेरी जग में है तेरा उत्साह
कर दे अब दीन सुदामा की तरफ नेक निगाह

गजल

रमा तू रम रही है सबके मन में
तजम्मुल है तेरा हर जानो तन में
जहां पर तू नहीं हर मर्दो ज़न में
गुज़रते हैं कई पन चार पन में
कमल में है तेरी बूबास कमला
ज़रे-२-गुल रंग है तेरा चमन में
लिखा है सीमोज़र पर नाम तेरा
तेरा परकाश है हर धामोधन में
सदाप्यारी है तू खुशरू पिया की
तेरा सिक्का पड़ा है श्याम घन में
चमक हर लालो-गौहर मे है तेरी
झलक तेरी है मन मानिक रतन

१—छबि २—फूल का सोना अर्थात् पराग

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शिरी लक्ष्मी दया कर मुल्तजी पर
कि बे ग़म दिल लगे हरि के चरन मे

छंद

जयतु बिशुन भामिनी धनेश शीश वन्दनी
जयतु जगत स्वामिनी रमा जलेश नन्दनी
जयतु कलेश हारिनी विनोद मोद कारिनी
विष्णु पद सरोज नित्य चारु चित्त धारिनी
जयतु विश्व पूजनी सुलक्ष्मी सुलक्षिणी
दीन कहें गुरुसहाय लोक लाज रक्षिणी

कवित्त

जय हरि भामिनि जय सुर स्वामिनि तवप्रभुता जग संपत रूरी
जय जप जोग बिसाल करें भूपाल धरें पद पंकज धूरी
तव विन कौन सुखी जग में किम दीन दुःखी यह होय सबूरी
है लक्ष्मी जहं तोर प्रकाश तहां नित बास करें सुख भूरी

सोरठा

तव पद कमल विलास, सब चाहत निज निज भवन
तेई पद सुखरास, जन मन आसा पूजिहैं

—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बयान सरापाये श्री कृष्न जी महाराज

दोहा

द्विज चकोर हिय हेरनित, ससिमुख सुषमा ऐन
रूप सुधा के लालची, ललकि उघारे नैन

दिले-पुरदाग़ वहीं मोर मुकुट में अटका
चित चपल बीच में सरपेच[1] के जाकर लटका
मन जो फिरता था ग़मे-दहर में भटका भटका
रह गया थाम के इक बार कमर का पटका

नैन मधुकर की तरह नैन कंवल पर छाए
निकहते-ऐन[2] -इनायत से निपट बौराए

बोले किस मुँह से कहूं श्याम-बदन की सोभा
ससि कलंकी है तो नाकाम मदन की सोभा
हार से हार गयी दुर्रे-अदन की सोभा
कौंध बिजली की दिखाती है रदन की सोभा

रूप सागर का तेरे भरते हैं जलधर पानी
है ये क्या खूब मधुर मंजु मनोहर बानी

१—रतन जटिल झुमका जो पगड़ी से लटका रहता है

२—प्रचुर-कृपा की सुगंध

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चश्मे-नरगिस की तेरे नर्गिसे-शहला[1] बीमार[2]
आइना रश्के-दो रूख़्सार[3] से हैं बरसरे दार
गुले[4]राना गुले आरिज़ पे सदा खाते हैं ख़ार
ताब क्या मेहरो क़मर को जो करें आखें चार
[5]शमा रा गर बरख़्ते दावए-नाज़ुक बदनीस्त
[6]कुश्तनी सोख़्तनी लायक़े गर्दन ज़दनीस्त
प्यारे वो तुमको हैं ये दिल से हैं प्यारे जिनके
सर्वदा रहते हैं सुर संत सहारे जिनके
जलवागर आज है सर व्योम में तारे जिनके
ये वही नैन हैं सुखदैन तुम्हारे जिनके
टुक इशारे में तो आलम का भला होता है
इक नज़ारे में दो आलम का भला होता है
क्या जबीं है कि जबीं देख के बालाए जबीं
दाग़ रखता है ग़ुलामी का तेरी माहेमुबीं[7]
ख़ातिमे-हुस्न[8]का है क़श्क़ए-पुर[9]नूर नगीं[10]
तिरभुवन ज़ेरे नगीं ज़ेरे नगीं ज़ेरे नगीं
बर[11] दो रुख़सारे तू ईं ज़ुल्फे सियाहे अजबे
दर[12] तहे-अब्रे-सियह नैय्यरो माहे अजबे
अब मुझे सोच नहीं ज़िल्लतो हैरानी का
कुछ तरद्‌दुद न रहा बेसरो सामानी का
है यक़ीं दिल को मेरे सख़्ती की आसानी का
क्यों ज़बां से मैं कहूं हाल परेशानी का

१—नर्गिस पुष्प की वह जाति, जो नेत्र की आकृति का होता है २—आसक्त ३—दर्पण, उनके दोनों कपोलों की कांति से ईर्ष्यालु होकर जैसे सूली पर चढ़ जाता है ४—एक विशेष पुष्प जो भीतर से लाल और बाहर से कुछ पीला होता है, इसी कारण यह मुखमंडल के सौंदर्य का द्योतक बन गया है ५—यदि दीपक (मोमबत्ती) को तेरे मुख के समक्ष अपने मुख सौन्दर्य पर स्पर्धा है ६—इसीलिए उसका काटा जाना और जलना उसके भाग्य में है ७—निर्मल चन्द्रमा ८—सौन्दर्य की अंगूठी ९—कांतिमान टीका १०—नगीना, रत्न ११—तुम्हारे (कृष्ण जी) दोनों कपोलों पर ये काले केश विलक्षण प्रतीत होते हैं १२—जैसे बादल के नीचे चन्द्रमा और नक्षत्र आ गये हैं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जुल्फे[१] खम गश्ता बगोशे तु सुखन मी गोयद
मू ब मू[२] हाले परीशानिए मन मी गोयद

क़ौसे-अबरू[३] व मिज़ह[४] पंजए-खुर्शीदे-जमाल[५]
लौ निरंकार की है नाक पे लौलीन कमाल
लबे[६]शीरीं हैं रतुब[७] सेबेज़क़न[८] हाले मराल[९]
सर्वे-बुस्ताने इरम है[१०]क़दे[११]राना पे निहाल[१२]

मकराकृति हैं कानों में जो दोनों कुँडल
कुँडली में हैं गोया ऊँचे मकर के मंगल

तुर्फातर[१३]जलवा गुज़ीं[१४]क़िस्वते[१५]ज़र्री तन पर
रातदिन नूरफिशां[१६]साअदे सीमीं[१७] तन पर
ज़ेवरे-लालो[१८]तिला ख़ूब खुशआई[१९] तन पर
तनोमन वारिए धन वारिए हमगीं तन पर

दृष्टि इस तन पे अतन काम की ठहराती है
भृगुरेखा पे मेरी आंख झपक जाती है

दस्ते रंगी से है क्या पंजए-मरजां का नज़ीर
तिरभुवन की हैं हदें उर पे तेरे तीन लकीर
बह्‌रे[२०]इर्फ़ा है शिकम[२१]और भंवर नाभिगंभीर
डूबे रहते हैं सदा जिसमें ऋषियों के ज़मीर

ग़ोते खा-खा इसी गिर्दाब से ब्रह्मा निकले
आश्ना जितने हैं दिल उनका भला क्यानिकले

१-२—अर्थात् तुम्हारे कुंचित केश तुम्हारे कानों में हर प्रकार से मेरे कुटिल भाग्य की चर्चा कर रहे हैं ३—भृकुटि का धनुष ४—पलक ५—सौंदर्य के सूर्य का पंजा अर्थात् सौन्दर्य के सूर्य (कृष्णजी) की पलकें पंजा हैं और उनकी भौंहें धनुष हैं ६—सरस होंठ ७-८—ताजा सेब की भांति चिबुक का गर्त ९—बारहसिंघा के समान १०—नन्दन वन का सरो ११—सुंदर आकार १२—न्यौछावर १३—अधिकाधिक १४—रुचिकर दृश्य १५—स्वर्णिम-परिधान १६—ज्योतिवर्षक १७—रूपहली भुजा १८—मणि एवं स्वर्ण के आभूषण १९—प्रिय दर्शी २०—अध्यात्म का समुद्र २१—पेट।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

साक़[1] के ध्यान में रहते हैं जो हरदम उश्शाक़[2]
ग़मे-आफ़ाक़[3] उन्हें कुछ भी गुज़रता नहीं शाक़[4]
देव मुनि सब हैं ये जलजात[5] चरन के मुश्ताक़
मुझको तनहा ही नहीं तेरी सिताइश[6] का मज़ाक़[7]

शीरीं[8] अज़ शुक्र तू कामो दहने नेस्त कि नेस्त
सैर[9] अज़ लुक़मए-ख़्वानत बतने नेस्त कि नेस्त

कल्पतरु नाम सरनपाल सुजस आपका है
ज्ञान और जोग से भी प्रेम सरस आपका है
राहते-जानो-जहां ध्यानो दरस आपका है
शुक्र ख़्वां दहर में हर कसो नाकस[10] आपका है

मन[11] चरा गिरया कुनम अज़ सबबे-सुस्तिये-बख़्त
बे रज़ाए[12] तु यके बर्ग न जुम्बद ज़े दरख़्त

मन तुरा कश्तिएईं बहरे-फ़ना मी दानम[13]
हर सहर नाम तुरा हम चो दुआ मी ख़्वानम[14]
ज़िक्रे-फ़ैज़ेतु बहर शाहो गदा मो दानम[15]
शुक्र सद शुक्र कि इमरोज़ तुरा मेहमानम[16]

[17]गर निगाहे तु कुनद बन्दानवाज़ी चे अजब
[18]चे अजबगर तु ज़े हद बन्दानवाज़ी चे अजब

१—पैर की पिंडली या टांग २—आसक्तलोग ३—सांसारिक दुःख ४—कठिन ५—कमल ६—प्रशंसा, स्तुति ७—शौक़ ८—आपको स्तुति के माधुर्य से बढ़कर मुंह और तालू के लिए कुछ भी नहीं है ९—यदि तेरी भोजन की थाली के उच्छिष्ट कौर से किसी का पेट नहीं भरता तो वह कभी नहीं भर सकता १०—छोटा-बड़ा सज्जन असज्जन ११—मैं अपने मंद भाग्य के कारण क्यों क्रंदन करूं क्योंकि १२—बिना तुम्हारी अनुमति के पेड़ का एक पत्ता भी नहीं हिलता १३—मैं इस नाशवान जगत रूपी सागर की नौका आपको मानता हूँ और १४—आपके नाम को प्रत्येक प्रातः स्तुति की भांति पढ़ता हूँ १५—तुम्हारी कृपाओं का वर्णन राजा से रंक तक के लिए है; ऐसा मैं जानता हूँ १६—सहस्रों धन्यवाद कि मैं आज आपका अतिथि हूँ १७—यदि आपकी दृष्टि सेवक पर कृपा करती है तो इसमें आश्चर्य क्या? १८—इसमें क्या आश्चर्य? यदि आप सीमा से अधिक अपने सेवकों पर कृपा करते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग़ज़ल

ज़हूर[1] तेरा है जिस्मो जां में अदील[2] दोनों जहां में तू है
जमील तू है जलील[3] तू है तू ख़ूबरूओं में ख़ूबरू है

इसी से दिन को है सब्रो तस्कीं कि जिक्र तेरा ही चार सू है
कहीं रियायत का तेरे चर्चा कहीं इनायत की गुफ़्तगू है

सदा निकलकर जो बांसुरी से चमन में आई तेरी गली से
कली ने गुल खाये बेकली से गुलों-से गुमगश्ता[6] रंगोबू हैं

तेरी निगाहे-करम का ऐ जां बंधा है गर्दन में तारे-एहसां
[7]असीरे-दामे-दो ज़ुल्फ़े-पेचां भी तेरा ममनून मूबम् है

जो तेरे सुमिरन में है वो दाना सुमेर तमकीं[8] बड़ा सयाना
जो तुझको भूला तुझे न जाना उसी पे लानत उसीपे थू है

जो नाम तेरा है जग में क़ायम तो जिन्नो इंसान क्या बहायम[9]
दरे-करामत[10] पे तेरे दायम[11] हर एक बेचारा चाराजू[12] है

रवां है दरियाए-फ़ैज़े[13] आली मगर ये बख़्शिश तेरी निराली
कि जामे हसरत किसी का खाली किसी के लब तक भरा सुबू है

तेरी इनायत का है सहारा वगरना पिनहां[14] व आश्कारा[15]
दिले-हज़ीं है उदू[16] हमारा हमारे दिल की हवस उदू है

ये चाक दिल के लिए रफ़ूगर जहां में पैदा नहीं तो क्या डर
तुम्हारे तारे नज़र ज़मां पर बराए बख़िया पए-रफ़ू है

दयालु दाता हो दीन के तुम रफ़ीक़ परवर शफ़ीक़े-मरदुम
तुम्हारी किरपा से शाहे[17] अंजुम हुनूज़[18] औजे-फ़लक पे घू है

खबर ली जिस तौर द्रोपदी की दुःखी अजामील पातकी की
खबर लो इस अपने मुल्तजी की ये उसकी हसरत ये आरज़ू है

१—प्राकट्य २—न्यायकर्त्ता ३—सुन्दर ४—वैभवशाली ५—सुन्दर लोग ६—विलीन ७—आपकी दोनों कुंचित अलकावलियों के जाल का वंदी सब प्रकार से आपका कृतज्ञ है ८—वैभवशाली ९—पशु-जगत १०—चमत्कारों का द्वार ११—सदैव १२—चिकित्साकांची १३—उच्च कृपा की सरिता १४—छिपा हुआ १५—प्रकट १६—शत्रु १७—तारों का सम्राट १८—अभी तक।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चौताला

तुम्हें जांचन आये हम श्याम

हम सम दुखी न तुम सम दाता दुख भंजन सुखधाम
सुखधाम दुःखभंजन दयानिधि और तुम सा कौन है
तुम दीन के दारिद दमन कमला तुम्हारे भौन है
मंजुल मनोरथ राख उर तुम्हरी सरन जे आव हैं
ते रंग नव अंभोज कर चारों पदारथ पाव हैं

मुदित होंय चारों फल पाइए
रहैं सुचित्त चरचा चित लाइए
जिनके चरन कमल की आसा
ते नर कबहुँ न होंय निराशा

आसा के बांधे सबै, सब जग आज निवास
जिन्हें तुम्हारी आस है, ते तुम्हार निज दास
दास भवन में श्री सहित, करहु सदा बिसराम
तुम प्रभु पूरन काम हो, पुरवहु जन मन काम

कवित्त

साध सिद्ध सत्रुता अगाध गीध मित्रता
कीस कीस मित्रता कि सोच क्यों कराहिए
कोल-भील मित्रता को चील-पील मित्रता
असील सील मित्रता विचित्रता सराहिए
गुपाल बाल मित्रता बिसाल बाल मित्रता
गुपाल बाल मित्रता में न्यूनता न चाहिए
श्याम और सुदाम मोद मित्र मित्र जाने माने
सांची ऐसी चित्रता तो मित्रता निबाहिए

सोरठा

तुम सम और न मीत, हरन अमित भव विपत दुःख
गावत गुन गन गीत, कबि कोबिद सुर मुनि सदा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

खींचना श्रीकृष्ण जी का पोटली चावल की सुदामा की बग़ल से

दोहा

हिल मिल बैठे परस्पर, बालापन के मित्र
प्रगटे हरि बिधु बदन ने, सुनकर वचन विचित्र

विप्रवर प्रेम धनी मित्र सखा मन भाए
बाद मुद्दत के महाराज यहां तुम आए
बाल गोपाल ने सब आपके दर्शन पाये
कहिए अब आप हमारे लिए क्या क्या लाए

कोई तोहफ़ा हमें भाभी ने दिया है कि नहीं
तर्ज़े[1] इखलाक़ बयां तुम से किया है कि नहीं

जब सबक़ पढ़ने को हम जाते थे आचारी से
हमको तुम मिलते थे मक़तब में वफ़ादारी से
और उसी अहद में इक दिन बड़ी तैयारी से
आपका ब्याह हुआ था किसी बर नारी से

अब ये कहिए कि वो पतिव्रता कुशल क्षेम से है
अपना मतलब तो उसी प्यारी के इक प्रेम से है

मित्रता हमसे और तुमसे तो है बालापन की
तुमको मालूम है अभिलाष हमारे मन की
रुच रही साग अलोने के सदा भोजन की
हमको भाती है फ़क़त प्रेम की उनको कनकी

१—सद्भाव-व्यंजक शब्द ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पोटली तुमने जो दाबी है बग़ल के अन्दर
रस भरे दाने हैं बेशक इसी फल के अंदर

लाइए देखें तो हम आप तो शर्माते हैं
क्या गरां बार है क्यों आप दब्रे जाते हैं
तर्ज़े मेहमां तो यही है कि जहां जाते हैं
कोई तोहफ़ा नहीं देते हुए पछताते हैं

हम बहुत ख़ुश हों अगर आपका परशाद मिले
क़ूव्वते[1] रूहो मुरादे-दिले [2]नाशाद मिले

इस तरह पर जो हुआ प्रेम के तंदुल का उबाल
मीठी बातों में छके कुछ न गली विप्र की दाल
बोले क्या मुझसे तलब करते हो तुम दीनदयाल
चाह चुनने की तो उसके नहीं करते हैं मराल

पालना भीख से इस भेष किये करते हैं
दर बदर ठोकरें खा खा के शिकम[3] भरते हैं

चाखने वाले हो तुम दूध दही माखन के
तीसो-छत्तीस सरस भोग विविध व्यंजन के
भाव के भूखे हो तुम पालने वाले जन के
तिरभुवन के हो धनी प्रान धनी निर्धन के

नक़दे[4]जां तक तो मुझे देने में विश्वास नहीं
प्रानपति इसके सिवा और मेरे पास नहीं

लाल जी आपका है नाम जहां में मशहूर
लालची अब जो बने जाते हो तुम क्या है ज़रूर
दो ही नुक़्ते में हुई जाती है तहक़ीरो[5]वफ़ूर
गर हक़ीक़त नहीं दो दाना भी दाता के हज़ूर

लाल लाया हूं न मैं लाल का चारा लाया
लालसा लाल की लेकर ये बिचारा आया

१—आत्मा की शक्ति २—व्यथित हृदय का अभीष्ट ३—पेट
४—प्राणों की पूंजी ५—अधिक अपमान।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मन हरन ऐसे बचन राजबरन के सुन के
श्याम नव नागरो सुखसागरो आगर गुन के
नहीं आते जो कभी ध्यान में सुर नर मुन के
चार-नाचार रवा करने को मतलब उनके

हाथ फैला के लगे खींचने उनका अंचला
प्रेम के बस में हुये बिप्र तो कुछ बस न चला

प्रीत की रीत यही है कि बड़े इज्ज़[१] के साथ
पानि पंकज से तरे जिनके पतित पुँज अनाथ
सामने विप्र सुदामा के झुकाए हुए हाथ
हाथ भर कपड़े को फैलाए रमा नाथ ने हाथ

हाथ लगते ही गिरह खुल गयी छूटी पुटकी
दाने छिटके तो वहीं चुन लिए चुटकी चुटकी

ग़ज़ल

फ़रोतनी[२] से नहीं कोई ख़स्ताहाल हुआ
गिरा जो दाना ज़मीं पर वही निहाल हुआ

सरे सिफ़ाले गदा बहरे इम्बिसातो[३] सुरूर
जो संग सब्र से टूटा तो उसको फ़ाल हुआ

किया जो बहरे-इनायत ने सातगीं[४] लबरेज़
तो रश्के-रत्ले तिला[५] कासए-सिफ़ाल हुआ

हवस[६] जो दिल में न होती तो कोई नुक़्स न था
फ़क़त ये तारे-नफ़स आइना का बाल हुआ

जहां में है पए-रोशन दिलां[७] कमालो-ज़वाल[८]
हेलाल[९] बद्र[१०] हुआ बद्र से हेलाल हुआ

१—नम्रता २—विनम्रता ३—प्रसन्नता एवं आनंद ४—मदिरा का बड़ा प्याला ५—स्वर्णिम प्याला, मिट्टी के प्याले से ईर्ष्या करने लगा ६—यदि मेरे हृदय में लोभ न होता तो जीवन में कोई त्रुटि नहीं थी, अब तो यही श्वासों का तार (लोभ) ही जीवन रूपी दर्पण की विकृति बन गया है ७—आलोकित हृदय वालों के लिए ८—उपकर्ष-अपकर्ष ९—दूज का चन्द्रमा १०—पूर्णिमा का चन्द्रमा ११—काल चक्र का खड्ग !

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चढ़ा जो खन्जरे-दौरां के घाट पर पानी
उधर को ढल के दिले दाग़दार ढाल हुआ
ये ऐन बंदानवाज़ी है उसकी मुल्तजिया[1]
कि दीन बंधु हरी दीन पर दयाल हुआ

कवित्त

बीन न छूट कबौं करते तज बीन प्रबीन लगे हर पहिनन
छीन प्रबीन नहीं जिनको बल बांह सुबांह दिए गत कीन्हन
गुनियन संतन की सुधि लेत बड़े सुख देत दयानिधि दीनन
दीनन को हितमान के राउर चाउर चार लगे कर बीनन

सोरठा

को अस दीनदयाल, परहित परम कृपालु प्रभु
छांड़ कपट जंजाल, रे मन मूरख ना भजो

१—ऐ मुल्तजो

———

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुदामा को तीनो लोक देते वक्त रुक्मनी का श्रीकृष्ण सें विनय करना

दोहा

छूटे बांधे जनम के, मीत सुदामा श्याम
इत गांठी सों प्रेम धन, उत गांठी के दाम

शुक्रसद शुक्र कि[1]वा शुद गिरहे कारे-ग़रीब
वा शुदां उक़दए-तक़दीरे[2]गिरहदारे-ग़रीब
लाजरम हल शुदा हर उक़दए[3]दुश्वारे-ग़रीब
उक़दा बकुशावचो[4] दस्ते करमे यारे-ग़रीब

[5]दाना अज़ गोशए-दामाने-सुदामा अफशांद
[6]गोइया उक़्दे-सुरैय्या महे ताबां अफशांद

छिटके चावल जो रमापति ने चबाए यकमुश्त[7]
कोष अमरेश की दुजदेव ने पाये यकुमुश्त
फिर वो दाने जो दयानिधि ने उठाए यकमुश्त
दुज को भंडार धराधर की दिलाए यकमुश्त

भर के जब तीसरी मुट्ठी वो रमा को ताके
हाथ लक्ष्मी ने वहीं थाम लिए घबरा के

१—भगवान को सहस्रों धन्यवाद कि निर्धन के मंतव्य की गांठ खुल गयी २—निर्धन के भाग्य की कठिन ग्रन्थि खुल गयी ३—अंततोगत्वा निर्धन की प्रत्येक कठिन समस्या का समाधान हो गया ४—निर्धन के मित्र के कृपालु हाथों से जैसे सारी समस्या ही हल हो गयी ५—सुदामा के अंचल के कोने से दाने ऐसे बिखरे ६—मानो ज्योतित चंद्रमा ने सप्तर्षियों के मुक्ताहार को बिखेर दिया ७—एक मुट्ठी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बोलीं बस बस ये भला आपकी है शहज़ोरी[1]
ये भी क्या है वो दही दूध मही की चोरी
हम जो तिरिया हैं तो ऐसी भी नहीं हैं भोरी
कौन से बेद में लिक्खी है ये तनहाख़ोरी[2]

ख़ानादारों के लिए फ़र्ज है जो कुछ पायें
बाल बच्चों को भी दें आप न तनहा खायें

वाह क्या ख़ूब नया आपने व्यवहार किया
लात छाती पे सही जिनकी उन्हें प्यार किया
मैं ने दो बार नहीं आप से इसरार किया
तीसरी बार मुझे आपने हुशियार किया

गुम हुए होश जो तुम ऐसे महाज्ञानी के
मति के दाने ये नहीं तुख्म हैं नादानी के

यार का अह्ले-करम यार गवारा करके
शाद[3] करते हैं उन्हें लुत्फ़ो[4]मदारा करके
आप ऐसे हैं कि घर बार को न्यारा करके
एक ही के हुए अर्पन धनो दारा करके

चार दानों में चतुर्भुज को चतुरता खोई
आप से बात चतुरता की कहे क्या कोई

पहली मुट्ठी में किया आपने ख़ाली सुरधाम
दूसरी मुट्ठी में इस भव का हुआ काम तमाम
तीसरी मुट्ठी का अब देखिए क्या हो अंजाम
क्योंकि ये तीन भुवन आपकी मुट्ठी में हैं श्याम

रूप भी इसमें बदल जायेगा होना ये है
ख़िरमने-फ़ैज़[5] का यकमुश्त नमूना ये है

१—बलात् २—अकेले खाना ३—प्रसन्न ४—कृपा एवं आतिथ्य सत्कार ५—कृपा का ख़लिहान।

६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विप्रजी श्याम हुए श्याम हुए विप्र ग़रीब
आपके लुत्फो करम का ये तमाशा है अजीब
हर तरह उसकी बनी जिसके हुए आप हबीब[२]
अब फ़रामोश[३] नहीं होने की ऐसो तक़रीब[४]

बदली पगड़ी कि इधर आपने जामा बदला
उस तरफ़ बिप्र की तक़दीर का नामा बदला

रस भरे दाने अबस तुमने ये गरदाने हैं
कनकी हीरे की कनी है तो गुहर दाने हैं
मन्त्र के फूंके हुए मित्र के हर दाने हैं
मित्र के हेत लिए हैं ये वो मरदाने हैं

मोर[५] ने फ़ील[६] को क़ाबू में किया काम किया
राज-धन रंक ने जादू में लिया काम किया

मैं तो हूँ आपके जलजात चरन की चेरी
उज्र करने को नहीं आपसे ताक़त मेरी
पर ये दौलत से किसी को नहीं होती सेरी[७]
आप कुछ लुत्फोअता में नहीं करते देरी

अव जो दुजराज महाराज हुए हों संतुष्ट
क्या ज़रूरत है कि मेरा भी हो सौदा यकमुश्त

सुनके ये बात्त रमा जी की रमानाथ रुके
दिल में जो कुछ उन्हें देना था वो सब दे ही चुके
बिप्र बैठे थे जिधर पर्दए-ग़ैरत्त में लुके
उस तरफ कृष्न महाराज दयानिधि भी झुके

दीन की बांह गही नाम हुआ दीन दयाल
फूल बरसा के कहा देवों ने जै जै गोपाल

१—मित्र २—विस्मृत ३—सान्निध्य ४—चींटी ५—हाथी ६—संतोष।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग़ज़ल

क़फे[1] दिल से न दामाने-ख़याले[2] रहनुमा छूटा
तो जाते जाते मंज़िल तक गिरफ़्तारे[3]बला छूटा
तनावे[4]मेहर से गर्दन बंधी जिसकी हुआ एमन[5]
कि शमशीरे-[6]हवादिस से तो आजिज़[7]का गला छूटा
दिला इस बहरे-हस्ती से तिरा उतरा वही बेग़म
गुज़र तक हाथ से जिसके न दस्ते[8] आश्ना छूटा
सुदामा यार तक पहुँचे तो उसके दस्ते[9]यारी से
गिरह छूटी करम की उक़्दे बख़्ते[10] नारसा छूटा
परीशानी में ज़ुल्फ़े यार का सौदा जो सर पर था
सुबुकदोशी[11] हुई ग़म से जुनूं का सिलसिला छूटा
निगाहे-नर्गिसे-बीमार जानां के तसव्वुर में
ग़नीमत है जो फ़ितराके[12]मुसीबत का बंधा छूटा
हरी की आस बेहतर है कि मुल्तजिया उसी दर पर
सुदामा की विपत छूटी जगत का आसरा छूटा

पद

छूट गयी जन-मन की काई
कृपा सिंधु की लहर-वहर में छूटे मल समुदाई
छूटे सखा मिले बरसन के दीन बंधु जदुराई
छुटी सकल विकलता मन की छूटी दुज दुजताई
छूटे पाप ताप सब छूटे छूटे मन बिदराई
जनम जनम के दारिद छूटे छूटे जाचकताई
छूटी भ्रम अकरम की गांठीं छूटी टुकड़ गदाई
छूट गयी सब चिन्ता मन की हरि चिन्तामन पाई
छूटे दाग भाग भाजन के छूटी कपट खोटाई
भव-विकार दुर्बलता छूटी छूटी कांस चटाई
छूटी निपट दुरासा बासा छूटी आस पराई
गुरु सहाय सब सांसत छूटे जब हरि भये सहाई

१—हृदय की हथेली २—मार्गदर्शक का ध्यानांचल ३—विपत्ति का बंदी ४—प्रेम की रस्सी ५—निश्चित ७—विषम घटनाओं की कृपाए ८—क्लांत ८—मित्र का हाथ १० दुर्भाग्य की ग्रन्थि ११—छुटकारा १२—विपत्तियों की आखेट-रज्जु।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कवित्त

छूटे हैं बन्द फन्द देवको वसुदेव जी के
छूटे अघवृन्द नन्दजी के मन जूटे हैं
जूटे हैं एक एक सम्पत के रंक भाल
जाचकता दारिद कराल जग फूटे हैं
फूटे हैं कलुष बरन मन के जन गुरुसहाय
हरि के गुन गाय दोन अन्त सुख लूटे हैं
लूटे हैं दही दूध माखन जिन कमल हाथ
तिन सों जदुनाथ गांठ छूवत ही छूटे हैं

सोरठा

भजु मन नन्द कुमार, जासु कृपा छूटी विपत
छूटे दुःख अपार, छूटे सुख फिर पाइए

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विश्वकर्मा का जाकर सोने के महल बनाना सुदामा पुरी में

दोहा

हरी हरी हिय नित रहत, दया धरम तिरमूल
ताही ते हरिजन लहत, छांह पत्र फल फूल

ज़ेरे-साया हैं उसी नख़्ले-करम के हरिदास
बे बरो बर्ग में होते हैं हरे वर्ग लिबास
फल जो पाते हैं तो लगती है उन्हें भूख न प्यास
लख लखे[१] फूल के लेते हैं वसद शुक्रो सिपास[२]

देख तो जाके सुदामा उसी तरुवर के तले
करके नर जन्म सुफल शौक़ से फूले व फले

श्याम जी शर्ते वफ़ा जग में जताने के लिए
बिप्र के दिल से क्षुधा शोक मिटाने के लिए
लाए पकवान कनक थाल में खाने के लिए
विश्वकर्मा से कहा क़स्र बनाने के लिए

यार के ऐश की दरपर्दा[३] ये तैयारी की
आगे अब सुनिए कथा बिप्र की वर नारी की

फूस की छायी मंडैय्या थी सुदामा की जहां
वर महलें यां से वो मेमारे[४] अज़ल जाके वहां
क़स्र सोने के बनाये व ज़र[५]अन्दोद मकां
बाग़ो गुलज़ारो रियाज़ो चमनो हौज़ो कुआं

१—सुगंध २—सहस्रों वदनों एवं अभिनंदनों के साथ ३—गुप्त रूप से ४—आदि विधाता अर्थात् विश्वकर्मा ५—स्वर्णवेष्ठित।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देख कर राज का सुख साज रतन सिंहासन
देवता भूल गये इन्द्रपुरी इन्द्रासन

भर दिए जाके धनाधीश ने धन से भंडार
ज़रो दीनारो जवाहर के लगाए अम्बार
हरि की माया से हुआ मायए-राहत का गुज़ार
दौलते-दर पे मुक़र्रर हुए दरबां फलचार[1]

दुज बधू ने पटो-भूषन से जो सिंगार किया
लक्ष्मी को वहीं देवों ने नमस्कार किया

कर दिया नगर में रुतराज ने डेरा तपना
कुब्को-ताऊस ने बागों में बसेरा अपना
देवता करने लगे शहर में फेरा अपना
जब रमापत ने किया फ़ज़्ल घनेरा अपना

द्वारिका जी में उधर बिप्र सुदामा की बनी
उस तरफ़ घर में ज़ने-बेसरो सामां की बनी

कुदसियां रख़्ते मसर्रत[2] हमा यकजा कर्दन्द
गंजे लालो दुरो याक़ूत[3] मुहय्या कर्दन्द
मकमने माह[4] सरे बामे सुरैय्या कर्दन्द
ज़र्रा रा मेहर[5] बइशर्दि कन्हैया कर्दन्द

दर[6] ग़मे आं कि ज़ने खस्तए जां मी काहीद
आखिर[7] आमद ज़े पसे पर्दए-दक़दीरे पदीद

१—धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष २—देव दूतों (फरिश्तों) ने सुख की सारी सामग्री एकत्र कर दी। ३—मणि, मुक्ता तथा याकूत का कोष उपस्थित कर दिया ४—यह देखकर ऐसा प्रतीत होता था मानो प्रातः काल चन्द्रमा और सप्तर्षि मंडल (आकश से उतर कर) यहाँ मणि-मुक्ता बनकर छिपने आये हो ५—और कृष्णा जी की आज्ञा से कण को सूर्य कर दिया ६—जिस दुःख में उस क्लांत स्त्री (सुशीला) का प्राण क्षय हो रहा था ७—उसका अंत भाग्य पटल पर प्रकट हो गया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तन पे जब ज़ेवरो-पोशाक की आराइश की
सुध न औरत को रही फिर किसी फरमाइश की
पल में कर्त्तार ने हर चीज़ की अफ़ज़ाइश की
कामो आराम की धन धाम की आसाइश की

खाने पीने की भी हर तौर से तदबीर लगी
बन गयी सोने की तस्वीर ये तक़दीर जगी

मांग मश्शाता[1] ने मोती की संवारी न्यारी
बिप्र नारी की सजी सीस पे सारी न्यारी
छायी इक काली घटा बालों की प्यारी प्यारी
चम चमाने लगी बिजली से कनारी न्यारी

खूब बन ठन के जो कोठे पे चढ़ी ललिता सी
यकबयक कौंध उठी चन्द्रमुखी चपला सी

कोई इस रम्ज़ो[2] लतीफ़े से नहीं था आगाह
ऐन हैरत में हुई दीदए-मर्दुम की निगाह
अलग़रज़[3] वां पे[4] दमे चन्द[5] ज़ने-ग़ैरते[6] माह
इन्तजारी में सुदामा की रही चश्म बराह[7]

और उस दम उसे दुःख दर्द न ग़म जी में रहा
वस्ल[8] का एक बलम जी के अलम जी में रहा

ग़ज़ल

हरि नाम से गदा शहे गर्दू[9] नशीं बना
जिसके मकां न था वो इरम का मकीं[10] बना
हरि के भजन में कौन कहां पर नहीं बना
कोई फ़लक पे कोई बरूए ज़मीं बना
गर्दूं पे ध्रुव ज़मीं पे सुदामा हुए निहाल
दोनों का फल है एक ही कोई कहीं बना

१—कंघी करने वाली २—भेद-रहस्य ३—अंततः ४—वहां पर ५—कुछ क्षण ६—चन्द्रमा को लज्जित करने वाली स्त्री ७—बाट जोहना ८—मिलन ९—आकाशवासी १०—निवासी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ज़ाहिर में किस क़दर तने कुब्जा कजी[1] पे था
सीधा किया गुपाल ने उसको हसीं बना
गोपाल हैं दयाल सरनपाल बिल्यक़ीं[2]
बिगड़ा हुआ ज़माने का जाकर वहीं बना।
दुनिया का रू-सियाह जो हरि की तरफ झुका
वह खातमे-शहे[3] दो जहां का नगीं बना
आतश[4] कदे में दहर के सख्ती न चाहिए
खारा[5] हुआ जो नर्म वही आबगीं[6] बना
हो चश्मे-दिल न साफ़ तो उस दाग़े दिल को तू
मुँह उसका देखने के लिए दूरबीं[7] बना
लाखों बनाए कृष्ण कुंवर ने तो 'मुल्तजी'
अपना भी उसको ड्योढ़ी पे दुनिया ओ दींबना

पद

श्याम बनावत अपने जन की
अंतरा बिगड़ी बनत कोटि जन मन की कोटिन दोष आस बरसन की
पहली बनी कूबरी बाला निपट कुरूपिन बिगरो तन की
दूजे बनो पंक की गंगा जनम जनम की बिगरो मन की
तीजे बनी सुदामा भामा दारिद ग्रस्त महा निर्धन की
गुरु सहाय हरि की बलिहारी तन मन वारी ऐसे पन की

कवित्त

स्याम निज दास को कलेस ते उबार लेत
लेस देत हरतार भाल की कुअंक पै
सोम बंस जनम लीनो सोम को प्रकास दीन्हों
नेकहू न दृष्टि कीन्हों सोम की कलंक पै
स्याम की उदारता कृपालुता बखाने कौन
एक सी दयालुता है जाको राव रंक पै
रंक तार बाजिए जो रंक इक बिराजते
अनेक से बिराजते सो आज परियंक पै

१—वक्रता २—निःसंदेह ३—लोक-परलोक के सम्राट अर्थात कृष्ण जी को मुद्रिका ४—अग्नि-शाला ५—पाषाण ६—शीशा ७—दूरदर्शी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दीगर

पापिन की जेहि भाति बनी तिहुँलोक घनी हरि कीरत छाई
बारन प्रान उबारन के भवतारन के बुध जाइ न गाई
को जग और हतो हरि सों जिनकी यह रीति सदा चलि आई
बारक पाहि गुपाल कहे जनको बिगड़ी प्रभु आप बनाई

दीगर

नावत माथ गहैं मुनि हाथ सनाथ करैं गुन गावत गावत
गावत हैं जस वेद पुरान धरैं मुनि ध्यान पै हाथ न आवत
आवत हैं हिय में तबहीं जब श्याम बिना कुछ काम न भावत
भावतजे बिन भाव तजे तिनकी बिगरी प्रभु आप बनावत

सोरठा

हरि के चरित अगूढ़, जेते अज्ञ बिमूढ़ की
ताहि सुमिर मन मूढ़, बनत बनत्त बनिए सभी

———

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुसीला का प्रभुता पाके सुदामा की याद में बेक़रार होना

दोहा

लाज प्रीत के फेर में, भूले दुज तज ऐन
खड़ी सुनावत सुन्दरी, हरखि बिरह के बैन

मुझ दुःखी नारि कुमुदनी के हो दुजराज कहां
प्रानपति प्रान धनी विप्र महाराज कहां
ताजदाराने-क़नाअत के हो सरताज कहां
मुफलिसी में तो सदा साथ रहे आज कहां

क्या कहूँ नेक बचन कहके मैं तुम से चूकी
आइए अब न वो तंगी है न वो मफ़लूकी[1]

द्वारिका जी में दुआ आपकी मक़बूल हुई
बिश्नु की बाल मेरे हाल पे अनुकूल हुई
तंगदस्ती जो मुझे ख़ार थी अब फूल हुई
रंज काफ़ूर हुए और बिपत सूल हुई

हो के उस श्याम सनेही के सुजन शुक्रगुज़ार
आइए देखिए मंदिर में रमा जी की बहार

आज इस बाग़ में है फ़स्ले-बहारी का मुक़ाम
सुख बरसता है सहाबे करमे-श्यामा श्याम
सब्ज़ो शादाब हैं सूखे हुए हर नख़्ले-मराम[2]
निकहते[3] गुल से मुअत्तर है अनादिल[4] का मशाम[5]

१—दरिद्रता २—अकांक्षा का वृक्ष ३—पुष्प की गंध ४—बुलबुल ५—घ्राण-स्थल ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आबे रहमत से है शाख़े गुले-आमाल हरी
मुरत्तसिम[1] हर वरक़े गुल पे हैं गोपाल हरी

आतिशे-फ़िक्र है गुलज़ार[2] तहे-चर्खे-कबूद
दूदे[3]हसरत हैं पुर अज़ लखलखए अंबरो ऊद
हर लता कुँज में है कुँजबिहारी मौजूद
नौनिहालाने[4]चमन करते है झुक झुक के सजूद[5]

गुल खिला है करमे-ताजवरे-आली का
बाग़बां शुक्र अदा करता है बनमाली का

कोसे-इनहारे[6]तरब बजते हैं यां शामोसहर
राग अनुराग में रहती है सबा[7] आठ पहर
चश्म के फर्श बिछे नाच रहे हैं अंबर
डालियां गुल के लिए नख़्ल खड़े हैं दर पर

सर्वो आज़ाद की इस बाग़ में पाबंदी है
दिले-ख़ूँगश्ता की शादी की हिना बंदी है

तालियां ग़ुन्चों की यां बजती हैं न्यारी न्यारी
राग कल्यान का सुर भरती हैं कलियां सारी
रसभरी तान मधुप श्याम की मीठी प्यारी
कोकिला रामकली राग की धुन पर वारी

देख कर यार के हर लुत्फो करम का ये जुलूस
नाचता है दिलेपुरदाग़ बरंगे ताऊस

१—अंकित २—नीले आकाश के नीचे चिन्ताओं की अग्नि पुष्पोद्यान में परिवर्तित हो गयी है। ३—आकांक्षा का धुआं अगरु और कस्तूरी की सुगंध से भरा हुआ है। ४—वाटिका के वृक्ष आदि ५—माथा टेकना ६—प्रसन्नता की लहर बढ़ाने वाले नक्क़ारे ७—पुरवाई।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्या कहूं हरि के मैं इक मुँह से भला कुल औसाफ़
दहने गुन्चा से गुल करते हैं हर गुल [1]औसाफ
खते[2]गुलज़ार में क्या क्या लिखे बुलबुल औसाफ़
हैं मुसल्सल ये उसी की गुलो सुँबुल[3] औसाफ़

लाल लाला की सिफ़त में है लिसाने सौसन[4]
खुल नहीं सकने की सौसन न ज़बाने-सौसन

यां सनोबर जो है बे बर्गो तिही दस्त चुनार
जाफ़री[5] उनके लिए ज़र है ज़मीरां[6] दीनार
सह्ने बुस्तां में ज़रे-गुल के लगे हैं अंबार
कर दिया बुलबुले-मिस्कीं को सबा ने ज़रदार

नख्लो-नौबादए[7]-मक़सूद हैं फूले व फले
गुलउज़ाराने-चमन मिलते हैं लग लग के गले

शिरी घनश्याम ने बख्शिशकी लगायी है झड़ी
हर रगे गुल है यहां क़तरों से मोती की लड़ी
बख्ते-बेदार ने दिखलायी ये सोने की घड़ी
लेक है तश्नए[8] दीदार सरे बाम खड़ी

सुन के हर बार पपीहा की ज़बानी पी पी
कोसती हूँ ग़मे ऐय्याम को पानी पी पी

ग़ज़ल

सबा सुबहे सआदत है मुसाफ़िर को खबर कर दे
कि अब शामे ग़रीबी पर फ़िदा रख्ते सफ़र कर दे

१—सुंदर २—फारसी लिपि की नाना प्रकार की लिप्यांकनों में से एक लिप्यांकन जिसके शब्द के भीतर फूल बनाया जाता है ३—एक प्रकार की सुगंधित घास जिसकी उपमा प्रियतमा के केशों से की जाती है ४—एक प्रकार का नीले रंग का पुष्प जिसके पत्ते से जिह्वा की उपमा देते हैं। ५—एक प्रकार का पीतवर्णी पुष्प जिससे सोने की उपमित करते हैं ६—एक प्रकार का पुष्प ७—अभीष्ट की नव मदिरा एवं वृक्ष ८—दर्शन की प्यास।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गुदाज़े-दिल बहुत उसको दिखाना भी नहीं अच्छा
जो ऐसा कीमियागर हो कि खाकस्तर को ज़र कर दे
जमाले-यार आईना है जब देखे उसे देखे
उधर सब कुछ नज़र आये वो रुख अपना जिधर कर दे
बना दे गौहरे-दुर्जे-शरफ़[1] अश्के नदामत को
जवाबे-खुश्क से अपने वो जिसकी चश्म तर कर दे
मेरे अश्के शराफ़त को उसी ने आबरू बख़्शी
जो दामाने सदफ़ में आबे नीसां को गुहर कर दे
ज़रे-गुल से ख़ज़ाना भर दिया जिसने गुलिस्तां का
वो मुनइम[2] अंदलीबे-बेनवा को बहरावर[3] कर दे
अजब क्या है जो मोरे नातवां का चारागर है वो
क़लम को नेशकर[4] और शुक्र को अपने शकर कर दे
न हो गर्दू नशीनों से किसी को फ़ैज़ दुनिया में
जो वो खुर्शीद ज़र्रों को न अपने जलवागर कर दे
जमा है जिसके बाग़े-दिल में तूबाए[5] क़दे-जानां
वो क्यूं बर्गे-तवक्कल में न उम्र अपनी बसर कर दे
सुदामा की तरह हो 'मुल्तजी' भी हमदमे-इशरत
वो शाहे द्वारिका जिस दम तरह्हुम[6] की नज़र कर दे

सोरठा

हित के वचन सुनाय, गोविन्द के गुन गाय तिय
बाहर भीतर धाय, पंथ निहारत कंत की

पद

बालम अब कस बिलम लगायो ?
अंतरा जेहि कारन एतो श्रम कीन्हों सो मन भायो पायो
टूटी छान फूस की छूटी कंचन महल मंढायो
अंतरा चाउर चना मटर औ चूनी जांचत जनम गंवायो
ताके हेत कनक भाजन में व्यंजन मधुर पठायो

१—श्रेष्ठ रत्न-मंजूषा का मोती २—नियमत देने वाला अर्थात कृष्ण जी ३—सौभाग्य शाली ४—गन्ना ५—प्रिय (अर्थात कृष्ण) की आकृति का कल्प वृक्ष ६—दया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा अंबर बना दिगम्बर सब दिन हाथन बदन दुरायो
अपनो जान ताहि करुनामय सारी सुरग उढ़ायो

अंतरा पूरन भये मनोरथ मन के दारिद दुरित नसायो
अस अटूट जस पाइ प्रानपति काहे लोभ बढ़ायो

सभोग गुरु सहाय जब दुज की भामिन या बिधि बिनय सुनायो
अन्तरजामी श्याम सुदामा घर की सुरति करायो

कवित्त (सवैया)

भावन हैं मन के जदुनाथ अनाथ के नाथ महा जग पावन
पावन रूप बनाय भये बलि भूप के द्वार दयानिधि बावन
बावन कोटि अपावन के दुखदर्द नसावन दारिद दावन
दावन सों तिनके लगि के सुख पावत भक्त सदा मन भावन

———

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जाना सुदामा का द्वारिका जी से गया को

दोहा

जग की झूठी मित्रता, सांचे मित्र गोपाल
जन की रुचि पालत सदा, दीनानाथ दयाल

देखिए यार वफ़ादारी ने क्या यारी की
क्या शिरी कृश्न महाराज ने ग़मख़्वारी की
क्या बनी बिप्र की और बिप्र को बरनारी की
मूशिगाफ़ाने[1] सुख़न समझेंगे ये बारीकी

मिल गया यार उसे चाह जिसे यार की थी
धन मिला उसको तमन्ना जिसे दीनार की थी

उस तरफ़ बिप्र वधू धन से हुई मालामाल
इस तरफ़ विप्र हुए समरए-शफ़क़त से निहाल
कहते-सुनते कभी हरिदासों के एजाज़ो कमाल
ज्ञान और भक्ति की बातें कहीं बैराग का हाल

श्याम जी करके सिफ़त उनकी शकेबाई की
बोल कुछ बात तुम्हें याद है लड़काई की

लकड़ियां लेने को हम तुम जो गये थे बन में
पानी भी आया लगी बिजली तड़पने घन में
उस घड़ी तुमने छुपाया था मुझे दामन में
हैं वो सब आपके एहसान हमारे मन में

आपके हक़ से अदा हम हों तो किस लायक़ हैं
आप ही ख़ुल्क़ो-मुरव्वत में बड़े फ़ायक़[2] हैं

१—बात (काव्य) के सूक्ष्म दर्शी जन। २—बढ़कर।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जब कई रोज़ सुदामा जी रहे यार के पास
ज़र्रा सां जलवां कुनां मतलए[1]अनवार के पास
एक दिन करके बहुत नाज़ ख़रीदार के पास
हसरतें छोड़ के सब यारे-वफ़ादार के पास

कुछ न मतलब की कही अपनी न दौलत मांगी
शर्म से मुंह में ज़बां दाब के रुख़सत मांगी

कृश्न जी बोले कि ऐ मित्र परम संतोषी
जग में होते हैं कहां ऐसे बहम[2] संतोषी
जिनको बतलाते हैं आगम व निगम संतोषी
उनसे कुछ आप ज़ियादा हैं न कम संतोषी

वस्ल से अपनी तबीयत तो नहीं सेर हुई
लेक अब जाइए घर आप बड़ी देर हुई

रंजो-ग़ुरबत न ग़मे ज़िल्लतो-ख़्वारी कहना
दर्दे हिरमां न बसद गिरयओ ज़ारी कहना
जाके भाभी से नमस्कार हमारी कहना
मुट्ठी भर दाने की भी शुक्रगुज़ारी कहना

जब कभी दिल न लगे वां तो यहां आ जाना
पद-कमल अपने इसी हीले[3]से दिखला जाना

इस तरह अब्रे-करम ने जो दिया ख़ुश्क जवाब
चश्म तर हो गई और ज़ुहरा[4]हुआ शर्म से आब
लाजरम दिल में समझकर कि ये दुनिया है सराब[5]
बिप्र जी घर को चले बकते हुए बातपोताब[6]

हैफ़ दर[7] चश्मे ज़दन सोहबते यार आख़िर शुद
रुए गुल[8] सैर नदीदेमो बहार आख़िर शुद

१—ज्योति के उद्गम के पास कण के समान ज्योतित २—अकिंचन ३—व्याज (बहाना) ४—सुंदरता ५—मृग मरीचिका ६—जलेभुने ७—आह ! पलक झपकते ही मित्र का सान्निध्य समाप्त हो गया ८—फूल के सुन्दर मुख की शोभा मैं इच्छा भर कर देख भी न सका और बसन्त ऋतु समाप्त हो गयी ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग़ज़ल

गये थे यार के दर तक जो आरजू कर के
वो बात मात हुई उनसे गुफ्तगू करके
तमा थी हाथ हमारे तो अब तिही दामन
फिरे तमा की तरह हम उधर को रू करके
तू अपना जामे-सिफ़ाली न छोड़ ऐ कमज़र्फ़[१]
उठा न वारे-उक़ूबत[२] सुबू-सुबू करके
हज़ार शुक्र कि दी उसने आबो तावे-गुहर
हमारे अश्के-ज़राअत[३] को आबरू करके
जो बस में जादू के होते किसी के जा द्वारे
तो खींचते वहीं दामाने यार छू करके
हमारे दिल में जो रहने का न था उनको यक़ीं
दिखा दी शक्ल भी आईना रूबरू करके
कहीं न आंखें खुलीं अपने बख़्ते-ख़ुफ़्ता[४] की
थकी ज़बाने-सुखन इज्ज़[५] चारसू करके
कहो तो अब शबे हिरमां के सोने वालों को
जगाएं नालए-शबगीर[६] कू ब कू करके

मिले वो शाहिदे[८] मक़सूद 'मुल्तजी' बेशक
जो पाए-शौक न थक जाएं जुस्तजू करके

पद

कबहुँ चढ़ी देखत कबहुँ,

माधव धन्य तुम्हारे बान
अंतरा कबहुं चढ़ी देखत कबहुँ उतरी भौंह कमान
जानी जात न रीझन खीझन मीठी कड़वी तान
चित कठोर और कोमल बतियां सुमिरत होति गलान
हम सों गरब गुरूर बढ़ायो गरज़ गरीबी ज़ान

१—अधीर, अधम २—कष्ट या दंड का भार ३—विनम्रता के अश्रु ४—सोया हुआ भाग्य ५—विनय शीलता ६—ब्रह्म वेला में की गयी स्तुति ७—स्थान-स्थान पर ८—अभीष्ट प्रिय।

७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कदली फूल छांछ की छछिया बलि की भीख भुलान
धना जाट औ मन मनजोरी जाकी छाई छान
अबकी बार राज पद पाए बिसरि गयी कुल कान
हम तो उनके मित्र पुरातन आए आपन जान
नई नई बनितन के स्वामी भूले प्रीति पुरान
रे मन ! सुमिर श्याम पद पंकज दया सिंधु गुन खान
गुरु सहाय हित कबहूं करिहैं बिरुद लाज उर आन

कवित्त

धाम तजि बाम तजि सेज बिसराम तजि
मित्र को मिलाप कीन्हों नागे पांय धाय कै
प्रेम-प्रीत आव भाव सम्मान करि कोटि भांति
तोखेव पोखेव प्रभु प्रभुता उठाय कै
धन्य-धन्य जदुराय दीन बंधु जान राय
मित्र को न हेत चल्यो चित्त को लुभाय कै
मित्र मन हर लीन्हों गाठ को न दाम दीन्हों
इतनो बड़ो काम कीन्हो राजपद पाय कै

सोरठा

ऐसो बचन मलीन, कहत न सोहै दीन को
करिहैं श्याम प्रबीन, हित विशेष अनहित नहीं

———

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुदामा का शुक्रो शिकायत करते हुए द्वारिका से सफ़र करना

दोहा

व्याप रहो दुज के हिये, बिरह बिपत पछताव
कठिन पंथ कैसे कटै, एक अंग दो घाव

सोचते जाते थे कुछ यार ने मुझको न दिया
दिल को लेकर मेरे दिलदार ने मुझको न दिया
इक गुहर अब्रे गुहरबार ने मुझको न दिया
ज़रे मक़सद कोई ज़रदार ने मुझको न दिया

वाए क़िसमत कि लबे जू[१] न बुझी आस की प्यास
न हरी हर ने सद-अफ़सोस हरी दास की प्यास

थे वो घनश्याम तो हम भी थे पपीहा उनके
दान को लक्ष भवन में थी कमी क्या उनके
लुत्फ़ो एहसान के लबरेज़ थे दरिया उनके
फ़ैज़ और फ़ज़्ल के मशकूर थे गुरबा उनके

बाज़ [२]यां मिस्ले सदफ़ गो दहने-आज़ रहा
अब्र [३]क़तरे की इनायत से मगर बाज़ रहा

१—नहर के किनारे २—यद्यपि लोभ का मुंह सीपी की भांति खुला रहा परन्तु ३—स्वाति नक्षत्र की मेघ माला ने एक बूंद भी देने की कृपा न की

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हाय क्यों मुझसे तू ऐ चर्खे-सियहफ़ाम फिरा
किसलिए किश्ते-अमल से मेरे घनश्याम फिरा
रुबरू हो के वो क्यों रुए-दिलाराम फिरा
नख़्ले तूबा के तले से जो मैं नाकाम फिरा

अब कहेंगे चमने-दहर के हर लाला उज़ार
सरो क़ामत को मेरे और मेरे हाथों को चुनार

याद आता है जो वो लुत्फो मदारा[1] उनका
वो तकल्लुम[2] वो किनाया[3] वो इशारा उनका
छबि सदन च द्रबदन पांव वो प्यारा उनका
दिल नहीं करता है ये जुल्म गवारा उनका

लाजरम[4] मी नगरम ऊन्चे कि तक़दीर नमूद
सरनविश्ते[5] कि बदउफ्तादा ज़ं तदबीर चे सूद

कृश्न जदुनाथ रमानाथ हैं आली मंजर
हर जगह लेते हैं हर वक़्त ग़रीबों की ख़बर
अपनी क़िस्मत की ये ख़ूबी है जो मिलता नहीं ज़र
वर्ना इस अर्सए[6] आफ़ाक़ में ऐ ख़स्ताजिगर

दुख नहीं दूर किया श्याम ने किसका किसका
धन नहीं किसको मिला भाग था जिसका जिसका

हैं शिरी कृश्न परम मित्र परम व्यवहारी
लक्ष्मीनाथ जगन्नाथ जगत हितकारी
आपकी ज़ात का मुझको है भरोसा भारी
ये तो यारी की नई राह खुली बलिहारी

नफ़अ दीदार हुए हिर्स की दल्लाली में
और तो कुछ न हुआ फ़ायदा कंगाली में

१—कृपा, अतिथि सत्कार २—संवाद ३—व्यंजना ४—निःसंदेह मैं वही देख रहा हूं जो भाग्य ने दिखाया है ५—जब ललाट-लिपि में ही मेरा पतन लिखा है तो उपाय करने से क्या लाभ ? ६—जगती-तल ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ज़ने-नादां से मैं कहता था कि इसरार न कर
कृष्ण चितचोर है चोरों से तू व्यवहार न कर
आप ही ज़ार हूं मैं ज़र के लिए ज़ार न कर
ख्वार हैं तालिबे-दीनार मुझे ख्वार न कर

आख़िरश मुझको यही तौर बनाया उसने
था वो चितचोर तो अब मुँह भी चुराया उसने

दाना चावल के मिले थे कहीं मांगे दो चार
एक दो दिन का तो हो जाता भला उसमें अहार
वो भी खो बैठे इसी आज़ो हवस में इकबार
मांगने का ये नतीजा है कि हम आख़िरकार

दश्ते[२] कुर्बत को निकाले गये इस बस्तो से
पांव बढ़ते नहीं अब आगे तिही दस्ती से

हैंफ़ ऐसा भी कहीं होगा नसीबा ख़ाली
कि रही ज़ुल्फ़ से हमदोश परेशां हाली
माल क्या था जो तुम्हें सोच हुआ बनमाली
ताना अब आठ पहर देगी मुझे घर वाली

विप्र जी आप उसी यार का दम भरते थे
अब तो भुजिया भी गयी जिससे शिकम भरते थे

ख़ैर कुछ ग़म नहीं ऐसा भी जो उसलूब[३] हुआ
लुत्फ़ देखेंगे अगर नाज़ पे महबूब हुआ
गरचे मैं इक ज़ने-वे अक़्ल से महजूब[४] हुआ
लेक धन पाया न उसने तो बहुत ख़ूब हूआ

ज़र के मिलने से न मालूम वो क्या क्या करती
नित नया रूप बदलती मुझे रुसवा करती

१—व्यक्तित्व २—क्लेश का जंगल ३—ढंग ४—लज्जित ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग़म[१] मखुर अज़ पए गंजीनए-दीनार दिला
शुक्र[२] कर्त्तार बजा अज़ बहरे कार दिला
सरे[३] मताब अज़ :क़दमे-यारे-वफ़ादार दिला
गर[४] तुरा तालए-बेदार न शुद यार दिला

शिकवा[५] अज़ यार चे लुत्फो करमे कम कमरा
तल्खी[६] अज़ दिल न बुरद क़ुबें हरम ज़मज़म रा

ग़ज़ल

क्या जानिए ये चर्खे दोता[७] क्यूं ख़लिश में है
साये में इसके जो है दवाओ[८]दविश में है
हम तो उसी जनाब के हैं मोतकिफ़[९] जहां
सजदे में आसमां है ज़मीं कोर्निश में है
वो देखता है उसअते-दिल क्या दिखाइए
दिल खुद हुजूमे ग़म से यहां चपक़लिश[१०] में है
राहत कहीं नसीब नहीं बदनसीब को
दरिया में संगपुश्त[११] सदा सरज़निश[१२] में है
सैदे[१३] अमल पे अपने गुमाने[१४] ख़ता नहीं
तीरे-निगाहे यार जहां तक कशिश में है
कल[१५] किसको है जहां के नशेवो[१६]फ़राज़ में
लरज़े[१७] में आफ़ताब तो ज़र्रा तपिश में है

१—ऐ दिल ! अपरिमित धनराशि के लिए दु:खी न हो २—ऐ दिल ! अपने कर्म संपादन के उपरांत ईश्वर को धन्यवाद दे ३—ऐ दिल ! मित्र के चरणों से (भक्ति से) सिर न उठा ४—ऐ दिल यदि तेरा भाग्य जगा नहीं है ५—जो मंद भाग्य हैं उन्हे भगवान् की कृपा की कमी का उपालंभ क्यों करना चाहिए ? ६—कावे के निकट ज़मज़म का पानी भी हृदय की कटुता को दूर नहीं कर पाता। ७—झुका हुआ आकाश ८—दौड़-धूप ९—धार्मिक दृष्टिकोण से मुसलमानों के यहां रमज़ान मास के अन्तिम दस दिन मस्जिद में एकांत में बैठकर ईश्वरोपसना में ध्यानावस्थित रहने वाले को मोतक़िफ कहते हैं १०—संग्राम (तलवार का) ११—कछुवा १२—भर्त्सना १३—आकांचा का आखेट १४—चूक जाने का संदेह १५—चैन १६—नीचाई एवं ऊंचाई १७—कंपन।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मग़मूम[१] हो न सख्तिए[२] दौरां से 'मुल्तजी'
वह कृष्न कामदा[३] जो तेरी परवरिश में है

ग़ज़ल

ये है तक़दीर की ख़ूबी कि झमझम मिंह बरसता है
पपीहा एक क़तरे के लिए उस पर तरसता है
रगें तन तन के सोने की लकीरें हो गयीं तन पर
मुसीबत की कसौटो पर फ़लक जिस दिन से कसता है
जो गुंचे की तरह चुप हूँ तो मैं इस बाग़ में वर्ना
कोई बुलबुलसा रोता और कोई गुल सा हंसता है
जो दाना[४] हो तो दाने[५] को न लपके मर्दुमे दाना[६]
तमा से तूतिए-फ़रज़ाना भो फंदे में फंसता है
ये दुनिया ऐसी बस्ती है कि है दिलबस्तगी[१] में सब
कोई ख़ातिर शिकस्ता[२] यां कोई दिलबस्ता[३] बसता है
फ़क़त हरिनाम का सौदा है इस बाज़ारे-हस्ती में
उसो का भाव क़ायम है न महंगा है न सस्ता है
तुझे दु:ख सुख से क्या मतलब वो हरिमाया की नगरी है
यहां दुख भोगता है कोई कोई सुख बिलसता है
जो भौंरा बाग़ का है तू तो सब रस पीले भी भरकर
कहीं कांटों की झाड़ी है कहीं फूलों का दस्ता है
भटक दुनिया को तज के मुल्तजी भी हरि की बख्शिश में
तसव्वुर की सड़क धर ले कि सीधा ये ही रस्ता है

पद

कौन करे बिन हित जन को
कौंन घरे गिरिवर भारी को कोमल पैठि हरे मुख फन को
को गज हेत तजे गरुड़ासन कौन चलै पुर घर तजि बन को

१—दु:खी २—काल की कठोरता ३—समुद्र का ज्वार ४—संपत्ति ५—बीज ६—बुद्धिमान लोगा ७—बुद्धिमान तूती (एक पची) ८—प्रासक्ति ९—चिन्तित १०—हर्षित।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गुरु-सुत हेत जलधि को पैठे को जस लेय बढ़ाय बिसन को
को गई रमा करे अंबर बन कौन करै धनपति निर्धन को
को सुचि पाक मधुर फल त्यागे कौन करै रुचि सागअसनको

अंतरा को हरि रूप धरै जन कारन सुरमुनि हेत बसै बन धन को
को कपि भाल बुढ़ेल दल बिच को मारै फिर दस मूढ़न को

आ संभोग गनिका गीध अजामिल तारन बिरुद्यो मेटि जसोमत तन को
गुरु सहाय जन मारग जोवत सुमिर दयानिधि पावन पन को

कवित्त

पायो ध्रुव अचल राज बैठ्यो उडुगन समाज
नभ में सो बिदित आज नैनन लिखि लीजिए
जन के दुख समन श्याम दाता धन कनकधाम
सुनि सुनि गुन ग्राम नाम आनन्द रस भीजिए
राधा बर मृदुल चित्त सेवत पद रमा नित्त
नैनन को देत नित बसे जन कीजिए
ऐसो सुठि श्याम पाय आरत हर गुरुसहाय
आपन दुःख जो न जाय भाग दोष दीजिए

सोरठा

को जाने केहि हेत, जन को दरब न देत प्रभु
भजिए कृपा निकेत, बिषय मनोरथ छांड़ ज़िय

———

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुदामा का अपनें मकान पर पहुँचना और हैरत से उसकें साज़ो सामान को देखना

दोहा

मगन मनोरथ सुरति में, मन बूड़त उतरात
बाट घाट पावत नहीं हरिपद सुमिरत जात

जब इसी तौर से ग़ुरबत-[१]ज़दा दुजराज ग़रीब
पहुँचे बाहाले तबह[२], कुल्बए-अहज़ां[३] के क़रीब
हर तरफ़ देखके वां ऐशो-तरब की तक़रीब
सख़्त हैरां हुए और कहने लगे वाए-नसीब

इस जगह मेरी मंडैय्या थी उजाड़ी किसने
ये नई इन्द्रपुरी यां पे बसाई किसने

रम गयी किस के यहां बिप्र की नारी प्यारी
भिक्षुकी दीन दुःखी भूखी बिचारी प्यारी
थी तो मां बाप की भी अपनी दुलारी प्यारी
पर दिलो जां से बहुत थी वो हमारी प्यारी

यां नज़र आते हैं क़ुदरत के तिलिस्मात[४] नये
किस से पूछूँ मैं उसे रूप नये गात नये

१—निर्धनता से पीड़ित २—विपन्न स्थिति के साथ ३—दुःखों की झोपड़ी
४—आश्चर्यकारी कृत्य ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

था इसी कुर्ब में इक क़ुल्बए-अहज़ां अपना
था इसी दश्त में इक खानए वीरां अपना
इस तरह का तो न था कोई शबिस्तां अपना
हां रमापत ने दिखाया था जो ऐवां[1] अपना

क्या अजब है वहीं .क़िस्मत मेरी फिर लायी हो
पांव में गर्दिशे[2]-परकार कहीं आयी हो

ग़ालिबन श्याम की इस नगर में कुछ माया है
क़स्र सोने का दिखाकर मुझे ललचाया है
लोभ धन के लिए ज़ी मे जो मेरे आया है
इसलिए यां पे मेरी अक़्ल को भरमाया है

पाहि[3] जदुनाथ ! क्षमा कीजिए मेरे अपराध
मुझ से अंगेज़[4] नहीं होने के माया के उपाध

एक महवश[5] ने मेरे हीले से भेजा था पयाम
उसको धन-धाम अता कीजिए मुझसे क्या काम
घर मेरा कुंजे-क़नाअत है उसे दीजें श्याम
जब से मुझको नज़र आया है ये माया का मुक़ाम

आंखें नर्गिस की तरह ज़ार हैं निगरानी में
मर्दुमे-दीदा पड़े हैं मेरे हैरानी में

करते करते ये तसव्वुर जो हुआ बिप्र नेज़ार[6]
यक बयक हो गईं औरत से भी आंखें दो चार
दुज तो शर्मा गया और उसने किया मन मेंविचार
ये वही बिप्र बिचारा है हमारा ग़मख़्वार

मंज़िले यार से महरूम चला आता है
देखकर यां के तिलिस्मात ये घबराता है

१—महल २—ये परिधि बनाने वाला दो कांटों के यंत्र की गति या कालचक्र की गति ३—रक्षा करो ४—उठना ५—चन्द्रमा के समान सुन्दर प्रिया ६—दुर्बल क्षीण

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इक सहेली से कहा उसने कि ऐ मेरी जां
सुख़ने[1]चर्बों मुलायम से जो गुज़रे न गरां
करके इस विप्र गदागर से अयां राज़े नेहां
उसको दिखला दे किसी तौर से तू सहने मकां

जब मिलूँगी मैं गले लग के तो पहचानेगा
यूँ तो मैं लाख कहूँगी न कभी मानेगा

ग़ज़ल

बसाया बाग़बां ने हर तरफ़ गुल से मकां अपना
चमन में ढूँढता फिरता है बुलबुल आशियां अपना
सबा बुलबुल से कह दे गोशेगुल दर पर्दा सुनते हैं
करे गुल गुन्चए[2]मिन्क़ार से राज़े-निहां अपना
न ग़ुज़रे कामियाबी से जो पहुँचे यार के दर तक
जहां से फ़ैज़ क्या होता नहीं कोई जहां अपना
वही दिल जू वही दिलबर वही दिलदार दिल में है
किया जिसने जहां पर वक़्फ़ गंजे-शायगां[3] अपना
ग़नीमत है जो पाबन्दे-मुहब्बत का हुआ मतलब
कि था इस सिलसिले में पाए-हसरत दरमियां अपना
रियायत सरबलन्दों की रवा है ख़ाकसारों से
बराबर साया रखता है ज़मीं पर आसमां अपना
जो हर दम हर जगह पर 'मुल्तजी' की याद करता है
उसी से काम है हमको वही है कामरां अपना

पद

दृष्टि पड़ी पिय शुक आली रे !
आई पीत निसा गत सजनी हेरत कुँज कुटीर गली रे
अंतरा मुद प्रभात रबि भाग उदय बिकसी कामिन कुँज कली रे
बिसमैं कांट वृथा अरझानी लखत न आपन बेल फली रे

१—चिकनी चुपड़ी अर्थात् मधुर वार्ता २—चोंचकी कली ३—अपरिमित धन-कोष।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संभोग

को करि बिनय उन्हें समझावे गहि लावै पिय भाग बली रै
गुरु सहाय उर भवन बिराजैं श्याम लला बारीस लली रे

कवित्त

छायो ऋतु बसंत हुई दयालुता अनन्त
जिउ संपत की लता ओट दंपत गुन गाय दे
कुँज के आल बाल सुषमा विटप जाल
मनसा मनसा मराल नैन दरसाय दे
मंगल गुन सगुन चार लक्षत कर नित बहार
आनन्द के भुप अहार दुज को पहराय दे
भक्त निज भवन भूल अटकत नहिं
बिषय मूल आई आल कमल फूल आली पघराय दे

सोरठा

जब अइहैं पिय ऐन, मेरो मुख निज नैन लख
पइहैं मन में चैन तब हरि के गुन गाइहैं

———

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बुलाना सुदामा को दासी भेज कर सुशीला का

दोहा

श्याम कृपा ऋतुराज में, फूले सब तरु काम
लहत बीच परसून पर, मन मधुकर बिसराम

तब सहेली ने वहीं जाके उन्हें समझाया
बिप्र जी प्रेम का फल तुम ने हरी से पाया
चल के पग धारिए स्थान में करिए दाया
भौंन में बाम हैं और श्याम धनी की माया

ये महल आपका और बाग़ो चमन आपका है
भामिनी आपकी धाम आपका अध आपका है

बिप्र जी बोले कि तू कौन है क्या कहती है
क्या सुखन छोड़ के तू शर्मो हया कहती है
नासज़ा[1] बात सज़ावार[2] सजा कहती है
दिल्लगी करती है या मुझ से बजा कहती है

मैं तो हर्गिज़ नहीं जाने का किसी के घर में
खाक डालूं मैं तेरे लालो गुहर में ज़र में

सहचरी बोली अवस आप तो झुंझलाते हैं
आप क्यों अपना विभव देख के घबराते हैं ?
जो सखा श्याम के और श्याम का जस गाते हैं
लोक परलोक में सुखसाज सदा पाते हैं

१—अशोभनीय २—दंड के योग्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दुख शमन दोष दमन दीन के हैं दीनदयाल
तुमको इतना जो मिला माल तो ये कौन कमाल

शाहिए-लंक विभीषन को अता फ़रमाई
ध्रुव ने भी सल्तनते-चर्ख़ उन्हीं से पाई
'सेन' नाई की कमल नैन ने छानी छाई
कृष्न की दोनों जहां में है अयां ठकुराई

कुश्त किश्ते[1]-अमल जाट धना नव नागर
गीध गनिका से पतित कोटि तरे भव सागर

ग्राह के मुख से कहो गज को उबारा किसने
कोल और भीलो अजामिल को तारा किसने
हिरनकस्यप को हिरननाछ को था मारा किसने
काम प्रहलाद का संकट में संवारा किसने

साफ़ ज़ाहिर है सुजस जहां में जदुनन्दन का
तुमको इस पर भी अक़ीदा नहीं जगवन्दन का

चार निर्वान के भगवान हरी दाता हैं
भक्त वरदान के भगवान हरी दाता हैं
ज्ञानो विज्ञान के भगवान हरी दाता हैं
मानो सम्मान के भगवान हरी दाता हैं

संपदा देते हैं गौलोक की अपने जन को
वैसे ही जानिए ऐ राज़बरन इस धन को

हो के लाचार चले विप्र मगर सुस्त क़दम
ख़ौफ़ करते थे कि हो जाय न कोई बरहम
रफ़्ता-रफ़्ता हुए हर गाम पे कमरंजो अलम
पहुँचे अंदर तो वहां देख के सामाने हशम

१ — आकांचा की खेती काटी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

याद आया वो रमापत का महल सोने का
जिसमें सुरलोक का सामान था इक़ कोने का

साहबे खाना वहीं करके सरापा सिंगार
आके मुश्ताक़े मुहब्बत से मिली वस्लीदार[1]
सरगुज़श्त उसकी हुई बिप्र के जब गोशगुज़ार
बोल शुकरानए-नियमत में कि ऐ कृष्न मुरार

तुम महाधन हो परम धन है तुम्हारी माया
जिसने क़ुदरत का नया जलवा मुझे दिखलाया

हैफ़[2] सदहैफ़ कि अज़्मे वक़्नाअत बगुज़श्त
[3]लैक अज़ दिल न ग़मे गंजो-बिज़ाअत बगुज़श्त
वाए[4] सद वाए दिलम राकि ज़े ताअत बगुज़श्त
वाए[5] वर दीदा कि अज़ अश्के ज़िराअत बगुज़श्त

वाए[6] बर होश कि यादे तु फ़रामोश नमूद
वाए[7] बर गोश कि सुख़ने दिगरागोश नमूद

मन[8] हमानम कि पये पारये-नां शामो पगाह
गरदम[9] आवारा बहर-कूचा बसद हाले तबाह
दारम[10] अज़ तीरा दिली नामए-आमाल सियाह
बेद[11] हमख़्वानमो चूं बेद बलरज़म ज़े गुनाह

आद्यनाथ–ग्रन्थालय,

१—मिलन की इच्छा धारण किये हुए २—महान् खेद है कि मेरे संतोष का संकल्प चला गया ३—परन्तु धन और कोष की चिन्ता हृदय से न गयी ४—खेद है मेरे हृदय ! कि तुझसे ईश्वराधीनता चली गयी, ५—अपने नेत्रों पर खेद है कि उसके कष्ट के आंसू समाप्त हो गये ६—उस चेतना पर धिक्कार है जिससे तुम्हारा स्मरण ही विस्मृत हो गया ७—धिक्कार है ऐसे कानों को जिनमें दूसरे शब्द प्रकट हो अर्थात् जिन कानो ने दूसरे की वाणी सुनी ८-९—मैं वही हूँ जो कि प्रात: सायं रोटी के एक दो टुकड़े के लिए अपनी उत्कट दरिद्रावस्था में विचिप्त सा वीध-वीथी विचरण करता रहा १०—चिन्त की मलिनता से मेरे कर्मों की पत्रिका काली हो गयी है ११—वेद पाठ करता हूँ और अपने पापों के कारण बेंत की तरह कांपता हूँ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कै[1] रवा बूद कज़ीं मसियतम् दर गुज़री
मो[2] कुनी अज़ करमे-खेश मगर चारा गरी

ऐ[3] तुइ आंकि बबख्शी बग़रीबां नाने
चूं[4] बपेशे तु गदाया बबुरन्द अरमाने
दर[5] जहां कस बकसे हम न कुनद एहसाने
तू[6] कि तन रा सरोसर रा न देही सामाने

सरो[7] सामां कि देहद बे सरो सामाने रा
जुज़[8] तु आबाद कि साज़द दिले वीराने रा

ग़ज़ल

ऐ[9]लाल काने हुस्न सनाए तु कारे-मा
आयद[10]बजलवा अज़तु हमा कारो बारे-मा
वक़्ते अगर ज़यादे तू आयद बकारेमा
ई[11]हम ग़नीमत अज़ नफ़से-मुस्तआरे-मा
शादम[12]कि दर खया रूखो जुल्फ़े अंबरीं
खुश[13]मी शवद बसर ग़मे लैलो नहारे-मा
पेशे[14]तू जलवा मी कुनद ऐ अब्रे नौ बहार
ताऊसे[15]बाग़े इश्के दिले दाग़दारे-मा

१—यह कब होगा कि मुझे आप इन अपराधों से क्षमा कर दें २—शायद आप अपनी कृपा से उपचार कर दें, ३—तू वही है जो निर्धनों को रोटी (जीविका) देता है ४—तेरे ही समक्ष अकिंचन जन अपनी आकांक्षा प्रस्तुत करते हैं ५—इस संसार में कोई किसी कीं सहायता नहीं करता है ६—तू ही शरीर एवं आत्मा को सामग्री प्रदान करता है ७—तू अभावग्रस्तजनों को संपन्न बनाता है ८—तेरे अतिरिक्त कौन ऐसा है जो विपन्न हृदय को सुसज्जित कर दे ६ है भगवान् कृष्ण ! आप सौन्दर्य की खान हैं और आपकी स्तुति हो मेरा कर्तव्य है १०—तुम से ही मेरा सारा जीवन व्यापार वैभवशालो बनता है ११-१२—यदि तुम्हारे स्मरण में कोई भी समय बीतता है तो धरोहर के रूप में मेरी सांसों के लिए यह (कर्म) पर्याप्त है १३—आपके मुखमंडल एवं सुगंधित केशों के ध्यान में मैं प्रसन्न हूँ १४—मेरे रात दिन का दुःख प्रसन्नता में व्यतीत हो रहा है. १५-१६—मेरा मलिन चिन्त प्रेम की वाटिका का मयूर है जो आप जैसे नये मेघ के समक्ष नृत्य रत है

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ऐ[1] शाहिदे-मुराद अगर दर बरम तुई
मगुज़र[2] बतंगनाए जहां अज़ कनारे-मां
वर[3] मश्क़े खाक़सारिए खुद खत कशम वले
चश्मे[4] तू साद कर्द बखते गुज़ारे-मा
सद[5]-शुक्र 'मुल्तजी' कि बपायश क़रार कर्द
बेताब[6] बुवद बस के दिले बेक़रारे-मा

पद

जनके श्याम सनेही सांचे
जे हरि नाम सजीवन सुमिरत काल-ब्याल ते बांचे
हरि के सरन गहत, नर पावत सुख समूह बिन जांचे
'गुरु सहाय' आते मन पावन जय गोविन्द पद रांचे

कवित्त (सवैया)

हेरत श्याम सुदृष्टि जिन्हें दुःख दोष कलेष तिन्हें नहिं घेरत
घेरत मोद चहूं दिश धाय सुछन्द बनाय गुनी जन टेरत
टेरत नाम गोपाल कृपाल दया दृग दीन दयाल न फेरत
फेरत ईंठ की पीठ पै हाथ जिये जदुनाथ कृपा कर हेरत

सोरठा

हरि के चरित विशेष, सारद शेष न कहि सकैं
मैं मति मन्द सरेष, एक बदन कैसे कहूँ

१-२ मेरी अभिलाषाओं की पूर्ति करने वाले प्रिय! यदि मैं तेरे द्वार पर आऊँ तो मुझे इस संसार की संकीर्ण गली में मेरे पार्श्व से अर्थात् मुझे छोड़ कर मत निकल जाना ३-४—मैंने अपनी विनम्रता के लेखा पत्र में एक लम्बी रेखा खींच दी और आपने अपनी दृष्टि से उस तुच्छ (याचना) पत्र को स्वीकृति दे दे ५-६—शतशः धन्यवाद! कि मेरे अधीर हृदय को, जो कि अत्यंत आतुर था, उनके (कृष्ण जी) चरणों में शांति प्राप्त की।

आम्नाय-ग्रन्थालय, भारतनिधि, करौंदी वाराणसी-5

८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुशीला और सुदामा जी का बसर करना ब ऐशो-मसर्रत

दोहा

प्रेम मनोरथ उर भरे, भरे विलोचन बार
भरे भरे आए भवन, मिले भरे भंडार

ब्यास जी कहते हैं जब घर में सुदामा आए
उनकी हमख्वाबा ने सब रख्ते नेअम दिखलाए
ग़ुचए-दिल भी खिला गुल की तरह जस गाए
भामिनी प्यारी लगी श्याम लला मन भाए

कार परदाज़ों[1] ने फ़िर जश्न की तैयारी की
बख़्तो इक़बाल ने दोनों की मददगारी की

श्याम के लुत्फो इनायत का बना ताजो-सरीर[2]
चार पाये के हुए चार पदारथ भी वज़ीर
भर गया मायए-एखलात[3] से ऐवाने-ज़मीर[4]
दम बदम बजने लगे शुक्रोसना[5] के बमो ज़ीर[6]

[7]चत्रे-एहसाने-हरी सर पे हुआ साया फ़गन[8]
मुल्के-इशरत के हुए तख़्त नशीं राजबरन[9]

१—कर्मचारी गण २—तख्त ३—सौरभकी संपत्ति ४—हृदय का प्रासाद ५—स्तुति एवं प्रशंसा ६—संगीत के आरोही, अवरोही स्वर ७—भगवान् कृष्ण की कृपा का छत्र ८—छाया का प्रसार, ९—सुदामा जी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शाह् के इल्मो अमल[1] दोनों अलमदार[2] हुए
अम्नोईमां[3] भी रफ़ाक़त[4] के सज़ावार[5] हुए
फ़ैज़[6] और फ़ज़्ल ख़ज़ाने के निगह्दार[7] हुए
नेक आमाल[8] जो थे मुंशिए-सरकार हुए

दफ्तरे हुस्ने अक़ीदत में हुआ जारी काम
दिले मिस्कीं को मिला रुक्ते मसरंत इन्आम

बुर्जे-मक़सद[9] मे हुए मुश्तरी[10] ओ माह् मकीं[11]
औज पर नैय्यरे[12] ताला भी हुआ जलवागज़ीं
इशरत आबाद हुई ख़ानए वीरां की ज़मीं
किश्वरे-इशरते[13] जावेद हुआ ज़ेरे नगीं

दिल मिला शाह को शादी से हुई फ़िर शादी
देव सुरपुर से लगे देने मुबारक बादी

हस्बे[14] ख़्वाहिश जो मयस्सर हुई अशियाए-निशात[15]
दिलो जां दोनों हुए अंजुमन आराए[16] निशात
सीनए-रीश[17] हुआ मकमनो मावाए[18] निशात
मौज़ए तन की हुई रुह रियायाए-निशात

प्रेमो परमोद में तब बिप्र सुदामा आए
सुख़ने शुक्र शिरी कृष्ण ज़बां पर लाए

१—ज्ञान एवं कर्म २—ध्वजाधर ३—शांति और विश्वास ४—साह चर्य ५—योग्य ६—उदारता और दानशीलता ७—रक्षक ८—सत्कर्म ९—अभीष्ट का शृंग १०—वृहस्पति और चन्द्रमा ११—निवासी १२—भाग्य का सूर्य १३—स्थायी सुख-सामग्री का राज्य १४—इच्छानुसार १५—सुख सामग्री १७—आनंद की गोष्ठी में सम्मिलित १६—घायल अर्थात् दुःखी हृदय १८ आनंद का निवास स्थान

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग़ज़ल मुस्तज़ाद [क]

क्या क्या मैं करूं शुक्र अदा श्याम तुम्हारे-अफ़ज़ू है बयां से
भजते हैं सहस मुख भी सहस नाम तुम्हारा-नित नोदो[1] ज़बां से
दो हाथ हैं दो पांव हैं दो आंखें हैं दो कान - कहलाते हैं इंसान
तिस पर नहीं होता कभी कुछ काम तुम्हारा - हर पीरो जवां से
तुम जगत के दाता हो तुम्हीं जगत के स्वामी - श्री कृष्ण नमामी
बख़्शा हुआ सब कुछ है ये धन धाम तुम्हारा - बेख़ौफ़ ज़ियां[2] से
ज़ी इल्मो[3] ख़िरद मंद[4] जहां तक हैं जहां में-और कौनो मकां में
जाने कोई आग़ाज़ न अंजाम तुम्हारा - जानूं मैं कहां से
ये आपका सब फ़र्त्ते[5] इनायत का सबब है क्या ज ये अजब है
क़ायम जो हुआब-दए नाकाम तुम्हारा इस नामो निशां से
क्या क्या दमे रुखसत किये मैंने ख़यालात-क्या क्या न कही बात
साबित न हुआ पर कोई इल्ज़ाम तुम्हारा-ऐ लाल कन्हैया
तुम बस में किसी के नहीं गोपाल कन्हैया-ऐ लाल कन्हैया
इक प्रेम का रिश्ता है फ़क़त दाम[6] तुम्हारा - न्यारा दो जहां से
हरि भक्ति करो दिल से ज़बां से कहो हरिनाम-तब पाओगे आराम
शश चार[7] यही कहते हैं पैग़ाम तुम्हारा - हर ख़ुर्दोकलां[8] से
क्यूं कर न हो गुल्ज़ारे मुहब्बत का अनादिल[9]-बेरंजो अनादिल
गर बाग़े जहां में रूख़े गुल्फ़ाम तुम्हारा एमन है ख़िज़ां से
हर फ़र्द बशर के लिए है दारे-फ़नादार-विसियार गरांबार[10]
होता है सुबुकदोश कोई राम तुम्हारा - हर बारे गरां से
प्यासे न रहें आस के ता रोज़े क़यामत - ऐ बहरे करामत
छूटे न मुहब्बत का अगर जाम तुम्हारा हम तश्ना लबां से
बेहतर ये वो ख़ुर्शीद से है तलअते पुरनूर[11] कौनैन में मशहूर
ख़ुश्तर चमने दहर में अन्दाम[12] तुम्हारा-हर सर्वेरवां[13] से

क—अधिक किया गया, शेर (कविता की दो पंक्तियां) का एक प्रकार जिसकी प्रत्येक पक्ति के अन्त में एक वाक्य तुक से अधिक लाते हैं १—रोकर चिल्लाकर अर्थात् नेत्र और वाणी से २—क्षति ३—ज्ञानो ४—बुद्धिमान ५—कृपातिरेक ६—फन्दा, जाल ७-६—शास्त्र एवं चार वेद ८—छोटा बड़ा ६—बुलबुलें १०—अत्यधिक कष्टदायी ११—प्रभापूर्ण मुखमंडल १२—शरीर १—सरो जैसा सुन्दर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वो दिल मुझे दीजै कि करूं याद तुम्हारी - ऐ कुँज बिहारी
इस कुँज भवन में रहे बिसराम तुम्हारा - जाओ न यहां से
आंखों में समाया है जो वो रूप रुचिर गात ये-शौक़ है दिनरात
देखा ही करूं रुए-दिलाराम तुम्हारा - चश्मे-निगरां से
इस मुल्तजीए' ज़ार की जो तुमने ख़बर ली-कीरत नई कर लो
गावेगा सुजस अब तो सहरो शाम तुम्हारा-अपने दिलो जां से

छंद

जय जदुनन्दन जय जगबन्दन दीनदयाल कृपाल हरी
जय मन भावन शोक नसावन जन दुःख दावन कंस अरी
जन जग कारन तपत निवारन तारन कोल किरात करी
जिन गुरु सरन सरन सुखदायक देवभक्त आनन्द भरी

सोरठा

तव पद पंकज श्याम, जनमन सुखद सुधाम बर
मम उर आठो जाम, बसहिं सदा ते चरन बर

❀

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हुस्ने इख्तेतामे किताब मैं दुआए मक़बूले कलाम

दोहा

श्याम सुदामा चरित कहि, सुमिरि श्याम पद कंज
सुफल होत जिनके सदा, बिबिध मनोरथ मंज

शुक्र सद शुक्र कि ये नामए इक़बालोकरम
जुब्दए-फ़ैज़ेहरी[१] मजमए नेमाए[२] क़दम
नुस्खए[३] सब्र इलाजे मरज़े रंजो-[४] अलम
पाके इस किल्के[५] इरादत से मेरे ताज़ा दम

हो गया दाफ़ए[६] दर्दे दिल पुरदर्द जहां
निकहते-मुश्क[७] हुआ बह्रे दमे सर्द जहां

ये वो है नुस्खए हिकमत जो करे इस पे अमल
कुछ न बाक़ी रहें इमराज़े-उक़ूबत[८] के ख़लल[९]
तीन गुन[१०]से है ये नौरस[११]का लगा इतरीफल
बदरक़ा[१२]उसके लिए प्रेम का है पाक असल[१३]

क़ब्ज़ो पेचिश का ये रखता नहीं दिल में आज़ार
दूर करता है ग़रीबों को फ़लाकत का बुख़ार

काम और क्रोध का रहता नहीं इससे बलग़म
पाप संताप का पित्त कोप भी हो जाता है कम
मद से होती नहीं इक दम भी कभी ज़ीक़[१४]में दम
लोभकी वात का रहता नहीं कुछ दिल पे वरम[१५]

१—भगवान कृष्ण की उदारता का सार २—कृष्ण जी के चरणों की कृपा का समूह ३—संतोष का नुस्ख ४—दुःख की व्याधियों का उपचार ५—श्रद्धा की लेखनी ६—पीड़ा को नष्ट करने वाला ७—कस्तूरी का सौरभ ८—विपत्ति की व्याधियां ९—उपद्रव १०—सत, रज, तम ११—काव्य के नव रस १२—रक्षक १३—शहद, मधु १४—कष्ट, तंगी १५—सूजन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मोह के तप के मिटाने को सज़ावार है ये
दाग़े-हसरत के लिए शबंते[1]-दीनार है ये

पारसी इस में है जो हिकमते यूनानी है
जो ज़बां हिन्द की है नुस्ख़ए मिस्रानी है
प्रीतो-परतीत की माजून[2] ये मनमानी है
खट मधुर इसमें दवा सख्तिओ आसानी है

दिले रंजूर को हर बैत[3] शफ़ाखाना[4] है
उम्र भर इससे तलबगारे[5] बेही[6] दाना है

ये वो है बहरे सुख़न इसमें जो ग़ोता खाए
दुरे मानी से ज़बां मिस्ले-सदफ़ भर लाए
ये वो है नख़्ल कि साये में जो इसके आए
उसकी फूली फली हर शाख़ हरी दिखलाए

ये[7] वो है नूर फिशां मतलए-अनवारे करम
[8]जिससे होता है अयां नैय्यरे-रूख़सारे करम

ये कथा वो है कि तर जाते हैं इससे पापी
भव जलधि पार उतरते हैं असुर संतापी
ये कथा सुन के किसी को नहीं माया व्यापी
ये कथा बेद पुरानों में है अब तक छापी

सात और वीस हैं हर काम की इसमें तक़रीब
नाम इसका है इसो वज्ह से 'तक़रीबे-ग़रीब'

१—कुछ विशिष्ट औषधियों का मिश्रित शबंत है जो कि उदरव्याधियों को नष्ट करता है यूनानी भाषा में एक प्रकार के दाने को दी नार कहा जाता है और इस शबंत में इस दाने की मात्रा का अनुपात सर्वाधिक है अतएव इस शबंत का नाम शबंते-दीनार पड़ा २—कतिपय द्रव्यों के मिश्रण से बनो हुई पौष्टिक औषधि ३—कविता की दो पंक्तियां अर्थात् शेर ४—चिकित्सालय ५—आकांक्षी ६—कल्याण की गुठली ७-८ यह काव्य आलोक विकीर्ण करने वाला कृपा की ज्योति की वह उदय स्थली है जिससे कृपा के कपोल का सूर्य प्रकट होता है

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इस कथा को जो सुने कान्ह का प्यारा वो कहाए
कहने वाले के सुख़न पर भी कोई हर्फ़ न आए
पाट में बहरे-तसव्वुक के तबीयत लहराए
लिखने वाले की कशिश को सरे-[1]मर्कज़ पहुंचाए

हो श्री कृष्ण कंवल नैन की मंज़ूरे-नज़र
जो कोई देखे उसे उसको मिले नूरे नज़र

ख़ोशा[2] ख़ोशा जो नेहालों[3] को समर से भर दे
दामने कोहो-सदफ़ लालो गुहर से भर दे
सांप चींटी का दहेन शीरो[4]-शकर से भर दे
कीसए[5] मुनइमो [6]मोहताज को ज़र से भर दे

मुल्तजी को उसी प्यारे का भरोसा ये है
आरज़ू ये है हवस ये है तमन्ना ये है

मख़ज़ने शुक्रोसना है जो ये तक़रीबे-ग़रीब
मादने-मेहरो वफ़ा है जो ये तक़रीबे-ग़रीब
गजे-तस्लीमो[7] रज़ा है जो ये तक़रीबे-ग़रीब
मायए-लुत्फो-अता है जो ये तक़रीबे-ग़रीब

अपनी किरपा से उसे करके जहां में तक़सीम
खोल दें रूए ख़लायक़ पे दरे फ़ैज़े[8] अमीम

ख़ानए-दिल में करें चैन से आराम सदा
नन्द सुत श्याम बदन सुन्दरो सुखधाम सदा
मेरी आँखों में बसे रूए-दिलाराम सदा
लब पे उस कुंजबिहारी का रहे नाम सदा

१—केन्द्रबिन्दु अर्थात् ब्रह्म २—बाली (अन्न की) ३—वृक्ष रूपी मुदित जन ४—दूध ५—थैली ६—धनाढ्य एवं दरिद्र ७—सूफियों की आध्यात्मिक साधना में भगवान के प्रति समर्पण की तीन अवस्थाएँ मानी गयी हैं प्रथम सब्र अर्थात् संतोष द्वितीय रजा अर्थात् भगवान् की इच्छा को ही सब कुछ मानना और तस्लीम अर्थात् पूर्ण समर्पण ८—सर्वसुलभ कृपा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सांवली छवि का है पैवन्द मेरी जान के साथ
ध्यान में ध्यान रहे जान रहे ध्यान के साथ

सर पे हो मेरे उसी मोर मुकुट का साया
तन पे ख़ाके दरे मोहन हो मेरा पैराया[१]
भक्त का औजे तरक़्क़ी पे हुआ ये पाया
प्रेम हो उम्रे[२] गरामी के लिए सरमाया[३]

श्याम सम्मुख रहें और ख़ुश रहें श्यामा जी से
श्याम श्यामा की मिले भक्ति सुदामा जी से

ग़ज़ल

तुम्हारा दिल में हमारे है घर कन्हैया जी
करो विहार यहां नित कुँवर कन्हैया जी

किसी के दिल में बसो तुम किसी की आंखों में
कहां नहीं है तुम्हारा गुज़र कन्हैया जी

तुम्हीं दो नैन तुम्हीं ऐन नैन के तारे
तुम्हीं हो मर्दुमके-चश्मेतर कन्हैया जी

तुम्हीं हो बहरे सख़ावत तुम्हीं हो कोहेवक़ार[४]
तुम्हीं ही लाल तुम्हीं हो गुहर कन्हैया जी

तुम्हीं दयाल तुम्हीं दीनबन्धु दाता हो
तुम्ही ग़रीबों के हो चारागर कन्हैया जी

कोई न दीन का होता मुईन[५] दुनिया में
जो तुम न दीन की लेते ख़बर कन्हैया जी

फ़लक है अबस तुम्हारा ज़मीं है पांव की धूल[६]
दो रुख़ तुम्हारे हैं शम्सो क़मर कन्हैया जी

तुम्हारे मोर मुकुट पीतपट की बलिहारी
वसी है मन में वो मुरलीअधर कन्हैया जी

१—वस्त्र सज्जा, शृंगार २—बहुमूल्य जीवन ३—पूंजी ४—सम्मान के पर्वत ५—सहायता देने वाला (हितैषी) ६—प्रलय की रणस्थली

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तुम्हारे भक्त तुम्हीं से निहाल होते हैं
तुम्हीं से पाते हैं चारों समर कन्हैया जी
यहां न और का चर्चा न और की बातें
न यां पे शुक्रो सनाए-दिगर-कन्हैया जी
ज़बां पे लब पे ब आहो फ़ुगाने सोज़ो गुदाज़
कि होगा दिल में तुम्तारे असर कन्हैया जी
मसाफ़े हश्र में तेग़े-अज़ाब[१] के आगे
कफ़े-नेवाल[२] हो सर पर सिपर[३] कन्हैया जी
तरे हैं जिससे अजामील कोल भील रज़ील[३]
वही दया हो मेरे हाल पर कन्हैया जी
जो फ़ैज़ आम तुम्हारा है 'मुल्तजी' के लिए
तो इक निगाहे-तरहुम[४] इधर कन्हैया जी

पद

प्रभु तुम दीना नाथ कहाए
जब जब गाढ़ परी दीनन पर दीन बचन सुन धाए
अधम उधारन विपत ब्रिदारन बेद बिबिध गुन गाए
बारन तारन बिषधर तारन सुजस तिहूँ पुर छाए
गनिका गीध अजामिल पापी तारन बिलम न लाए
औरन हेत निकेतन तारे चरन सरन जे आए
कौरव सभा दुसासन अरि को बलि अभिमान घटाए
हा ! जदुनाथ ! कहत जदुनंदन द्रुपदी चीर बढ़ाए
सुरपति कोप कियो तेहि औसर नख पर मेरु उठाए
दावानल गोपाल पानकर ब्रज जन सोक मिटाए
ध्रुव पिंगला सुमिर पंद पंकज अचल राज पद पाए
हिरनाकस उर फाड़ि दयानिधि जन प्रहलाद बचाए
कहं लौं कहे उपज मति मेरी पावन चरित सुहाए
मो सम कोटि रंक निर्धन के धन सों भवन भराए
भर दी अंड घंट बिच राखे गुरु-सुत मृतक जियाए
गुरु सहाय के अवसर स्वामी अब कस बेर लगाए

१—दंड का खड्ग २—कृपा की हथेली ३—ढाल ४—मधम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कवित्त

जे भजहिं अछत्त लाल मोर पच्छ सोहै भाल दान
दच्छ लच्छ बाल बक्ष रच्छपाल जू
जे नखन बीन बीन मोह लीन लोक तीन
दीन बंधु द्वार जाय राव होत रंक-राय
त्यो तुम्हें गुरुसहाय कीजिए निहाल जू
देह गेह नैन ऐन कान प्रान पास कीजै
लाल जू दयाल जू कृपाल जू गुपाल जू

कवित्त

धाम धन भामिनि दया औ पुत्र चाहे मन
ताके हेत श्याम जी उपाव कौन कीजिए
काहू सों न राह रीत काहू सों न रीत प्रीत
दूसरो न ऐसो मीत जासो मांग लीजिए
दीना नाथ स्वामी पाय कासों कहे माथ नाय
देखि दीन गुरु सहाय ताको अभय कीजिए
वृन्दाबन कुँज धाम नाम धाम प्रीत बाम
प्रेम स्वाति अभिराम श्याम वरखि दीजिए

सोरठा

तुम दयाल मैं दीन, तुम कृपाल मैं कृपन तर
हौं तुमरे आधीन, दरिद दयाल कृपाल हरि

क्या क्या कहूं सुयश तुम्हार बिहारी जी
गंभीर चरित उदधि अपारा बिहारी जी
जिसने लिया चरन का सहारा बिहारी जी
भवनिधि से उसको आप ने तारा बिहारी जी
मेरे तुम्हीं हो प्रान अधारा बिहारी जी

करते थे जिस सरूप का हरिदास मन में ध्यान
मधुबन से तुम प्रकट हुए त्योंही सरूपवान
मुकुलित बदन सरोज कदन मधु मनोज भान
षोडस कला की भूल गया छवि कला निधान

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नटवर का भेस तुमने जो धारा बिहारी जी

बांकी अदा पे आपकी मुनि जन फ़िदा हुए
मुख चन्द्र के चकोर बुते-महलक़ा[1] हुए
जो बादशाह थे वो तुम्हारे गदा हुए
और वो भी आके ज़ेरे-क़दम जब हिना हुए

जिनका तुज़ुक[2] फ़लक पे है सारा बिहारी जी

सूरज है एक ज़र्रा तुम्हारे जलाल का
बद्रे-मुनीर[3] अक्स[4] है माहे जमाल का
दिन रात उनको ग़म है कुसूफो[5] ज़वालका[6]
लेकिन नहीं ज़वाल तुम्हारे कमाल का

ये रूप तिरभुवन से है न्यारा बिहारी जी

अवतार मणि मुकुट हुआ जन्मा तुम्हारा नाम
युग युग तुम्हारे अंश कला ने किये हैं काम
इस रूप से तो करके उजागर निकुंज धाम
इस रास के चरित पये बेहबूदे[7] -ख़ासो आम

वृन्दा विपिन में तुम ने संचारा बिहारी जी

दो दो ज़बां से नाम रटें नित हज़ार मुख
नौ सात आठ ग्यारह भनें चार चार मुख
तार्के करोड़ चन्द्रमुखी बार बार मुख
शतकोटि पंचवाण के तुम पर निसार मुख

१—धवल चन्द्र के समान सुन्दर रमणियां २—वैभव प्रताप ३—ज्योतित पूर्ण चन्द्र ४—प्रतिबिम्ब ५—ग्रहण ६—अवसान ७—विशिष्ट एवं साधारण दोनों वर्गों के कल्याण के हेतु।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गुन गावें चार षष्ठ अठारह बिहारी जी

जो जो दयालुता के तुम्हारे चरित्र हैं
जब जिस कला से तुमने किये सब विचित्र है
परिमित परम अगाध पुरातन पवित्र हैं
पावन इन्हीं से देव दनुज शत्रु मित्र हैं

इनका है तिरभुवन में इजारा बिहारी जी

क्या क्या बखानूं आपके मैं शील की कथा
जग में विदित है वीर अजामील की कथा
केवट किरात कोल की और भील की कथा
गणिका की और ग्राह ग्रस्त फ़ील की कथा

जन जन का तुमने काज संवारा बिहारी जी

जानता हूं कौरवों में दुःशासन था एक मीर[1]
खींचा उसी ने मध्य सभा द्रोपदी का चीर
जब टेरा तुमको बाम ने होकर परम अधीर
नित सारी सारी बढ़ गयी दुश्मन हुआ हक़ीर

यूं तुम ने बालशोक नवाज़ा बिहारी जी

किस की शरन में आपके आकर नहीं बनी
कुब्जा दरस परस में हुई विश्वमोहिनी
धन पाके एक पल में सुदामा हुआ ग़नी
अब तक कृपा से आपकी ऐ तिरभुवन धनी

ध्रुव जी का औज पर है सितारा बिहारी जी

कलजुग में जिसने भाव भजन बिल्ययक़ीं किया
उसका भी काम तुमने कहां क्या नहीं किया
मीरा के जामे-ज़हर को तुमने अमीं किया
रैदास औ सधन को भी जन्नत नशीं किया

ब्रह्मा का जन्म तुमने सुधारा बिहारो जी

१—सरदार।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नरसी भगत के हेत बने आप साहुकार
श्री द्वारिका में बैठ के पुर्ज़ा लिया सकार
फ़ौरन धनी के दाम चुकाये कई हज़ार
जग में सिवाय आपके हेतो परम उदार

कोई किसी का पुत्र न दारा बिहारी जो

चिड़ियों की लौ में एक शिकारी ने एक बार
जंगल को हर तरफ़ से किया आतशीं[1] हिसार
शहबाज़ को उड़ा के हवा पर पये - शिकार
बैठा कमां को तान के तीरे-जिगर[2] फिग़ार

अब एक फ़ाख़्ता ने पुकारा बिहारो जी

अवसर सुना है मैंने कि अशरन शरन हो तुम
आनन्द के निधान हो मंगल करन हो तुम
दाता हो तीनो लोक के पोषन भरन हो तुम
संकट हरन हो कष्ट हरन दुःख हरन हो तुम

अब काटिए कलेश हमारा बिहारो जी

ऐसा कहा जो मुर्ग़[3] ने सोज़ो गुदाज़[4] से
डर कर उदू के तीर से आतश से बाज़ से
फिल्फौर[5] उस परिन्दे-हज़ीं के नियाज़[6] से
वाज़[7] आके साज़े इशरतो लक्ष्मी के नाज़ से

संकट से उसको तुमने उवारा बिहारो जी

अब्रे करम ने शोलये-आतश बुझा दिया
अफई[8] से पारधी को क़ज़ा[9] ने डसा दिया
छूटा जो तीर बाज़ को उसने गिरा दिया
तायर[10] को तुमने सख़्त[11] बला से छुड़ा दिया

सच है कि दीन तुमको है प्यारा विहारो जी

---

१ – अग्नि का घेरा २—जिगर में घाव करने वाला वाण ३—चिड़िया ४—करुणा एवं नम्रता ५—शीघ्र हो ६—प्रेम प्रदर्शन ७—त्याग कर ८—नाग ९—मृत्यु १०—पची ११—कठोर विपत्ति।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तुम सा न कोई और बड़ा आन वान में
तुम सा दयाल कोई न कौनो मकान में
हित में दया कृपा में अनुग्रह में दान में
तुम एक बेमिसाल हो दोनो जहान में

तुफ[1] उस पे जिसने तुमको बिसारा बिहारी जी

इस वादिए[2] हयात मे इक पारधी है काल
कलजुग की आंच मोह का नाराच है कराल
बचजाये कोई काम के शकरे[3]से क्या मजाल
मेरा इसी में तायरे-जां है शिकस्ता बाल

इसका भी हिफ्ज़[4] करिए गवारा बिहारी जी

घन श्याम हो तो कलि की अनल को बुझाइए
काले हो काल-व्याध की बाधा मिटाइए
मोहन हो मोह बांध जगत के बराइए
योगेश हो सचान -मदन से बचाइए

जाये कहां कपोत तुम्हारा बिहारी जी

दो चार दुश्मनों ने जो बांधा है दिल में दल
इन ज़ालिमों से मिलती नहीं एक पल भी कल
सुमिरन भजन में करते हैं ये सब असुर खलल
हो मौज आपका तो करूं मैं भी उसके बल

बहरे[5] फ़ना में इनसे कनारा बिहारी जी

तिफ़्लो[6] तो खेल कूद में सारी गुज़र गयी
दिलख्वाह[7] अपना काम जवानी भी कर गई
पीरो[8] में जब नशे के हरारत उतर गयी
रो रो के चश्म अश्के-नदामत[9] से भर गई

सूझा न और फिर कोई चारा बिहारी जी

---

१ — धिक्कार २—जीवन घाटी ३ — एक शिकारी पक्षी (बाज के समान) ४ — रक्षा ५—नाश का समुद्र ६—बाल्यावस्था ७— मनोनुकूल मनचाहा ८ — वृद्धावस्था ९— लज्जा एवं प्रायश्चित के अश्रु ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गुरुदेव का तुफ़ैल[1] मुझे रहनमूँ[2] हुआ
और इख़्तलाजे[3] चश्मे अलम से शगूँ[4] हुआ
दर्शन का शौक़ तब मेरे दिल में फ़ुजूँ[5] हुआ
चरनों में आ के आपके मैं सरनगूँ हुआ

देखा न जब कहीं पे गुज़ारा बिहारी जी

ऐसी दया हो आपकी मुझे तुम पे अ़श रहें
माया की मोह की न कोई कशमकश रहे
जुल्मत[6] ज़दा पे क़ल्वे रुखे मेहरवश रहे
और आसतां का आपके जारोबकश[7] रहे

ये 'गुरुसहाय' दास तुम्हारा बिहारी जी

जो है शरन में आपके वह बेगज़न्द[8] है
जो आपकी जनाव में है सरबलन्द हैं
दुनिया में जो है दीन वो तुमको पसंद है
बस मैं भी 'मुल्तजी' हूं मुझे सूदमन्द[9] है

चश्मे-करम का एक इशारा बिहारी जी

फल

महफ़ूज़[10] हो वो नफ़्स उदू के फ़साद से
महफ़ूज मुस्तफ़ीद[11] हो दिल की मुराद से
महरूम[12] हो कभी न मआशो[13]मफ़ाद से
शामो सहर जो कोई पढ़े एतक़ाद[14] से

ख़मसा[15] तुम्हारी यश का दोबारा बिहारी जी

१—दया २—पथप्रदर्शक ३—नेत्रों की विह्वलता ४—शकुन ५—अधिक ६—अंधकार ग्रस्त ७—झाड़ू देने वाला ८—निर्भय ९—लाभप्रद १०—सुरक्षित ११—लाभान्वित १२—वंचित १३—जीविका एवं लाभ १४—श्रद्धा १५—उर्दू काव्य की एक विधा जिसके प्रत्येक बद में पांच पंक्तियां होती हैं (उदाहरणार्थ उपर्युक्त कविता)

———

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्र

भरतनि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi